युवा सशक्तीकरण - हिन्दी उपन्यास में
(१९९० के बाद)
Youth Empowerment as Depicted in Hindi Novels
(Post 1990 Period)

कालिकट विश्वविद्यालय की डॉक्टर ऑफ़ फिलोसफी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

Thesis is submitted to the University of Calicut for the Degree of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

NOVEMBER 2017

निर्देशक:
डॉ. फातिमा जीम
असोसिएट प्रोफसर
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

प्रस्तुतकर्ता:
आशीवाणी के.
शोध छात्रा
हिन्दी विभाग
कालिकट विश्वविद्यालय

Supervising Teacher
Dr. Fatima Jeem
Associate Professor

Submitted by
Asivani .K
Research Scholar

DEPARTMENT OF HINDI
UNIVERSITY OF CALICUT

2017

CERTIFICATE

This is to certify that the Thesis entitled **'Youth Empowerment as depicted in Hindi Novels (post 1990 period)** is a bonafide record of research work carried out by **Smt. Asivani .K**. under my supervision and that no part of this thesis has hitherto been submitted for a degree in any other University.

C.U. Campus
Date

Dr. Fatima Jeem
(Research Guide)
Associate Professor
Department of Hindi
University of Calicut

DECLARATION

I, Asivani. K., do hereby declare that this thesis entitled "**Youth Empowerment as Depicted in Hindi Novels (Post 1990 Period)**" is a record of bonafide research work carried out by me and this has not previously formed the basis for the award of any Degree, Diploma, Associateship fellowship or other similar Title or Recognition.

This research word was supervised by Dr. Fatima Jeem, Associate Professor, Department of Hindi, University of Calicut.

C.U. Campus **Asivani .K**
Date: Research Scholar

अनुक्रम

प्राक्कथन i – v

पहला अध्याय 1 - 46

युवा सशक्तीकरण का महत्व- समाजशास्त्री

और साहित्यकारों के दृष्टिकोण

1. युवावस्था

1.1. छात्र आंदोलन

1.2. युवा सशक्तीकरण

1.2.1. युवा सशक्तीकरण का उद्देश्य

1.2.2 युवा सशक्तीकरण की दिशाएं

1.2.2.1 .व्यक्तित्व और विकास

1.2.2.2. व्यवहार कुशलता

1.2.2.3. राजनीतिक जागृति

1.2.2.4. शिक्षा का महत्व

1.2.2.5. आत्मविश्वास

1.2.2.6 नेतृत्व शक्ति

1.2.2.7. भाव संप्रेषण शक्ति

1.2.2.8.अपने को पहचानना

1.2.2.9.चरित्र चित्रण

1.2.2.10.शिक्षक की भूमिका
1.2.2.11. स्वास्थ्य का महत्व
1.3.युवत्व का महत्व- समाज सुधारकों के दृष्टिकोण
1.3.1.विवेकानंद का युवा सशक्तीकरण
1.3.2.महात्मा गांधी का युवा सशक्तीकरण
1.3.3. सुभाष चंद्र बोस का युवा दृष्टिकोण
1.3.4.डॉक्टर. ए .पी .जे. अब्दुल कलाम
1.3.5..भगत सिंह का युवा चितंन
1.3.6. लोकनायक जयप्रकाश नारायण
1.4. युवा पीढ़ी और मानसिकता
1.4.1.युवा पीढ़ी को प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता
1.5.युवा पीढ़ी का सुधार
1.5.1..जनसंचार और संचार माध्यम
1.5.2. ग्राम शिक्षा समिति
1.5.3. युवा प्रशिक्षण और उनके नियोजन
1.5.4. व्यवसाय में प्रशिक्षण
1.5.5. नौकरी का प्रशिक्षण
1.6. युवा पीढ़ी और आधुनिकता
उपसंहार

दूसरा अध्याय
47 - 87
हिंदी में युवा पीढ़ी पर केंद्रित पूर्ववर्ती उपन्यास - एक परिचय
2.1. युवा पीढ़ी को केंद्र बनाकर लिखे गए उपन्यास
2.1.1. अमृत और विष – अमृत लाल नागर
2.1.2 .रुकोगी नहीं राधिका –उषा प्रियंवदा
2.1.3. सुबह के अंधेरे पथ पर- सुरेश सिन्हा
2.1.4. राग दरबारी -श्रीलाल शुक्ल
2.1.5. कंदील और कुहासे -गिरिधर गोपाल गिरिधर
2.1.6. जाने कितनी आँखें - राजेंद्र अवस्थी
2.1. 7. एक करोड़ की बोतल - कृशन चंदर
2.1.8. अधिकार का प्रश्न - भगवती प्रसाद वाजपेई
2.1.9. किशोर- प्रभाकर माचवे
2.1.10. हरियाली और काँटे- शंकर पूणतांबेकर
2.1.11. अंतराल - मोहन राकेश
2.1.12. परिंदे - श्रवण कुमार वर्मा

2.1.13.अपना मोर्चा - काशीनाथ सिंह
2.1.14. गली आगे मुड़ती है - श्री शिवप्रसाद सिंह
2.1.15 .टूटे हुए फरिश्ते - आबिद सुरती
2.1.16. भ्रंमं भंग - देवेश ठाकुर
2.1.17. दूरियां - रजनी पणिक्कर
2.1.18. धुआ-अमृता राय
2.1.19. नरक दर नरक - ममता कालिया
2.1.20. पतछड़ की आवाज़ - निरुपमा सोवती
2.1.21. लाल पीली ज़मीन- गोविन्द मिश्र
2.1.22. नाच्यो बहुत गोपाल - अमृतलाल नागर
2.1.23. दीक्षा - नरेंद्र कोहली
2.1.24. परिशिष्ट- गिरिराज किशोर
2.1.25. पहला पड़ाव - श्री लाल शुक्ल
2.1.26. दूसरा घर - रामदरश मिश्र
उपसंहार

तीसरा अध्याय
88 - 124
नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण की दिशाएं- प्रतिनिधि उपन्यासों के आधार पर
3.1.शिक्षा की समस्या
3.2. छात्र आंदोलन की समस्या
3 .3. नेतागिरी का प्रभाव
3.4. पारिवारिक समस्या
3.5.पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष
3.6. आर्थिक समस्या
3. 7. युवा पीढ़ी पर सोश्यल मीडिया का प्रभाव
3.8. युवा पीढ़ी पर रोमांस का प्रभाव
3.9. युवा पीढ़ी पर अनुशासन का अभाव
3.10. नशे की ओर लगाव
3.11. युवा पीढ़ी में यौन समस्या
3.12 .युवा पीढ़ी और नई भाषा
3.13. बाज़ारवाद और युवा पीढ़ी
3.14. उत्तर आधुनिकता से प्रभावित युवा पीढ़ी
3.15. गांव और शहर के युवा पीढ़ी की समस्या
चौथा अध्याय
125-166

चर्चित उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण के मार्ग - लेखकीय सोच

4.1.युवकों का स्वतंत्र चिंतन

4.2. मानवीय मूल्योन्मुखी शिक्षा

4.3. विवाह में परिवर्तन

4.4 .नारी सशक्तीकरण

4.5 .राजनीति और युवा पीढ़ी

4.6. जाति-पांति का तिरस्कार

4.7.युवा वर्ग में सांप्रदायिक सद्भावना

4.8. युवकों में देश प्रेम की भावना

4.9. युवकों के सकारात्मक दृष्टिकोण

4.10. युवा वर्ग का संगठन और जागरण

4.11. पर्यावरण संरक्षण नीति अपनाना

4.12. पारिवारिक परिवेश का प्रभाव

4.13. स्वास्थ्य का प्रभाव

4.14. धर्मनिरपेक्ष समाज निर्माण में युवकों का योगदान

4.15. समाज में युवा मोर्चा का सदुपयोग

4.16. प्यार की तलाश में भडकते युवा मन

4.17.पीढ़ियों का संघर्ष

4.18. सूचना प्रौद्योगिकी और युवापीढ़ी

4.19. स्वावलंबन का महत्व

उपसंहार 167-179

सन्दर्भ ग्रन्द सूची 180-196

प्राक्कथन

आधुनिक युग में युवा पीढ़ी का महत्व बढ़ गया है। आज के युवकों में कुछ करने की तत्परता है। वे समाज और राष्ट्र के लिए कुछ करने की कोशिश करते हैं। यह संक्रमण काल है। समाज को एक नये दर्शन की आवश्यकता है। नवीन दर्शन में नवयुवकों की ही आस्था होती है। युवक नवीन मूल्यों की सृष्टि करता है और उन्हीं के अनुसार जीवन व्यतीत करता है।

आज युवा वर्ग समाज का नेतृत्व करने के लिए आगे आ रहे हैं। युवकों को अपनी कल्पना के बल से नयी नीति बनाने का अवसर नहीं मिलता। इसलिए उनका असन्तोष बढ़ता है और वह अपनी शक्तियों का उपयोग रचनात्मक कार्य में न कर विद्रोही हो उठा है। इससे समाज का अहित होता है।

समाज में बुज़ुर्ग पीढ़ी का स्थान होना ज़रूरी है। लेकिन युवकों को भी ज़िम्मेदारी के पदों पर बैठाना है। क्योंकि नूतन समाज की रचना करने और प्रचलित सामाजिक पद्धति को तोड़ने में युवक में सामर्थ्य है।

स्वातन्त्र भारत में युवकों की आवश्यकता होती है। विध्यार्थी राजनीतिक आन्दोलन में खूब भाग लेते हैं। आज की पीढ़ी आने वाली पीढ़ी की शिक्षा-दीक्षा का भार अपने ऊपर न लेगी तो उसे विकास का अवसर नहीं मिलेगा। इसलिए सहयोग का प्रचार कर सामाजिक सम्बन्धों को बदलना तथा नयी आर्थिक पद्धति को प्रतिष्ठित करना आवश्यक है। इन सब कामों के लिये युवकों को आदर्शप्रियता, निर्भीकता, साहस और लगन चाहिए। इस केलिए युवा पीढ़ी का सशक्तीकरण अति आवश्यक है।

युवा सशक्तीकरण की इस यात्रा में हिन्दी उपन्यासों को मैंने लिया है। आरंभ के उपन्यासों में युवापीढ़ी का चित्रण अधिक नहीं है। स्वतंत्रता के बाद के युवकों की समस्या को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गये हैं। सत्तरोत्तर उपन्यासों में युवा पीढ़ी का पूर्ण चित्र हमें मिलता है। 'हिन्दी उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण' शीर्षक अध्ययन इस दिशा में एक विनम्र प्रयास है। यह शोध प्रबन्ध कुल पाँच अध्यायों में विभाजित है।

पहला अध्याय है 'युवा सशक्तीकरण का महत्व-समाजशास्त्री और साहित्यकारों के दृष्टिकोण'। यह युवा सशक्तीकरण का सामान्य परिचय है। इसमें युवावस्था, छात्र आन्दोलन, युवा सशक्तीकरण, युवा सशक्तीकरण का उद्देश्य और उसकी दिशाएँ ,युवत्व का महत्व आदि मुद्दे आ जाते हैं।

दूसरा अध्याय है ‘हिन्दी में युवा पीढ़ी पर केंद्रित पूर्ववर्ती उपन्यास-एक परिचय’ । इसमें युवापीढ़ी को लेकर लिखा गया उपन्यास का चित्रण है। इसमें आरंभ से लेकर नब्बे तक के उपन्यासों में युवा पीढ़ी का परिचय दिया गया है।

तीसरा अध्याय है ‘नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण की दिशाएँ- प्रतिनिधि उपन्यासों के आधार पर’ । इसके अन्तर्गत बारह उपन्यास आ जाते हैं। श्री योगेन्द्र शर्मा का ‘रुहेलखण्ड़ का गाँधी’, मृदुला सिन्हा का ‘अतिशय’, अमृतलाल नागर का ‘पीढ़ियाँ’, गिरिराज किशोर का ‘यातना घर’, इन्दिरा राय का ‘लक्ष्यवेद’, डॉ. शशिप्रभा शास्त्री का ‘मीनारें’, सूर्यबाला का ‘दीक्षान्त’, धर्मेन्द्र गुप्त का ‘इसे विदा मत कहो’, मनोज सिंह का ‘होस्टल के पन्नों से’, नमिता सिंह का ‘लेडीज़ क्लब’ ,राजेन्द्र मोहन भट्नागर का ‘वैलेंटाइन डे’, नरेन्द्र कोहली का ‘न भूतो न

भविष्यति' आदि आते हैं। इसके अन्तर्गत युवा पीढ़ी की विविध समस्याओं का चित्रण मिलता है।

चौथा अध्याय है 'चर्चित उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण के मार्ग-लेखकीय सोच' । इन बारह उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण के विविध रूप आ जाते हैं । इसमें युवकों के स्वतंत्रचिन्तन, शिक्षा की भूमिका, विवाह में परिवर्तन, पीढ़ीयों के अन्तराल आदि चित्रित किया गया है।

अंत में उपसंहार है। संपूर्ण अध्याय में जो विचार बिन्दु उभरे हैं वह इसमें लिखा गया है। ये हमारे भावी पीढ़ी के लिए प्रेरणा देते हैं। इन बारह उपन्यासों में विविध तरह के युवकों का चित्रण मिलता है। विविध तरह के चरित्र होने पर भी उनकी समस्याएँ एक ही हैं । उपसंहार के पश्चात उपजीव्य सामग्री के अन्तर्गत आधार ग्रन्थ ,सन्दर्भ ग्रन्थ और पत्रिकाओं की सूचियाँ दी गयी हैं।

इस शोध प्रबन्ध को पूरा करने में सर्वप्रथम मेरे शोध निर्देशक, कालिकट विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के असोसिएट प्रोफसर डॉ. फातिमा जीम का सहयोग है। उनकी प्रेरणा एवं उनके मार्गनिर्देशन से मुझे लिखने में अत्यंत सहायता मिली। उनके प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ।

कालिकट विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ.प्रमोद कोवप्रत जी के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ जिनका पूर्ण सहयोग मुझे मिला है। विभाग के भूतपूर्व आचार्या डॉ.आर.सुरेन्द्र जी और विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रोत्साहन एवं सहयोग के प्रति मैं धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। मेरे सहयोगी मित्रों के प्रति भी मैं हृदय से आभारी हूँ। मेरे जीवन साथी श्री.पी.कमल लाल हमेशा प्रेरणा एवं प्रोत्साहन देते हुए मेरे साथ रहे। उन सबके प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

शोध सामग्री संकलन में हमारे कालिकट विश्वविद्यालय के पुस्तकालय और विभागीय पुस्तकालय के कर्मचारियों को मैं धन्यवाद प्रकट करती हूँ। कोच्चिन विश्वविद्यालय , गव.आड्र्स एण्ड सइन्स कॉलेज, डिस्ड्रिक्ट लैब्ररी आदि काफी लाभदायक रहे। इन सभी संस्थाओं और विश्वविद्यालयों के संचालकों ने सामग्री संकलन की सुविधा देकर मेरी मदद की है। उनके प्रति मैं विशेष रूप से धन्यवाद अदा करती हूँ।

मेरे शोधकार्य के सामग्री चयन करते समय मुझे दिल्ली जाने का अवसर मिला। केन्द्रिय साहित्य अकादमी, दिल्ली विश्वविद्यालय जाने का अवसर मिला। साहित्य अकादमी के पुरस्कार सम्मेलन **(2016** फरवरी**)** में भागीदार होने का सुअवसर भी मुझे मिला। यहाँ से हिन्दी साहित्यकारों से मिलने का और बातचीत करने का मौका भी मिला। उनके सुझावों से

भी मैं बहुत लाभान्वित हो सकी हूँ। उन सब के प्रति मैं हृदय से आभारी हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को विद्वानों के समक्ष मैं विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करती हूँ।

हिन्दी विभाग **आशीवाणी. के**

कालिकट विश्वविद्यालय शोध छात्रा

कालिकट विश्वविद्यालय

अध्याय-1

युवा सशक्तीकरण का महत्व-
समाजशास्त्री और
साहित्यकारों के दृष्टिकोण

मानव जीवन में युवावस्था का समय बहुत महत्वपूर्ण है |युवावस्था मनुष्य के लिए संपूर्ण विकास का अर्थात शारीरिक और मानसिक परिणति का संक्रांतिकाल है | युवाशक्ति किसी भी राष्ट्र की प्रबलतम शक्ति है |युवा शक्ति के विकास पर राष्ट्र का विकास निर्भर है| प्रारंभ से इतिहास यही निरूपित करता आया है कि समाज को आगे बढाने के लिए ,उसमें नये नये परिवर्तन लाने के लिए और उसकी सारी उन्नति के लिए प्रेरणा देने वाले युवा वर्ग ही हैं।

1. युवावस्था

मानव जीवन में युवावस्था का समय कहां तक मानना चाहिए इसमें विद्वानों में मतभेद हैं| सामान्यतः हम 16 से 24 तक की अवस्था को युवावस्था कहते हैं| मनोवैज्ञानिकों के अनुसार वह बाल्यवस्था की सीमा बांधने

वाला काल है | समाज शास्त्रियों के अनुसार युवावस्था बाल्यावस्था और प्रौढ़ अवस्था के बीच की पुल है |

मनुष्य के जीवन में युवावस्था सबसे सक्रिय अवस्था है | इस अवस्था में मनुष्य के शारीरिक और मानसिक दोनों ही स्तरों पर महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है। युवावस्था तीव्र रूप में शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होने का काल है अतः इस समय का जीवन संघर्षमयी होना स्वाभाविक है |

युवावस्था की शक्ति और ऊर्जा अनुपमेय होती है | यह एक प्रकार की अनंत शक्ति है, जिसका विवेकपूर्ण उपयोग करने की आवश्यकता होती है | इसलिए राष्ट्र और समाज के नेता युवा वर्ग के उत्साह को राष्ट्र निर्माण के कार्यों

में विनियोजित करते हैं | युद्ध काल में युवा वर्ग इस उत्साह का ही उपयोग करते हैं |

इससे स्पष्ट है कि युवकों का उत्साह और शक्ति तो स्वयं अनिर्दिष्ट होता है | उसको निश्चित दिशा में नियोजित करने का काम समाज के प्रौढ़ वर्ग का होता है| युवावस्था मानव जाति की एक ऐसी संवेदनशील एवं संक्रमण कार्य अवस्था है जिसमें युवा अपने जीवन की सभी सचाई से रूबरू होते हैं | इस अवस्था में युवकों को मानवीय संवेदनाएँ और सामाजिक मूल्यों से होकर गुजरना पड़ता है | युवावस्था संघर्ष का काल होता है | युवक संघर्ष के लिए कुछ कर गुजरने के लिए किसी दिशा में आगे बढ़ने के लिए, हर समय जागृत रहता है| उसकी छटपटाहट विभिन्न रूपों में प्रकट होती है |उसकी यह

धारणा महत्वकांक्षाओं के रूप में आदर्श कल्पना के रूप में और कभी नूतन उदभावना मूलक चिंतन के रूप में प्रस्फुटित होती है |

युवा वह है जिसके पास शक्ति है जो बौद्धिक है | युवकों के पास ऊर्जा है और उनमें कार्य करने की असीम क्षमता है| युवावस्था जीवन का महत्वपूर्ण काल है | दायित्वों का वहन करने और नवसृजन करने की क्षमता युवावस्था में होती है | युवकों के हाथ में समाज और राष्ट्र का भविष्य है | युवक भावी जगत की आशा है | श्री अरविंद ने अपने संदेश में कहा है - '' युवा होने का अर्थ है भविष्य में जीना | युवा होने का अर्थ है कि जो हमें बनाना है , वह बनने के लिए हम वह सब कुछ छोड़ने को सदैव तत्पर रहें जो हम हैं | युवा होने का अर्थ है कभी यह

स्वीकार न करना कि संशोधन नहीं हो सकता |"1

आज युवापीढ़ी किसी भी जीवन मूल्य या दर्शन को परंपरा के आधार पर अपनाना नहीं चाहते हैं | वे तर्कपूर्ण व्याख्या के प्रमाण पर ही उसे स्वीकार करती हैं | इस तरह नयीपीढ़ी की सोच और विचार में प्रगतिवादी प्रवृत्ति अधिक है | युवावस्था में व्यक्ति एक ऐसी स्वतंत्रता का अनुभव करता है जो उसे बचपन में प्राप्त नहीं होती है | युवा व्यक्ति में आकांक्षाओं और शक्ति का सैलाब होता है | बचपन की आदतें युवा होने पर पूर्ण रूप से नहीं बदलती हैं | समय – समय पर बदलती हुई परिस्थितियों के कारण युवा व्यक्तित्व में परिवर्तन होता है | बचपन में दु:खी बच्चे प्राय: भावुक हो जाते हैं | लज्जा करनेवाले बच्चे युवावस्था में प्राय : अकेलेपन की

प्रवृत्ति से ग्रस्त होते हैं |वे आत्मविस्वास को हासिल नहीं कर पाते| यही नहीं शारीरिक रूप से वे कमज़ोर हैं तो मानसिक रूप से भी वे कमज़ोर हो जाते हैं |

युवा में शरीर के प्रति लोगों का क्या विचार हैं यह जानने की प्रबल इच्छा होती है | अंतराष्ट्रीय युवा वर्ष १९८५ में राष्ट्रीय संघ में युवकों की आयु १५ से २५ वर्ष तक रखी है जिसे भारत सरकार ने भारत में उसे ३५ वर्ष तक और बढ़ाया हैं | सामान्यतः भारतीय विचारधारा के अनुसार युवावस्था १८ से ३० तक है | युवा का व्यक्तित्व उसके आसपास के परिवेश से निर्मित होता है |

1.1. छात्र आंदोलन

हमारे देश में छात्र आंदोलन यहां की परिस्थिति पर निर्भर है और कुछ बातों में पश्चिमी छात्र आंदोलन से प्रभावित है| स्वतंत्रता से पूर्व छात्र राष्ट्रीय आंदोलन में प्रत्यक्ष रुप में भाग लेते थे| उन्होंने देश को आज़ाद कराने के लिए बंदूक का जवाब बंदूक से था | युवा पीढ़ी असहयो आंदोलन में भी भाग लेते थे और आतंकवादी तरीकों से ब्रिटिश सरकार को हानि भी पहुंचाई है |

उन्होंने महात्मा गांधी के एक संकेत पर कॉलेज और विश्वविद्यालय छोड़ दिया था| लेकिन आज छात्र आंदोलन भ्रष्ट व्यवस्था का प्रतीक है | छात्र आंदोलन का मुख्य कारण वर्तमान शिक्षा के प्रति आक्रोश और उसके गठन के प्रति आक्रोश है| लक्ष्यहीन शैक्षणिक कार्यक्रम छात्रों को उत्तेजित करते हैं| छात्र जो कुछ

पढ़ रहे हैं वह उनके काम का नहीं है | परंतु डिग्री प्राप्त करने के लिए जो कुछ उसके पाठ्यक्रम में है उसका अध्ययन उसे करना अपरिहार्य है |

शिक्षा का उद्देश्य छात्रों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर कराना है | छात्र, शिक्षक, अभिभावक, लेखक और प्रशासक सब को मिलकर सहयोगात्मक रवैया अपनाकर परस्पर समन्वय दृष्टि की गुंजाइश के लिए विश्वसनीय वातावरण तैयार करना है |

1.2. युवा सशक्तीकरण

आधुनिक समाज में युवा पीढ़ी का महत्व बढ़ता जा रहा है। आजकल समाज में युवा वर्ग को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है | किसी भी राष्ट्र में समाज को अपने साथ नए मोड़ पे ले जाने की शक्ति युवा वर्ग में ही अधिक होती है |

चिंतन, चेतना और कर्म के स्तर पर युवा पीढ़ी को प्रबुद्ध बनाने की प्रक्रिया को युवा सशक्तीकरण कहते हैं | युवावर्ग आज के समाज की शक्ति है तथा उससे ही समाज की रक्षा तथा विकास संभव है| युवकों को शक्तिशाली तथा कर्तव्यनिष्ठ बनाना आज के समाज की अनिवार्यता है |

युवा सशक्तीकरण का उद्देश्य समाज में एक ऐसी ऊर्जा का संचार करना है जिससे युवकों की सोच में सकारात्मकता आए| उनकी ऊर्जा का राज्य के विकास में उपयोग हो जाये|युवकों को अपने समग्र विकास (व्यक्तित्व ,शैक्षणिक एवं आर्थिक) का अवसर मिले एवं वे देश के एक आदर्श नागरिक बन सके | यही युवा सशक्तीकरण है |

असीम शक्ति रखने वाले और समाज की उन्नति में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करने वाले युवा संकीर्ण दृष्टिकोण ,

रुढिवादिता आदि से प्रभावित हैं | दुर्बल सिद्ध करके उसकी उपेक्षा करना ठीक नहीं है | इसलिए बुद्धिजीवी , समाज सुधारक, साहित्यकार, कलाकार आदि ने युवा शक्ति के सदुपयोग की आवश्यकता को महसूस करते हुए उसके सशक्तीकरण की ओर संकेत किया है | परंपर और इतिहास को परखे तो जितने महापुरुष हुए उन्होंने अपने युवावस्था में ही जीवन का लक्ष्य निर्धारित किया था | आदि शंकराचार्य ने युवावस्था में ही संन्यासी बनने का निश्चय किया था और केवल 32 वर्ष की आयु में प्रचंड साहित्य की रचना की | संत ज्ञानेश्वर अपने जीवन के 21 वर्ष में संस्कृत की भगवत गीता पर 'भावार्थ दीपिका ' नामक ग्रंथ की रचना की| हमारे देश के ऐसे ही एक महापुरुष हैं स्वामी विवेकानंद ,जो पिछली एक सदी से भी अधिक समय से हर युग

की युवा पीढ़ी के लिए दीपस्तंभ बने रहे हैं | विवेकानंद युवावस्था अर्थात 39 वर्ष की आयु में ही भारत तथा मानवता को देशभक्ति और समाज सुधार का संदेश देकर इस संसार से विदा हुए इसलिए भारत सरकार ने उनके जन्मदिन 12 जनवरी को युवा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया |

युवा सशक्तीकरण की अवधारणा युवकों के सम्पूर्ण विकास से संबंधित है जिससे युवापीढ़ी समाज में न्यायपूर्ण जीवन व्यतीत कर सकें और युवा समाज के विकास में सशक्त भूमिका का निर्वहन कर सकें | सशक्तीकरण का एक व्यापक अर्थ है | यह अर्थशक्ति और अधिकारों का विकेन्द्रीकरण है | शक्ति एक जगह केंद्रित

न रहती है| यह समाज के सभी वर्गों में यथासम्भव सामान रूप से वितरित होनी है|

सशक्तीकरण का अर्थ है जहां शक्ति न हो ,जहां पर कम हो वहां पर शक्ति को और बढ़ा देना| युवा सशक्तीकरण का मतलब है युवापीढ़ी का विकास और उसे शिक्षा प्राप्तः करने का अधिकार देना और घर ,परिवार और समाज के बारे में स्वतंत्र निर्णय लेने का हक़ देना | सशक्तीकरण और विकास दोनों सम्बंध रखते हैं | सशक्तीकरण के बिना कोई विकास नहीं होता है|

स्वतंत्रता के बाद युवकों की विचारधारा में काफी परिवर्तन दिखाई देता है | शिक्षा ,विज्ञान, राजनीति ,प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्र में युवा पीढ़ी समान भूमिका निभा रही हैं

| आज युवक आगे बढ़ना चाहता है | उसे समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखने का प्रयत्न करना चाहिए |

समाज में युवकों को समुचित स्थान प्राप्त करने के लिए सरकार की ओर से इस दिशा में व्यापक सुविधायें होती हैं | युवकों के लिए ज्ञान और नौकरी के लिए नए विकास योजना और सुविधाएं भी आज चालू हैं |

1.2.1.युवा सशक्तीकरण का उद्देश्य

युवा सशक्तीकरण का उद्देश्य युवा वर्ग को निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनाना है | यह युवकों के शौक्षिक ,सामाजिक , आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों पर निर्भर रहता है | राष्ट्रों में ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जिसमें प्रत्येक युवा अपनी योग्यता को निकालते हुए आवश्यक कौशल आर्जित कर सके तथा आर्थिक

रुप से सशक्त हो सके | युवकों के व्यक्तित्व एवं नेतृत्व गुणों का विकास करना है जिससे युवा वर्ग राष्ट्र के विकास में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन कर सकें | युवकों के सर्जनात्मक उर्जा को अभिप्रेरित करना तथा उनमें साहसिक निर्णय लेने की शक्ति पैदा करना और खेल कूद एवं अन्य गतिविधियों में स्वस्थ प्रतिस्पर्धात्मकता की क्षमता का विकास करना जरूरी है | युवतियों को उनकी क्षमता का विकास करना चाहिये इसके लिये सरकार की ओर से आवश्यक कार्यवाही होनी चाहिए। युवा सशक्तीकरण के प्रमुख लक्ष्य पिछड़े वर्ग एवं आर्थिक रुप से कमज़ोर वर्ग के युवकों को आर्थिक और सामाजिक सशक्तीकरण के लिए विशेष प्रयास करना है|

1.2.2 . युवा सशक्तीकरण की दिशाएं

1.2.2.1 .व्यक्तित्व और विकास

यौवन में व्यक्तित्व पूर्णत: निखरता है| आत्मविकास की ओर रुचि होने के कारण व्यक्ति सदैव अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है | माता पिता का उत्तरदायित्व है कि अपने बच्चों के व्यक्तित्व-विकास के लिए प्रेरणा दें।

युवा पीढ़ी के व्यक्तिगत विकास में सबसे महत्वपूर्ण पहलू उसका चारित्रिक विकास है, जिससे समाज के साथ उनका सीधा संबंध जोड़ता है | मनुष्य का चरित्र सारे समाज को प्रभावित करता है | चारित्रिक विकास के द्वारा समाज में आत्मबल आत्मसम्मान, आत्मनिर्भरता तथा आत्म सुरक्षा की भावनायें प्रबल होती हैं। इसके द्वारा उसका व्यक्तिगत विकास संभव होता है | वह व्यवहार कुशल

बनता है और अपने अनोखे व्यक्तित्व को प्रदर्शित करके सबको प्रभावित करता है | इस प्रकार का व्यक्तिगत विकास प्रत्येक युवा के लिए वांछनीय है |

युवकों को प्रभावशाली व्यक्तित्व की उपलब्धि के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए| युवा वर्ग को व्यवहार कुशलता, धार्मिक चिंतन ,राजनीतिक जागरूकता, राष्ट्रीयता और विश्व बंधुत्व की भावना आदि गुण होना जरूरी है |

1.2.2.2. व्यवहार कुशलता

अच्छा चिंतन अच्छे कार्य की प्रेरणा देता है | युवकों को अच्छे कार्य में स्वयं तथा साथ ही दूसरों को प्रेरणा देना चाहिए | युवकों को अपने भौतिक, चारित्रिक ,आर्थिक तथा सामाजिक विकास के लिए जागरूक रहना है और अपने चारों ओर लगातार परिवर्तित होने वाले समाज को समझकर स्वाध्याय चिंतन ,परोपकारिता और व्यवहारिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ना है |

व्यक्तित्व विकास के लिए धार्मिक चेतना एक आवश्यक गुण है| धार्मिक चेतना युवकों के व्यक्तित्व के विकास को मुख्य रुप से दो प्रकार से प्रभावित करता है -आंतरिक प्रेरणा तथा ईश्वर शक्ति द्वारा | युवकों को आंतरिक प्रेरणा पारिवारिक तथा सामाजिक वातावरण से प्राप्त होती है|

सांसारिक जीवन संघर्षमयी और प्रतियोग्यतामय है यहाँ जिसमें क्षमता होती है ,वही आगे बढ़ता है | क्षमता का अर्थ केवल शारीरिक शक्ति - सामर्थ्य नहीं है | युवकों की क्षमता कई बातों पर निर्भर रहती है जैसे विद्या, बुद्धि, मनोबल, क्रियाशक्ति और नैतिकता आदि | ऐसे गुणों से युवकों की योग्यता का विकास होता है |

1.2.2.3. राजनीतिक जागृति

एक अच्छा नागरिक बनने के लिए युवकों को राजनीतिक गतिविधियों से सजग रहना है| प्रजातांत्रिक राष्ट्र में प्रत्येक युवा का कर्तव्य है वह राजनीतिक गतिविधियों को अपना व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अनुसार मूल्यांकन करें| उसमें सुधार लाने के लिए अपने विचारों का प्रदर्शन करें| राजनीतिक जागरूकता सामूहिक आंदोलन है जो व्यक्तिगत स्तर पर आरंभ होता है| प्रत्येक युवा के अंदर जागृति होने से सारे समाज तथा राष्ट्र एक सामूहिक रूप धारण कर लेता है |इसके द्वारा एक सामूहिक शक्ति का सृजन होता है | युवकों की इस सामूहिक शक्ति के द्वारा ही जन कल्याण संभव है |

1.2.2.4. शिक्षा का महत्व

युवा विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है |शिक्षा द्वारा ही युवकों का सर्वांगीण विकास होता है| शिक्षा मनुष्य के मानसिक विकास का साधन है ,मानसिक विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है | शिक्षा से बौद्धिक विकास होता है और युवकों को निर्णय लेने की शक्ति भी मिलती है | इससे राष्ट्र को प्रभावशाली युवा नेतृत्व मिलता है |

पारिवारिक वातावरण प्रत्येक युवा पीढ़ी के व्यक्तित्व विकास के लिए अपना योगदान देता है | व्यवहार और आचरण संबंधी उपदेश बचपन तक सीमित न रहकर युवाकाल तक मिलते रहना वांछनीय है |युवावस्था में इस प्रकार के उपदेश मिलने से पारिवारिक शिक्षा पैतृक रूप धारण कर सकती है। सदाचरण संबंधी शिक्षा पीढ़ी दर पीढ़ी दिये जाने की व्यवस्था कायम

रहे | उच्च शिक्षा को रोज़गार बनाया जाना चाहिए | सभी वर्तमान पाठ्यक्रमों का पुनर्मूल्यांकन करना चाहिए | युवकों को व्यावसायिक और तकनीकी के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय समूहों के संस्थानों को प्रदेश में प्रारंभ करने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए |

देश की स्वंत्रता के फलस्वरूप विश्वविद्यालयों के कर्तव्य तथा दायित्व विस्तृत हो गये हैं | अब उन्हें राजनीति , प्रशासन, व्यवसाय, उद्योग, तथा वाणिज्य सभी क्षेत्रों में नेतृत्व ग्रहण करनेवाले योग्य युवकों को बनाना है| शिक्षा केवल मस्तिष्क का प्रशिक्षण नहीं ,आत्मा का भी प्रशिक्षण है | ज्ञान तथा विवेक दोनों ही मिले यही इसका उद्देश्य है| शिक्षा का मतलब केवल व्यक्ति और समाज का सामंजस्य

नहीं बल्कि शिक्षा का महान उद्देश्य यह भी है कि वह नए मूल्यों की सृष्टि करें |

1.2.2.5. आत्मविश्वास

आत्मविश्वास में जादू की शक्ति होती है| जब युवा में आत्मविश्वास जागृत होता है तो वह अपनी क्षमता से बढ़कर काम करता है | आत्मविश्वास से भरपूर युवक महान कार्य संपन्न करता है | उसमें सकारात्मक दृष्टिकोण आ जाता है | अपने आप पर भरोसा रखने की दृढ़ इच्छा शक्ति युवा में होती है | आदमी चाहे निर्धन क्यों न हो उस की सबसे बड़ी पूंजी आत्म विश्वास होती है | ऐसा युवा सबको एकजुट करके आगे बढ़ाता है |

1.2.2.6 .नेतृत्व शक्ति

सशक्तीकरण के लिए सक्षम नेतृत्व शक्ति भी होनी चाहिए |सक्षम नेता बनने के लिए युवकों को अपने व्यक्तित्व को बनाना पड़ता है। युवकों को अपने सुनहरे अवसरों को कसकर पकड़ना चाहिए |अपने भीतर युवकों को सशक्त भावना उत्पन्न करनी चाहिए | सक्षम नेता जीवट व्यक्तित्व वाला होता है जिसमें कर्तव्य शक्ति और नेतृत्च शक्ति भी होती है | सक्षम नेता चुनौतियों का सामना खुल कर करता है और लोकतंत्र में अहम भूमिका निभाता है | जिस प्रकार जयप्रकाश नारायण और महात्मा गांधी जीवनभर व्यस्त और सक्रिय रहे उसी प्रकार सक्रिय रहकर ही युवक सक्षम नेतृत्व की तैयारी कर सकता है|

युवकों को आशावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहिए|आशा भरे वातावरण से शक्ति का संचार होता है | जीवन के

हर क्षेत्र में आशावादी लोग आगे बढ़ते हैं | युवकों को जीवन के अंत तक आशा रखनी चाहिए | मन में युवकों को हमेशा जीवनदायिनी आशा की मशाल को जलाए रखना चाहए | आशावादी सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ता चला जाता है | कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न हो युवाकों को अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ना चाहिए | युवकों को आशा का अंचल कभी नहीं छोड़ना चाहिए | निराशा के क्षणों में अपनी सफलता और उपलब्धियों को याद करना चाहिए ताकि कभी बुरे दिन घिर आये तो आशान्वित रहे |

तेजस्विता जीवन की आत्मा है , व्यक्तित्व की चमक है युवकों को तेजस्विता पाने के लिए दृढ़ मानसिकता और विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति

होनी चाहिए । स्वामी विवेकानंद को इस बात का दु:ख था कि हमारे देश की आध्यात्मिक परंपरा लुप्त होती जा रही है| युवकों को अपना काम चाहे बड़ा या छोटा अपने पैरों पर खड़े रहकर करना चाहिए और जीवन की बाधाओं की परवाह किए बिना रहना चाहिए |

1.2.2.7. भाव संप्रेषण शक्ति

युवकों को अपने प्रदेश के किसी वैज्ञानिक या सामाजिक संगोष्ठियों में भाग लेना चाहिए | इसमें मुख्य्य केंद्र युवक होता है| इससे युवकों की लोकतांत्रिक दृष्टिकोण का विकास होता है | सहयोग की भावना का विकास भी होता है | इन सब तरीकों से युवा सशक्तिकरण संभव होता है |

इससे युवकों का सामाजिक , सांस्कृतिक, नैतिक गुणों का विकास होगा | उच्च मानसिक योग्यता का विकास भी होगा | युवक प्रतिभावान और क्रियाशील बन जाएगा |

1.2.2.8.अपने को पहचानना

सशक्तीकरण के लिए युवकों को जीवन के यथार्थ रूप को पहचानना होगा | यही आत्मज्ञान है | इसका अर्थ है - अपने सहज रूप और गुण-धर्म को जानना | जब तक युवा अपने को ,अपनी शक्तियों को नहीं जानेगा तब

तक वह जीवन में आगे नहीं बढ सकेगा | युवकों को अपनी शक्तियों का ज्ञान नहीं होता |

अतः युवा पीढ़ी का कर्तव्य है कि उसको अपने वास्तविक रूप को पहचानना है और अपनी योग्यता को भी समझना है| युवा ज्ञान , प्रेम ,सम्मान , सहानुभूति आदि का भी भूखा होता है | शारीरिक शक्ति के साथ आत्मिक , बौद्धिक , एवं मानसिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति होनी चाहिए |

युवकों के आत्मिक , बौद्धिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों का विकास आंतरिक शक्तियों के उत्कर्ष से होता है | जीवन के लिए शक्ति की आवश्यकता होती है और शक्ति के लिए संयम की| शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों के विकास संयम से ही होता है| इसलिए युवकों को

अपने मनोभावों और इंद्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए |

1.2.2.9.चरित्र चित्रण

युवक अपनी चारित्रिक विभूतियों से ही चमकता है | लोक में चरित्रवान की ही प्रतिष्ठा होती है | चरित्रवान युवक महान और प्रभाशाली होता है | सदाचार से युवक का आत्म तेज बढ़ता है और युवकों में मनुष्यता की भावना विकसित होती है| युवकों को मन -वचन - कर्म से पवित्र रहना चाहिए | इसीसे उसका जीवन सफल होता है| इसके लिए आंतरिक सरलता और मन की शुद्धता आवश्यक है | पारिवारिक जीवन सफल है तो उसका प्रभाव युवकों के स्वभाव, दृष्टिकोण आदि पर भी पड़ता है। घर शिक्षा और सभ्यता का केंद्र है |

1.2.2.10.शिक्षक की भूमिका

युवा सशक्तीकरण के लिए शिक्षकों की महत्वपूर्ण भूमिका है| युवकों के लिए घर का दूसरा प्रतिरूप है शिक्षालय जिसमें युवा अपने आधे से अधिक दिन गुज़रता है| विद्यार्थी जीवन चुनौतियां पूर्ण यौवन में अपना अस्तित्व रखती है| उसके अनुभव जीवन भर उसका पीछा करते हैं । वे युवकों के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं | शिक्षक का व्यवहार युवकों के प्रति उदार , विनम्र, एवं स्नेहिल होना चाहिए जिससे वह अपनी कठिनाइयों और समस्याओं को उनके सामने रख सके| गुरु शिष्य का रागात्मक संबंध विद्यार्थी के व्यक्तित्व पर प्रभाव डालता है| अध्यापक के द्वारा समय और ध्यान पाने वाला छात्र सकारात्मक गुणों से युक्त होता है|

नई प्रतिभाओं को रूप देना और उनका मार्गदर्शन करना आदि शिक्षकों की जिम्मेदारी है| विद्यार्थीयों के प्रति उसका दृष्टिकोण निष्पक्ष होना चाहिए | भेदभाव की कोई दीवार नहीं होनी चाहिए | धर्म, जाति या भाषा के भेद की दृष्टि से उसे नहीं देखना चाहिए| बिना किसी भेदभाव के अपनी अवलोकन शक्ति के आधार पर छात्र की व्यक्तिगत क्षमता, रूचि और योग्यता को पहचान कर उसे सही दिशा प्रदान करना अच्छे शिक्षक का गुण है | अध्यापक का नैतिक कर्तव्य है कि सामाजिक, आर्थिक स्तर के आधार पर किसी प्रकार का पक्षपात न करें। अध्यापकों को युवकों को सदा प्रोत्साहित करते रहना चाहिए |

1.2.2.11. स्वास्थ्य का महत्व

स्वास्थ्य से ही शक्ति उत्पन्न होती है | शक्ति से ही जीवन के सारे काम चलते हैं | युवकों के शारीरिक एवं मानसिक विकास इस पर निर्भर है | स्वास्थ्य होने पर ही युवकों का बल बढ़ता है और युवकों में कुछ करने की क्षमता उत्पन्न होती है| युवापीढ़ी को अपने शरीर को सुगठित तथा शक्तिशाली बनाने के लिए नित्य व्यायाम करना आवश्यक है | इससे शरीर की जड़ता दूर होती है और शारीरिक एवं मानसिक शक्तियों का समुचित विकास होता है |

1.3.युवत्व का महत्व-समाज सुधारकों के दृष्टिकोण

1.3.1.विवेकानंद का युवा सशक्तीकरण

स्वामी विवेकानंद भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिकता के प्रचारक एवं उन्नायक हैं| विवेकानंद का व्यक्तित्व, कृतित्व और उनके संदेश आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरक हैं | भारत सरकार ने उनके जन्मदिवस 12 जनवरी 1985 को युवा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया है। विवेकानंद का चिंतन सकारात्मक, आस्थावादी एवं प्रेरक है | उसमें अपनी आत्मा के भीतर छुपे शक्तियों को विकसित कर उन्हें व्यक्त कर जीवन के महान लक्ष्य तक पहुंचाने की क्षमता है |

विवेकानंद के लिए उनका संदेश है ‘उठो जागो और तब तक रुको नहीं जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए’| विवेकानंद का मानना है जो सत्य है उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो, उससे किसी को

हानी होता या नहीं इस ओर ध्यान मत दो | दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो | अनेक युवा सही दिशा में पहले से ही प्रयत्नशील हैं | अनेक युवा समयानुसार गलत काम भी कर लेते हैं और सही भी |

जो युवा इंद्रियों की दासता के कारण अपने ही जीवन का नाश करते है उनके लिए विवेकानंद के दिशा निर्देशन स्पष्ट हैं | इन सब पर विजय पाने के लिए वे कर्मयोग , ज्ञानयोग तथा ध्यानयोग का अभ्यास करने की सलाह देते हैं | उनके सम्पूर्ण ज्ञान का सार ही यही है कि जिसे व्यक्ति स्वयं भोग सकता है ,उसे स्वयं जागकर कर्म करना होगा |

स्वामी जी ने जातिवाद का खुलकर विरोध किया| उन्होंने रामकृष्ण मिशन के सन्यासियों को निर्देश दिया

कि वे उन लोगों की सेवा पर विशेष ध्यान दें जिन्हें समाज अछूत मानकर उपेक्षा करता है | उन्होंने साधारण युवकों को भी सन्यासी बनाया| विवेकानंद समाज में स्त्रियों की स्थिति को लेकर बहुत चिंतित थे | वे भगिनी निवेदिता को लंदन से स्त्री शिक्षा के लिए भारत लाये थे | उसने अपने को स्त्री शिक्षा तथा रामकृष्ण आश्रम के कार्य के लिए समर्पित कर दिया । स्वामीजी अपने देश में व्याप्त गरीबी ,अशिक्षा तथा अभाव के कारण चिंतित रहते थे |

शिक्षा और ज्ञान को समाज के उत्थान की कुंजी मानते थे | वे अपने शिक्षकों को गांव में शिक्षा का प्रबंध करने के लिए प्रोत्साहित करते थे | ज्ञान और कौशल के साथ लोगों में अच्छे संस्कार ,

आत्मविश्वास और उच्च विचार विकसित करना ही शिक्षा का उद्देश्य होता है |

वे ईसाई मिशनरियों से कहते थे कि हमें आपस में धर्म की नहीं विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शिक्षा की आवश्यकता है | वे साधना और आत्मानुभूति पर बल देते थे | समाज की आर्थिक प्रगति, खेलकूद, कृषि और उद्योगों के विकास पर बल देते थे |गरीबों को समाज में समानता का स्थान दिलाने के लिए विवेकानंद ने' दरिद्रनारायण' शब्द की रचना की| वे अपने साथियों से कहते थे कि मज़दूर किसान और मेहनतकश लोग ही समाज की रीढ़ हैं इसलिए वे ईश्वर के रूप हैं |

इस प्रकार विवेकानंद का चिंतन और उनके कृतित्व युवा पीढ़ी को आत्मिक शक्ति , आत्म विश्वास और आत्म

सम्मान को बढाने की प्रेरणा देते हैं| साथ ही उंन्हें भौतिक एवं संस्कारिक धरातल पर भी निरंतर उपलब्धियां हासिल करने को प्रोत्साहित करते हैं | युवा पीढ़ी को उनका यह संदेश याद रखना होगा कि व्यक्ति विकास को समाज और देश के विकास से ऊपर मान कर न चले क्योंकि व्यष्टि और समष्टि का समन्वय ही भारत को प्रगति के पथ पर अग्रसर करके उसे विश्व समुदाय में गौरवपूर्ण स्थान दिला सकता है |

1.3.2.महात्मा गांधी का युवा सशक्तीकरण

महात्मा गांधी के कुशल नेतृत्व में हमारे देश ने स्वतंत्र संग्राम की लड़ाई लड़ी| गांधीजी ने भारत को अंग्रेज़ों के शासन से आज़ादी दिलाने के साथ साथ भारतीय संस्कृति को शुद्ध करने और उसमें नई स्फूर्ति

पैदा करने का आह्वान दिया | शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य हमें अपनी कथनी और करनी में एक होने की भावना जागृत करना है |आजकल हमारी शिक्षा प्रणाली में इन दोनों का अभाव है। गांधीजी ने युवकों से लड़ने और आत्मनिर्भर होने का उपदेश दिया | युवकों को सर्वोच्च बौद्धिक, वैज्ञानिक और आध्यात्मिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की पद्धति बताई थी जिससे भारत के कर्म क्षेत्र में असहयोग आंदोलन के लिए युवकों को आवश्यक प्रोत्साहन और प्रशिक्षण मिले |

असहयोग आंदोलन के रुप में जब गांधी जी ने जनता के सामने सत्याग्रह रख दिया तब उसपर सारे भारत वासी बलिदान करने को तैयार हो गए | उसके साथ लोगों को भारतीय जीवन के आध्यात्मिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा दी गई | इस के कारण प्राचीन संस्कृति नवीनता

का परिधान धारण कर नवीन लोग में भारतीय समाज के करोड़ों निष्प्राण और निष्क्रिय वर्गों के हृदय में जीवन ज्योति को प्रज्वलित करने में समर्थ हुई |

महात्मा गांधी शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य मानव जीवन का सर्वोत्मुंखी विकास मानते थे| गांधीजी भारतीय युवकों को सब तरह खुशहाल बनाना चाहते थे | गांधीजी ने भारत को राजनीतिक , आर्थिक एवं सामाजिक दास्तां के बंधन से सर्वदा मुक्त कराना चाहा| गांधीजी चाहते थे कि भारतीय युवा वर्ग उपयोगी नागरिक बने और भारत का प्रत्येक युवा मात्र साक्षर नहीं शिक्षित हो | युवकों से उनके उपदेश हैं कि शरीर, मन और आत्मा विकसित और परिपुष्ट हो, वही वास्तविक शिक्षा है |

उनके अनुसार हमारी शिक्षा समग्र, सर्वांगीण एवं संकलित गुणों का विकास करने वाली होनी चाहिये। युवकों का विकास हमारा लक्ष्य है | हमारे युवा दार्शनिक हो ,वैज्ञानिक हो,शिल्पाकार हो ,चित्रकार हो और देशभक्ति और विश्व बंधुत्व की भावना से ओतप्रोत हो तभी भारत का कल्याण होगा |

गांधीजी चाहते थे कि शिक्षा द्वारा मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा की सारी शक्तियॉ पूर्ण रूप से विकसित हो | शक्तियों के विकास में समग्रता एवं संतुलन की भी दृष्टि रखनी होगी| समाज को संतुलित वर्गो की ही ज़रूरत है | भारत का नव निर्माण श्रमनिष्ठ एवं संतुलित दृष्टिकोण वाले युवकों से ही हो सकता है |

1.3.3. सुभाष चंद्र बोस के युवा दृष्टिकोण

सुभाष चंद्र बोस भारतीय स्वाधीनता संग्राम के महारथियों में एक प्रमुख व्यक्तित्व थे | उनका नाम इतिहास में सदैव अमर रहेगा | महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' को नेताजी ने अपनी 'आज़ाद हिंद फौज' के कार्यकलापों द्वारा शक्तिशाली बनाया | उनके संगठन में उन्होंने यह आह्वान दिया कि 'मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'|

असहयोग आंदोलन के समय सुभाष चंद्र बोस 24 वर्ष के नवयुवक थे | गांधी जी के आदेशानुसार सुभाष चंद्र बोस बंगाल के महान नेता देशबंधु चितरंजन दास से मिले | सुभाष चंद्र ने उनको अपना राजनीतिक गुरु मान लिया | सुभाष चंद्र अपने लक्ष्य के लिए दृढ़ संकल्प व्यक्ति थे | उनकी दृष्टि में सफलता के लिए संगठन आवश्यक था |

युवकों के लिए उनके भाषण प्रेरणादायक हैं | उनका मत है किसी कार्य में सफलता अथवा असफलता के कारण मन में जो अहंकार होता है और निराशा होती है ,उनका उन्मूलन करके युवकों को संयत बनाने के लिए एक मात्र उपाय अध्ययन एवं मनन है | युवा पीढ़ी में तभी आंतरिक अनुशासन आ सकता है | नियमित व्यायाम से जिस प्रकार शरीर का विकास होता है उसी प्रकार युवकों के लिए यह जरूरी है |

स्वामी विवेकानंद के बारे में सुभाष चंद्र की राय उनकी आत्मकथा में लिखा है -" मैं उस समय मुश्किल से 15 का वर्ष था, जब विवेकानंद ने मेरे जीवन में प्रवेश किया | इसके परिणाम स्वरूप मेरे

भीतर एक उथल पुथल मच गई | स्वामी जी को समझने में तो मुझे काफी समय लगा | लेकिन कुछ बातों की छाप मेरे मन में शुरू से ही ऐसी पडी कभी मिठा नहीं सकी | विवेकानंद अपने उपदेशों के जरिए मुझे एक पूर्ण विकसित व्यक्तित्व लगे | मैंने उनकी कृतियों में अनेक प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर पाए जो मेरे मन में उस समय घूम रहे थे , जो अस्पष्ट थे और बाद में स्पष्ट हो कर सामने आए |"2

सुभाष चंद्र के अनुसार युवा पीढी का कर्तव्य यह है कि उन्हें वर्तमान को या यथार्थ को सत्य के रूप में स्वीकार नहीं करना चाहिए बल्कि उन्हें बंधन के विरुद्ध , अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा करनी चाहिए । युवा पीढ़ी नई सृष्टि की

प्रक्रिया से अलग नहीं रह सकते | उनकी राय है कि अनेक दिनों से युवा शक्ति आत्म विस्मृति में पड़ी रही इसलिए दूसरों के निर्देश पर चलती रही | जब तक इस प्रकार की अवस्था में समाज और राष्ट्र की क्रमिक उन्नति होती रही, तब तक कोई खास गड़बड़ी नहीं हो पायी |

लेकिन देश में अच्छे नेतृत्व के अभाव के कारण समाज और राष्ट्र की दुर्गति हुई | वहां युवा विद्रोही हो उठे हैं | कुछ लोगों का विचार यह है कि युवा आंदोलन राष्ट्रनायक आंदोलन का नामांतर मात्र है | यह धारणा गलत है | सुभाष चंद्र का कहना है कि किशोरावस्था पार कर जब हम यौवन में कदम रखते हैं तब प्रकृति की सभी संपदा से हमारी समृद्धि होती है |

तभी शारीरिक शक्ति, और मानसिक तेज सब कुछ पाकर हम सचमुच मनुष्य हो उठते हैं | मानव जीवन के जितने भी पहलू हैं युवाशक्ति के उतने ही रूप हैं | इस युवा शक्ति के विभिन्न रूपों में कोई भी रुप दोषपूर्ण नहीं है |

हमारे देश में मध्यवर्गीय शिक्षित वर्ग ही देश की रीढ़ है | जब तक जन साधारण में स्वभाविक जागरण नहीं आता तब तक शिक्षित वर्ग को ही युवा आंदोलन का नेतृत्व करना होगा | शिक्षित वर्ग को ही संगठन के कार्य को आगे बढ़ कर करना होगा | सुभाष चंद्र की राय में मध्यवर्गीय शिक्षित वर्ग में भाव का अभाव है | शिक्षित वर्ग में आदर्श के प्रति निष्ठा और लगन का अभाव है | कारण यह है कि शिक्षा

देने वाले शिक्षा के साथ हमारे मन में आदर्श का बीजवपन नहीं करते |

शिक्षित वर्ग में बेकारी की समस्या भयानक है | शिक्षित वर्ग की आर्थिक अवस्था देश के किसानों से भी बद्त्तर है | नौकरियों के जरिए उनका अभाव मिटा सकता है लेकिन शिक्षकों की संख्या की अपेक्षा नौकरियों की संख्या बहुत कम है | सुभाष चंद्र भारतीय युवकों से व्यवसाय और वाणिज्य की ओर ध्यान लगाने को कहते हैं | युवा पीढ़ी को कार्य प्रणालियों में विचारों के आदान प्रदान की सुविधा देनी होगी | उन्हें एक लक्ष्य सामने रखकर जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के निर्माण में लगे रहना चाहिए |

समग्र युवकों को सबल, स्वस्थ और कृतार्थ करने का आयोजन करना

है |

गावों के युवकों के बारे में भी सुभाष चंद्र का अपनी राय है | गांव के युवा पीढी अपने अन्न , वस्त्र एवं स्वास्थ्य की व्यवस्था स्वयं करते हैं गांव के निवासी स्वावलंबी और आत्मनिर्भरशील होते हैं | हमारे समाज में अत्याचार और अनाचार ,धर्म या लोकाचार के नाम पर हो रहा है | युवा वर्ग को यह मिटाने की कोशिश करनी चाहिए |

1.3.4.डॉक्टर**.** ए **.**पी **.**जे**.** अब्दुल कलाम

प्रोफ़ेसर अब्दुल कलाम का जीवन सही सोच ,कर्म - शक्ति और नैतिक मूल्यों की सार्थकता की

मिसाल है | भारत के लोगों को विशेष कर युवकों को प्रेरित करना उनका मुख्य लक्ष्य है | उनके तीनों ग्रंथ प्रेरणादायक हैं | 'अग्नि की उड़ान', 'भारत 2020 :नई सहस्राब्दी ' और ' तेजस्वी मन' आदि प्रमुख ग्रंथ हैं| डॉ कलाम जी ने युवकों को उत्तेजित करने के विषय पर लिखने का फैसला इसलिए किया ताकि सन 2020 तक भारत एक विकसित राष्ट्र बन पाए|

प्रौद्योगिकी तथा उसके प्रबंधन से जुडी उनकी पूरी करियर यात्रा के दौरान उन्होंने युवा शक्ति और उसकी क्षमता पर भरोसा किया है | उनका कहना है -" मेरी युवा टीम मेरी ताकत रही है ,जिसने कभी मेरा सिर नहीं झुकने दिया और सबसे अधिक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में सर्वाधिक जटिल परियोजनाओं

पर उनके साथ काम करना मेरे लिए एक बेहद संतोषजनक अनुभव रहा | मुझे पूरा विश्वास है कि मुकाम तक पहुंचने की आज़ादी तथा उचित मार्गदर्शन मिलने पर भारत का युवा पीढ़ी बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं |"3

अब्दुल कलाम जी अपने युवा लोगों से कहते है कि हमेशा आगे बढ़ते रहना है और अपनी सुप्तावस्था में पड़ी आंतरिक ऊर्जा को प्रज्वलित करते रहना है। रचनात्मक प्रयास में ऐसे नेताओं का प्रयास इस देश में शांति ,समृद्धि और सुख जगाएगा |

डॉक्टर कलाम के मित्र जलालुद्दीन उन्हें हमेशा शिक्षित व्यक्तियों , वैज्ञानिक खोजों , समकालीन साहित्य और चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियों के बारे में बताते

थे| कलाम के चचेरा भाई शमसुद्दीन अखबारों से हिटलर , महात्मा गांधी और जिन्ना के बारे में चर्चाएं करते थे | जलालुद्दीन ने कलाम को सकारात्मक सोच के बारे में बताते थे |

युवा पीढ़ी देश की पूंजी है| जब बच्चे बड़े होते है तो उनके आदर्श पुरुष उस काल के सफल व्यक्तित्व होता है | माता पिता और प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापक आदर्श के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं | कलाम का मानना है बच्चे के बड़े होने पर राजनीति , विज्ञान प्रौद्योगिकी और उद्योग जगत से जुड़े योग्य तथा विशिष्ट नेता उनके आदर्श बन सकते हैं |

डॉक्टर कलाम का मानना है जीवन में बेहतर स्तर प्राप्त करने के लिए युवकों को अपनी गलतियों से सीखना होगा | उद्देश्यपूर्ण गतिविधियों के जरिए ही विकास के रास्ते पर हम आगे बढ सकते हैं | युवकों को उचित मार्गदर्शन करना ज़रूरी है ताकि उनके जीवन को उपयुक्त दिशा मिल सके इसलिए डॉक्टर कलाम का मानना है कि कुछ शैक्षिक सुधारों को शुरू करना जरूरी है और युवापीढी की मानसिकता में बदलाव भी ज़रूरी है |

1.3.5..भगत सिंह का युवा चितंन

भगत सिंह देश की नई पीढ़ी के आदर्श नेता हैं | युवापीढी आदर्श व्यक्तियों के जीवन में या इतिहास से प्रेरणा लेता है | भगत सशक्त क्रांति के प्रतीक हैं |

स्वामी विवेकानंद 39 वर्ष की उम्र में अपना काम कर गए थे |23 वर्ष की उम्र में भगतसिंह ने अपना नाम समेट लिया है |भगत् सिंह हमेशा स्वतंत्रता आंदोलन की खबर सुनकर आंदोलित होते थे |

1919 में अमृतसर में हुई जालीयनवाला बाग कांड उनके मन को हिला दिया तब भगत सिंह 12 साल के थे | भगत सिंह स्कूल छोड़कर आंदोलन की पहली सीढी पर चढ़ गए | भगत सिंह किसी के साथ किसी भी बात पर बातचीत करने को तथा अपने दृष्टिकोण समझाने को सदा तैयार रहते थे |

भगत सिंह के जीवन को हम परखें तो हर कसौटी पर मोती ही मिलती है इसलिए तो

डॉक्टर सत्यपाल के शब्दों में " मुझे कॉन्ग्रेस और नौजवान भारत सभा में प्रण के पक्के और अटल विश्वास से भरा भगत सिंह के साथ काम करने का मौका मिला है | अपने लंबे सार्वजनिक जीवन में मुझे उन जैसा जोशीला छात्र ,साहसी और समझदार युवक नहीं मिला| वह प्रत्येक कार्य को लगन से करते थे | जनता पर उनके असीम प्रभाव का कारण यह था कि वे स्वार्थी लोग से सदा दूर रहते थे | उनके चरित्र में इतने गुण देखी उन जैसा शालींन और आदरणीय नेता कभी नहीं मिला ''|4 देश की नई पीढ़ी को उनके नाम से नहीं उनके कामों से प्रेरणा लेनी चाहिए |

1.3.6. लोकनायक जयप्रकाश नारायण

जयप्रकाश नारायण मानवता के प्रति पूर्णतया समर्पित थे | वे जीवन भर शिक्षा की तरह सत्य का भी अन्वेषण करते रहे| उन्होंने अंग्रेज़ी हुकूमत वाली शिक्षा ग्रहण न करके कॉलेज छोड़ने का निश्चय किया | वे गांधी जी द्वारा खोले बिहार विद्यापीठ से प्रथम श्रेणी में पास हुए|

जय प्रकाश नारायण का जीवन मानवतावाद को समर्पित युवा वर्ग के लिए उत्तम नमूना है | उन्होंने लोकतंत्र के प्रहरी बन कर सत्ता की राजनीति से अपने आप को अलग रखा | सच्चे अर्थों में जयप्रकाश नारायण लोक नायक नहीं लोग सेवक थे |

भारतीय नेताओं में जय प्रकाश नारायण एक आदर्श माने जा सकते हैं| उनके विचारों का पालन करने

से युवा वर्ग में बदलाव आ सकता है | भारतीय समाज सत्ता लोलुपता ,अपराधीकरण और भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है |

आज नैतिकता का पतन हो रहा है | इसलिए हमारे युवा वर्ग के लिए जयप्रकाश नारायण जैसे जन नेताओं की ज़रूरत है जिनके एक आवास पर लाखों अनुयायी अपना सब कुछ त्याग कर खड़े हो जाए |

जय प्रकाश नारायण को संपूर्ण क्रांति के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की दृष्टि से नवयुवकों से बहुत आशा थी |

1.4. युवा पीढ़ी और मानसिकता

हमारे मस्तिष्क की एक विचार शक्ति का नाम मन है | युवा मन पर अनेक प्रकार के प्रभाव पड़ते हैं | इस पर उनमें परिवर्तन भी आते हैं , पर पैतृक प्रभाव इसमें पहले आते हैं | मानसिक परिपक्वता की अवस्था में युवा किसी भी समस्या पर शांतिपूर्वक विचार करता है |

युवकों के मित्र में अच्छे संस्कार वाले हैं तो उनका चरित्र बदल सकता है और वह आदर्श व्यक्ति बन सकता है | इसके अलावा वंशीय वातावरण का प्रभाव युवकों पर असर डालता है |

संस्कारों के अनुसार मस्तिष्क में विचार उत्पन्न होते हैं | अच्छे संस्कारों से अच्छे और बुरे संस्कारों से बुरे विचार उत्पन्न होते हैं । दुर्भाग्यवश युवकों

की दोस्ती किसी बिगड़े चरित्र वाले व्यक्ति से हो जाए तो उनके चरित्र का पतन हो जाएगा | इसलिए युवकों को हमेशा अच्छी संगति में रहना चाहिए |

आजकल फिल्मों में नग्नता ,मारकाट और सस्ते प्रेम के दृश्यों की भरमार रहती है | इन्हें देख कर युवकों के मन पर भी उसका असर पड़ता है तब हिंसक कार्यों या विलासिता की ओर उनके उन्मुख हो जाने की संभावना है | इसलिए इन सबसे युवकों को सतर्क रहना चाहिए | उन्हें अच्छी शिक्षा का वातावरण मिल जाने पर अनेक कठिनाइयां दूर हो जाती है | इस के लिए प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता पड़ती है |

1.4.1.युवा पीढ़ी को प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता

हमारे भारत ने प्रौढ़ और आजीवन शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ किया है | युवकों के वैयक्तिक स्तर को बढ़ाने में प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता होती है | युवक शिक्षा से अपनी प्रगति करता हुआ समाज को विकसित करने में सक्रिय योगदान देता है |

प्रौढ़ शिक्षा से युवा जीवन की वर्तमान समस्याओं का सम्यक समाधान हम कर सकते हैं | युवापीढी अपनी आवश्यकता की पूर्ति करके समाज के विकास में आगे बढ़ सकती हैं | समाज सुधारकों, मनीषियों एवं शिक्षा शास्त्रियों ने चिंतन एवं मनन करके प्रौढ़ शिक्षा की सार्थकता पर बल दिया है |

भारत सरकार द्वारा नवंबर 1997 में पारित नीति वक्तव्य में प्रवृत्त शिक्षा कार्य ने शोषित , दलित एवं पिछड़े वर्ग को विशेषकर युवा महिलाओं को शिक्षित करने पर विशेष बल दिया है | प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत युवा समूह को साक्षरता की दक्षता देने के साथ ही उनमें जागरुकता बढ़ाने तथा व्यवहारिकता विकसित करने का प्रयास सुनिश्चित रुप से किया गया था | इसमें युवा समूह में कर्तव्यनिष्ठता विकसित करने तथा गरीबों के संगठनों को प्रोत्साहन करने पर जोर दिया गया | परिस्थिति के अनुसार शिक्षा को युवा समूह के जीवन एवं उसकी चेतना से जोड़ना होगा।

1.5.युवा पीढ़ी का सुधार

युवापीढी में सुधार लाने के लिए नीचे दिए गये कार्य आवश्यक हैं ।

1.5.1..जनसंचार और संचार माध्यम

युवकों के लिए सूचना , प्रेरणा तथा सक्रिय योगदान के लिए रेडियो और दूरदर्शन पर नियमित कार्यक्रम प्रसारित है | समाज के प्रभावशाली युवा वर्ग में अनुकूल भावना पैदा करने के लिए समाचार पत्रों का व्यवस्थित उपयोग करना होगा |

1.5.2. ग्राम शिक्षा समिति

युवा शिक्षा कार्यक्रम का आयोजन ग्राम शिक्षा समितियों द्वारा किया जाएगा | युवक, शिक्षक आदि को बड़े पैमाने पर इस में प्रशिक्षण देंगे | नई शिक्षा नीति के

लिए शिक्षक, छात्र , युवक और कलाकार को अपना एक दल बनाकर गाडियों साइक्लों पर घूमना होगा । नेहरु युवा केंद्र, राष्ट्रीय सेवा योजना, अध्यापक एवं छात्र संगठन ,स्वैच्छिक संस्थॉएं और ट्रेड यूनियन आदि इन कार्यक्रम को बढ़ावा देंगे |

1.5.3. युवा प्रशिक्षण और उनके नियोजन

विश्वविद्यालय ,कॉलेज ,ट्रेड यूनियन, नेहरु युवा केंद्र, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान, श्रमिक विद्यापीठ आदि में प्रशिक्षण का काम सौंपा जाएगा | प्रत्येक एजेंसी निश्चित संख्या में युवकों को चुनेगी ,उन्हें लगभग 3 सप्ताह का प्रशिक्षण देगी | मुख्य रूप से युवा , सामाजिक विकास के प्रतिबद्ध और भूतपूर्व सैनिक,

पंचायत के सदस्य और अन्य निष्ठावान व्यक्ति प्रशिक्षणार्थी होंगे |

उसकी जिम्मेदारी नेहरु युवा केंद्र के राष्ट्रीय संगठन और कुछ अन्य प्रमुख संगठन एवं अनुसंधान संस्थान और शैक्षिक संस्थाएओं की होगी | स्वैच्छिक संस्था सुनिश्चित क्षेत्रों में प्रोजेक्ट चलाकर शिक्षा की जिम्मेदारी लेंगे | जन शिक्षण नियम और सत्ता शिक्षा के अन्य कार्यक्रम चलाऐगे | शिक्षकों को और पर्यवेक्ष कों द्वारा प्रशिक्षण आयोजित किया जाएगा | वे श्रव्य ,दृश्य सामग्री बनायेंगे और नए प्रयोग को नए तरीकों से कार्य अनुसंधान करेंगे और वे शैंक्षिक वातावरण बनाने में सहायता करेंगें| राज्य

संस्कार की मध्यस्त संस्थाओं के ज़रिए युवकों को स्वैच्छिक संस्थाओं का पता मिल जाएगा |

1.5.4. व्यवसाय में प्रशिक्षण

युवकों को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार व्यवसाय चुनना है | उसी में सारी बुद्धि और शक्ति लगा देना है |आरम्भ में त्रुटियाँ हो सकती हैं | उनसे हताश न होकर काम को सीखते आगे बढना चाहिए |

1.5.5. नौकरी का प्रशिक्षण

नौकरी के लिए युवकों को योग्यता की आवश्यकता है| नौकरी में योग्यता ही सबसे बड़ी पुंजी है | बहुत से युवकों की असफलता का कारण यही है कि वे योग्यता संपन्न नहीं होते | योग्यता प्राप्त करने का अर्थ केवल शिक्षित होना नहीं है | बेकारों में पढ़े लिखे

की संख्या अधिक है | अर्थ सिद्धि के लिए दो प्रकार की योग्यता आवश्यक है |एक व्यावहारिक योग्यता और दूसरी कार्यदक्षता |

1.6. युवा पीढ़ी और आधुनिकता

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तथा पाश्चात्य प्रकरण ने युवकों को अधिक प्रभावित किया है | मीडिया का प्रभाव युवकों को कुछ हद तक पथभ्रष्ट करता है | लेकिन मीडीया से ज़्यादा लाभ भी मिलता है | इंटरनेट के द्वारा हम किसी भी देश की जानकारी ले सकते हैं | पाठ्यक्रम के साथ साथ इनकी जानकारी युवकों को जीवन में आर्थिक स्तर पर आगे बढ़ाती है |

विकासशील देशों में मीडिया ने युवकों को बदला दिया है | मीडिया के ज़रिए विज्ञान तथा औद्योगिकी ने युवकों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है | आधुनिकीकरण का विकास सबसे ज़्यादा

युवकों पर पड़ता है | उसका समाज पर असर पड़ता है | सूचना प्रौद्योगिकी ने समाज को सभी दिशाओं से प्रभावित किया है | सूचना क्रांति ने विश्व को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है |

मोबाइल फोन व्यक्ति के भौतिक और सामजिक दूरी को कम करता है | वह आपस के संपर्क सूत्र बनाए रखता है | आज मोबाइल से हम हर काम कर सकते हैं | इसका दुरुपयोग भी हम करते हैं | मोबाइल फोन से युवा काम करते हैं | आज मोबाइल लोगों का अंग बन गया है | विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नए अवसरों को ढूँढना तथा उसे प्राप्त करने के लिए लोगों को मोबैल फोन उपकारी है | युवा पीढ़ी कंप्यूटर का उपयोग करती हैं | लगभग हर

शिक्षित युवक कंप्यूटर का प्रयोग करना जानता है | अध्ययन समाचार आदि सभी जानकारियाँ कंप्यूटर के माध्यम से युवकों को मिलती हैं | तकनीकी शिक्षा, चिकित्सा, बैंकिंग आदि के लिए कमप्यूटर की सबसे बड़ी आवश्यकता है |

टेलीविजन और इंटरनेट ने युवा के लिए अनेक मौके दिये हैं | उनकी आईक्यू में काफी बढ़ावा हुआ है | सूचना यंत्र ने उनकी कल्पना शक्ति को कम कर दिया है | इस समस्या से निपटने में युवा असमर्थ हो जाता है | उनके मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है | आज का युवा नशाबंदी में पड़कर इन माध्यमों से आए विज्ञापन पढ़ते हैं और सिगरेट , शराब हेरोइन आदि

नशीली पदार्थो का उपयोग भी करते हैं |देश के युवा वर्ग ने देश को स्वतंत्रता दिलाने में काम किया था | लेकिन अब संस्कृति में बदलाव आने से युवा वर्ग अपने लक्ष्य से भटक गये हैं | आधुनिक यंत्र उपकरणों के प्रयोग से एक ओर विज्ञान में उन्नति है दूसरी और बुद्धि का विनाश हो जाता है | मन में कुंठा प्रबल होती है और लोगों की सोचने की क्षमता भंग होती है |

आधुनिक युवा अपने को सुंदर रूप में प्रदर्शित करने की हर कोशिश करते हैं | फैशन ने युवा पीढ़ी को बहुत अधिक प्रभावित किया है | नए डिज़ाइन के वस्त्रों, गहनों और केश विन्यास आदि

के पीछे वे भागते हैं। फैशन आधुनिक सभ्यता का एक अग बन गया है |

पाश्चात सभ्यता, सिनेमा, दूरदर्शन और इंटरनेट से उन्हें फैशन के नए तरंग मिलते हैं | युवतियाँ फिल्मों की हीरोइन जैसे कपड़े पहनना पसंद करती हैं। बाज़ार अब युवकों को रिझाने के सौंदर्य पदार्थों का मेल है | उनके जीवन की हर एक अवस्था में फैशन अब अनिवार्य हो गया है | उससे छुटकारा संभव नहीं है ।

उपसंहार

युवावस्था का संबंध उत्साह, साहस और उमंग से है | उम्र की इस अवस्था में शरीर संपुष्ट रहता है | नया कुछ कर दिखाने के वे तत्पर हो जाते हैं | युवा वर्ग हमेशा सक्रिय रहना चाहते हैं | लेकिन परिवार और देश से होने वाली उपेक्षा युवा वर्ग को भ्रमित कर देती है | युवा वर्ग की चेतना ,प्रतिभा , गरिमा आदि राष्ट्र के गौरव के विषय हैं |

युवा पीढी राष्ट्र के नेतृत्व करने की और अपने सामर्थ्य और शक्ति से देश की उन्नति करने की दायित्व लेता है | शक्तिशाली युवकों को सही रास्ता दिखाने की जिम्मेदारी बुजुर्ग पीढ़ी और समाज

को है | युवा शक्ति समाज सेवा ,देश का विकास और जगत कल्याण के लिए है |

युवा सिद्धार्थ जवानी में सत्य की खोज के लिए निकले थे और युवावस्था में महान गौतम बुद्ध बने | भारत में शंकराचार्य और विवेकानंद ने युवावस्था में ही अपने दर्शन से युवकों को प्रभावित किया था | भगत सिंह आज़ाद , वीर सावरकर आदि ने भारत के लिए अपना जीवन दान दिया | आर्यभट्ट ने युवावस्था में विज्ञान के क्षेत्र में अपना चमत्कार दिखाया | युवक वर्ग देश और दुनिया के सबसे शुद्ध एवं ऊर्जावान शक्ति रूप हैं | वे देश को विकास की ओर पहुँचा सकते हैं | किसी देश के विकास एवं क्षमता को उस देश के होनहार युवावर्ग से आंका जा सकता है |

आज वैश्वीकरण के इस युग में परिस्थितियाँ बदल चुकी हैं | युवकों को अपनी शक्ति का एहसास हुआ है | वे समाज में सशक्त और उपयोगी भूमिका निभा रहे हैं | युवा सशक्तीकरण का अभियान तभी सार्थक होगा जब उन्हें आर्थिक रूप से स्वावलम्बी,आत्मविश्वासी और अपनी अस्मिता के प्रति सकारात्मक सोच वाला बनाए , वह किसी भी कठिन परिस्थितियों का मुकाबला करने में सक्षम हो जाए और समाज में सरकार द्वारा चलाए जा रहे विकास कार्यों में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित हो सके |

युवकों की सहभागिता के बिना विकास कार्य में वांछित लाभ प्राप्त करना अत्यिंत कठिन है | युवाशक्ति

एक निरंतर बढ़ने वाली प्रक्रिया है। युवकों को सामाजिक स्तर पर स्वाभिमान और सम्मान की भावना को जागृत करना होगा उनको आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना है और अपनी क्षमताओं को पहचान कर आगे बढ़ते रहना है |

सन्दर्भ ग्रंथ

1. स्वामी अरविंद के भाषण से लिए हुए-आजकल – पत्रिका 1999

2. सुबाष चन्द्रबोस के भाषण से लिया हुए-पॉचवॉ स्तंभ-पत्रिका 2000

3. भारत 2020 ; नयी सहस्राब्दी डॉ ए .पी. जे . अब्दुल कलाम पृष्ट ;११२

4. भगत सिंह ; डॉ सत्यपाल पृष्ट ५६

अध्याय- **2**

हिंदी में युवा पीढ़ी पर केंद्रित पूर्ववर्ती उपन्यास -

एक परिचय

हिंदी उपन्यासों में युवा पीढ़ी के चित्रण को विशेष महत्व मिला है | स्वतंत्रता के बाद शैक्षिक परिसर में बदलाव आये | आज़ादी के पूर्व महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में युवकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी | स्वतंत्रता के बाद हम अधिक मानसिक दासता के शिकार हुए | देश में भ्रष्टाचार , गरीबी और शोषण बढ़ते ही गये | टूटते गॉव , टूटते परिवार, बडे होते जाते महानगर , औद्योगीकरण, मशीनीकरण आदि ने अजीब खाई पैदा की है |

दिशाहीन युवा वर्ग बेचैन , चेतना शून्य और लक्ष्यहीन होते जा रहे थे | आज़ादी के बाद भ्रष्टाचार ने नव धनिक वर्गों को जन्म दिया | संपत्ति बढ़ती गयी लेकिन संस्कारों का अभाव भी बढ़ता गया | पश्चिम की भौतिकवादी सभ्यता

तथा चिंतन ने युवकों को निस्सहाय एवं अजनबी बना दिया | विगत दो युद्धों की विभीषिका ने उनकी आस्था को झकझोर कर डाला | युवक नितांत आत्मकेंद्रित एवं भौतिक होता गया | मानवीय प्रेम के स्थान पर चीज़ लगाव बढ़ रहा है |

बढ़ते हुए दिशाहीन शिक्षा पद्धति ने बेरोज़गारी को बढ़ावा दिया साथ ही नवीन सामाजिक समस्याओं को भी जन्म दिया | स्त्री शोषण का एक नया आयाम अशिक्षित , अविवाहित और निस्सहाय लड़कियों के रूप में सामने आया | उनकी कुंठा , एकाकीपन और अन्य समस्याओं के कारण उनका जीवन एक ट्रजडी बन गया | राजनीति, समाज ,धर्म ,शिक्षा आदि सभी क्षेत्रों में युवा वर्ग समस्याओं से बुरी तरह ग्रस्त एवं आक्रांत रहे |

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में गोबर ,मनोहर ,बलराज , अमरकांत आदि पात्रों द्वारा युवा पीढ़ी का चित्रण किया है | गोदान के प्रमुख पात्र के चरित्रांकन में युवा चेतना का प्रारंभिक अंश हम निर्धारित कर सकते हैं | गोबर नई पीढ़ी का प्रतिनिधि है | अपना भाग्य खुद बनाने में उसे विश्वास है | उसकी वाणी युवक की भावना की वाणी है | उसकी वाणी में युवा सशक्तीकरण का आरंभ हम ढूंढ सकते हैं | गोदान में अपने पिता होरी का बार-बार ज़मींदार राय साहेब के यहॉ जाना गोबर को अच्छा नहीं लगता |उसका विद्रोही तथा स्वाभिमानी मन यही सोचता है कि जब हम लगान पूरा देते हैं तो उनकी खुशामत क्यों करें | यह विद्रोही स्वर पूरे भारतीय नवयुवक किसानों का प्रतिनिधित्व करता है | जमींदारों के शोषण से नवयुवक किसानों का खून खौलने लगता है |

प्रेमाश्रम का ' बलराज' एक संघर्षशील युवा किसान है | उसमें नवीन चेतना का विकस हो रहा है | कर्मभूमि का 'अमरकांत 'भी युवा पात्र का प्रतिनिधित्व करता है | उपन्यास का मुख्य पात्र अमरकांत गांधीवादी आदर्श का समर्थक और समाजसेवी युवा है | उसकी आदर्शवादिता और मानववादी दृष्टिकोण यथार्थवादी दिखाई पड़ता है | प्रेमचंद का अंतिम और अधूरा उपन्यास भी युवा वर्ग से संबंधित है | धनोपार्जन में असफल निकलने वाले एक आदर्शवादी साहित्यकार और उसकी नई पीढ़ी के जवान बेटे के आपसी संघर्ष को चित्रित करने का उपक्रम इसमें किया गया है | इस तरह मुंशी प्रेमचंद की औपन्यासिक रचनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय मध्यवर्ग के युवा जीवन का चित्रण उन्होंने असाधारण सफलता के साथ किया है |

हिंदी उपन्यासों में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की सर्वाधिक चर्चा हुई है | इसमें जैनेंद्र कुमार , इलाचंद्र जोशी , अज्ञेय आदि चिर प्रतिष्ठित हैं | जैनेंद्र के 'परख 'का मुख्य पात्र सत्यधन एक आदर्शवादी युवक है | सत्यधन का मिथ्याभिमान और उसकी कुंठा युवा संघर्ष को विकट रूप देती है | 'त्यागपत्र' का मृणाल हिंदी उपन्यास जगत की अमर नायिकोओं में एक है | मृणाल का भतीजा प्रमोद भी मानसिक अवसाद से आत्मापीडन के मार्ग को अपनाता है और वह जीवन से पलायन करता है |' व्यतीत' उपन्यास का नायक जयंत युवक एवं प्रतिभाशाली है | आधुनिक सभ्यता की विकट परिस्थितियों में युवा वर्ग का जीवन किस तरह निष्प्राण और नीरस हो जाता है , एकाकीपन तथा व्यर्थताबोध से एक शिक्षित बुद्धिजीवी युवक का मन किस तरह टूट जाता है

इसकी एक अभिव्यक्ति है प्रस्तुत उपन्यास। जैंनेन्द्र बाहर के नहीं मनुष्य के अंदर मन के कलाकार हैं |

इलाचंद्र जोशी के प्रथम उपन्यास 'घृणामयी' में एक युवती के असाधारण स्वभाव का मनोवैज्ञानिक चित्रण है | ' सन्यासी ' में'नंदकिशोर' नामक एक युवक स्त्रियों से प्रणय करता है किंतु अपनी अतिभावुकता एवं हीनता ग्रंथि के कारण उसका जीवन अतृप्त रह जाता है | आखिर वह सन्यासी बनकर राजनीति में प्रवेश करता है | 'निर्वासित' उपन्यास द्वितीय विश्वयुद्धकालीन राजनीतिक उथल पुथल के मध्य रुग्ण हो जाने वाली भारतीय युवा पीढ़ी की मानसिक स्थिति का आकलन है |इसमें महीप सिंह एम .ए. तक पढ़ा युवक है | अपने चंचल स्वभाव के कारण

प्रणय , क्रांति या अन्य वैयक्तिक मामलों में निर्णय लेने में वह असमर्थ होता है |

जोशी जी की बहुचर्चित रचना है 'जहाज का पंछी' | इसमें एक अभावग्रस्त शिक्षित युवा की आत्मकथा मनोवैज्ञानिक सिद्धांत की रोशनी में कही गई है | आर्थिक और सामाजिक विषम परिस्थितियों के मध्य भी आम युवा दृढ़चित्त और संघर्षरत है और आगे बढ़ने के लिए प्रयत्न भी करता है | महत्वाकांक्षी होने पर भी साधनाभाव के कारण पूंजीवादी सभ्यता की अमानवीय परिस्थितियों में कई उच्च शिक्षित युवा लोग कुंठित रह जाते हैं | ऐसे युवकों की मानसिक ग्रंथियों का विश्लेषण जोशी जी का विषय है |

अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' उपन्यास दो भागों में प्रकाशित हुआ है | शेखर के स्वभाव में विद्रोही वृत्ति के

साथ नियंत्रित कामवासना भी है | आधुनिक युग में युवा किस तरह एक दूसरे से कटे हुए एकाकी बना रहता है इसका उदाहरण 'नदी के दीप ' उपन्यास में चित्रित है | इसका नायक भुवन है |अज्ञेय का 'अपने अपने अजनबी' में व्यक्तित्ववादि युवा पीढ़ी का चित्रण हुआ है | इस तरह अज्ञेय जी के तीनों उपन्यासों में मध्य वर्ग की शिक्षित युवा पीढ़ी का व्यक्तिनिष्ठ दृष्टिकोण अभिव्यक्त हुआ है | युवा पीढ़ी की स्वतंत्रता और आत्म विकास ही उसके लिए काम्य होता है |

स्वातंत्रोत्तर हिंदी उपन्यास साहित्य में आंचलिक उपन्यास का विशेष स्थान है | फणीश्वर नाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' में प्रथम बार 'आंचलिक उपन्यास' शब्द का प्रयोग हुआ है | इस उपन्यास में रेणु जी ने

पूर्णिया जिले के ' मेरीगंज' गांव का अत्याकर्षक वर्णन किया है | इसमें 'प्रशांत ' नामक एक युवा डॉक्टर का चित्रण हुआ है | इसमें पुरानी पीढ़ी के विरुद्ध घुटने वाली नई पीढ़ी का चित्रिण है | देश का भविष्य नव जागृत नई पीढ़ी के हाथों में सुरक्षित है |

भगवती चरण वर्मा के ' चित्रलेखा' उपन्यास में भी युवा पीढ़ी का चित्रण मिलता है | 'तीन वर्ष' नामक उपन्यास में रमेश नामक महत्वाकांक्षी युवा मुख्य पात्र है | वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर में तीन वर्ष रहता है | इस दौरान कुछ अप्रत्याशित घटना उसके जीवन में घटती है जिनके प्रभाव से उसका जीवन बदलता है | 'भूले बिसरे चित्र' में भगवतीचरण वर्मा ने 'नवल किशोर' को चौथी पीढ़ी के नवयुवक के रूप में चित्रत किया है | भारत का भविष्य

नवल जैसे देश प्रेमी और दृढ़ संकल्प वाले युवा लोगों के हाथ में सुरक्षित है | यह आशावादी दृष्टिकोण उपन्यास के आखिरी भाग में मुखरित है |

स्वतंत्रता दशक में कॉग्रेसी सरकार की अनिच्छा के बावजूद विश्वविद्यालय परिसर में छात्रों की राजनीतिक गतिविधियॉ कुछ तेज़ हुईं | छात्र संघों की मॉग ज़ोर पकड़ने लगी | यह छात्रों की अपने अधिकारों के प्रति जागरुकता तथा राजनीतिक चेतना का परिचायक थी | सन् साठ के बाद के हिंदी उपन्यासों में युवा पीढ़ी की समस्याओं को हम विशेष रूप से देख सकते हैं |

आधुनिक जीवन की विभीषिकाओं को साठोत्तरी रचनाकारों ने वैयक्तिक स्तर पर भोगा है | उसे निरपेक्षता एवं निर्ममता के साथ अपने उपन्यासों में अंकित किया है | मानव संबंधों

में भी इस काल में एक विशिष्ट बदलाव आया है | उपन्यासों में ग्राम नगर तथा महानगर के युवकों का चित्रण है | ये मुद्राएँ निम्न - मध्यवर्गीय समाज के युवा में आर्थिक संघर्ष के स्तर पर किए जा रहे संघर्ष की पृष्ठभूमि में उभरी हैं | इसमें शिक्षित आधुनिक नारी के संबंधों का एक टूटता बनता और बिखरता संसार है | साठोत्तरी उपन्यासों की भूमिका के परिप्रेक्ष्य में कुछ विशिष्ट उपन्यासों का अनुशीलन नीचे दिया गया है।

2.1. युवा पीढ़ी को केंद्र बनाकर लिखे गए उपन्यास

2.1.1. अमृत और विष – अमृत लाल नागर

नागर जी के उपन्यास में युवा पीढ़ी के ह्रदय में अवस्थित आग को समझने -समझाने का प्रयास किया गया है |यह सामायिक भारत के तरुण वर्ग के बाह्य और आंतरिक संघर्ष की कथा है | यह पहला उपन्यास है जिसमें युवकों की शक्ति को साहित्यिक स्तर पर स्वीकार किया गया है | अरविंद शंकर पद्मनाभ नामक प्रकाशक से डेढ वर्ष पूर्व दो हज़ार रुपया उपन्यास लिखने के लिए अग्रिम रुप में लेते हैं किंतु लिख नहीं पाते | षष्ठि पूर्ति समारोह के समय प्रकाशक के भय से उपन्यास लिखने बैठते हैं | यह उपन्यास वर्तमान युवा आंदोलन से संबंधित है | इसमें नई पुरानी पीढ़ी के संघर्ष में परंपरागत मूल्यों का विघटन तथा नई पीढ़ी का दृष्टिकोण चित्रित है | इसमें युवा वर्ग परंपराओं को तोड़ता हुआ सहयोग की दीवार खड़ी करने का प्रयास करते हैं | डॉक्टर कुंवरपाल सिंह के शब्दों में - " पैसे के

बल पर खरीदी हुई पक्षधरता के साथ पूंजीपति वर्ग को टकराता हुआ अल्हाट, अकेला आवेशपूरित और सत्याकांशी नौजवान वर्ग इस दूसरी कथावस्तु का जीवन प्राण है , जिसने उपन्यास को सार्थकता प्रदान की है |''1

इसमें लेखक ने युवा दिशाहारा वर्ग की कुंठाओं को प्रस्तुत किया है | लछु अधुनिक भारत का नवयुवक है | वह आगे बढ़ने की इच्छा से चलता है | लछु की कुंढा लछु की ही नहीं संपूर्ण भारत की है | उसे देखकर आत्माराम कहते हैं - '' उनके सामने कुंठित नौजवान भारत बैठा था जो बेकार है , दरिद्रता से नफरत करता है | उन्नतशील जीवन चाहता है और ना मिलने पर अपने कुंठित आत्म सम्मान के लिए क्षुद्र और स्वार्थी हो जाता है | वे भी अपराधी नहीं , विकृत विद्रोही भर है |''2 प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने

संवेदना की आग में तपकर बोलते जीते हुए युवा वर्ग के आक्रोश को अंकित किया है | यह अकंन इतना सशक्त और समीचीन है कि उसके साथ अन्य विशेषताओं का प्रकाश नहीं के बराबर है |

2.1.2.रुकोगी नहीं राधिका –उषा प्रियंवदा

यह एक आधुनिक नारी के संघर्ष की कथा है | उपन्यास का शीर्षक उसके केंद्रीय पात्र राधिका के जीवन में होने वाली घटना से संबंधित है | बचपन में उसकी माता की मृत्यु होती है | पिता की देख रेख में वह किशोरावस्था पार करती है | अपने पिता के प्रति उसका अधिक लगाव है | परंपरागत संस्कारों से मुक्त न हो सकने के कारण आधुनिक नारी को किस प्रकार संघर्ष का सामना करना पड़ता है इसका चित्रण उपन्यास में हुआ है |

पिता के दूसरा विवाह कर लेने पर राधिका उनसे प्रतिशोध करती है | इसके लिए वह विदेशी पत्रकार डेनियल पीटरसन के साथ विदेश चली जाती है | फिर उसे छोड़कर भटकती है और स्वदेश लौट आती है | डेनियल अपनी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहता है - ''राधिका तुम मुझ में अपना पिता ढूंढ रही थी | वही पिता जिससे त्रास देने के लिए तुम मेरे साथ चली आई थी | पर मैंने तुम्हारे पिता की जगह स्थापित होना नहीं चाहा | तुम तो सुंदर दिखती हूँ , मैं तुममें अपना खोया यौवन ढूंढ रहा था | अपनी पत्नी को छोड़कर चले जाने की कड़वाहट धोना चाहता था | पर शायद हम दोनों ही सफल नहीं हुए '' 3| यह उपन्यास एक ऐसी युवती की कथा है जो कलचर शौक झेल नहीं पाती |

इसमें परंपरागत नारी मूल्य और आधुनिक पश्चिमी संस्कारों के बीच संघर्ष करते व्यक्ति का चित्रण है | स्वतंत्र रूप में जीने वाली राधिका स्वतंत्रता के चक्कर में अपने आप को भड़कती युवती के रूप में मानती है | शराब पीने में भी राधिका किसी नैतिक संकट का अनुभव नहीं करती |आज भी हम ऐसी युवतियों को देख सकते हैं | वह अपने पिता से दूर चली जाती है | अनेक प्रश्नों के बीच निरंतर मुक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो रही आधुनिक युवती की कथा कहना ही उषा प्रियंवदा का लक्ष्य है |

2.1.3. सुबह के अंधेरे पथ पर- सुरेश सिन्हा

इस उपन्यास में दो पीढ़ियों के बीच के मूल्यों के संघर्ष की कथा है| इसकी पृष्ठभूमि में व्यापक भ्रष्टाचार , नेताओं का नैतिक पतन , पूरे समाज में व्याप्त नैतिक गिरावट ,युवा

पीढ़ी में फैली बेकारी आदि का चित्रण है | इसमें लेखक ने पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष को चित्रित किया है | नई पीढ़ी के पैरों में ताकत नहीं है | उनके सामने कोई दिशा और लक्ष्य नहीं है | इस कारण उसका विद्रोह घिनौना रूप अख्तियार कर लेता है |

परमात्मा बाबू पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है | उसमें पुराने मूल्य जुडे हैं लेकिन नए मूल्यों का विरोध भी नहीं करता | वह नई पीढ़ी को देख कर दु:खी होता है क्योंकि उसमें दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास की कमी है | नई पीढ़ी अपनी जिम्मेदारियों के प्रति असावधान है |

राजू नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है | उसने अपने परिवेश को अच्छी तरह समझा है | वह सोचता है -" यूनिवर्सिटी एक कारखाने की तरह है | जहॉ हमें निश्चित

ढॉचे में डाला जा रहा था | वहॉ हमारे व्यक्तित्व का नहीं कोर्स का महत्व है। यूनिवर्सिटी बंद हुई और खुली इसमें कोई अंतर नहीं पड़ा |अजब समस्या थी | पढ़ने में मन लगाना चाहता था | पर लग नहीं पाता था | ऐसा क्यों है | किसी की भी दिशा स्पष्ट नहीं कोई संकल्प और आस्था नहीं, मन से अशांत और तन से अस्वस्थ लोग , मुझे भय होता था | क्या हमेशा ऐसा ही बना रहेगा | क्या इस व्यवस्था में परिवर्तन नहीं होगा |"4 यह स्थिति स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की है | आज के युवावर्ग अंधेरे में चीख सकते हैं पर संघर्ष नहीं कर सकते |

हमारी शिक्षा नीति ,राजनीतिक पद्धति और आर्थिक व्यवस्था सब मिलकर युवा पीढ़ी को कुंडाग्रस्त, पराजित और नपुंसक बनाने में तत्पर है | राजु अपने अस्तित्व के

प्रति पूर्ण सचेत है | वह समाज की परंपरागत मान्यताओं को बदलना चाहता है| उसका सोचना है कि आदमी चाहे तो क्या नहीं कर सकता ? वह जिंदगी का रुख बदल सकता है , अभाव और घुटन भरी परिस्थितियों में भी ऊपर उठ सकता है , आधुनिक बिखराव में उसका जीवन टूटेगा नहीं , उसके अंधेरे पथ पर अवश्य सुबह होगी |

2.1.4. राग दरबारी –श्रीलाल शुक्ल

राग दरबारी के केंद्र में शिवापाल गंज नामक गॉव है | उपन्यास में रंगनाथ बुद्धिजीवी भारत का प्रतिनिधि है | इसमें वैध्यजी ऐसे नेता है जिनके कुर्सी से चिपक के रहने के कारण नवयुवकों में अकर्मण्यता होती है | उस पर व्यंग्य करते लेखक कहते हैं - “वास्तव में इन पदों पर युवक काम नहीं करना चाहते थे | क्योंकि उन्हें पदों का लालच

न था और वहां जितने नवयुवक थे ,वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे | इसलिए उन्हें बूढापे में इन पदों को संभालना पड़ता था |" 5

देश की भ्रष्ट और दिशाहीन राजनीति से संभ्रमित बुद्धिजीवी युवा किस प्रकार उदासीन होता है इसका चित्रण लेखक ने रंगनाथ के माध्यम से किया है | रंगनाथ इतिहास विभाग में शोधार्थी है | स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण गॉव की खुली हवा खाकर तंदुरुस्त होने के लिए वह शहर से गांव आता है |

वह शहर के वातावरण से ऊब गया था | लेकिन गॉव में भी उसे सुख नहीं मिलता | गॉव के सभी क्षेत्रों में फैला हुआ भ्रष्टाचार उसे और ऊबा देता है | रंगनाथ की बेचैनी और उसके आक्रोश को लेखक आजकल हिंदुस्तान के पढे

लिखे युवको में फैली हुई मानसिक बीमारी कहते हैं | इस बीमारी में मरीज मानसिक तनाव और निराशावाद में बहस करता है |चुनाव में भी वैध्यजी अपने विरोधी दल वालों को नाकेबंदी करते हैं और चुनाव जीतते हैं |

शिवपाल गंज में रंगनाद को कोई बुद्धिजीवी युवक नहीं मिलता जिससे अन्याय के प्रति आक्रोश कर सकें | अंत में वह अपनी इस मानसिक व्यथा को रुप्पन के सामने व्यक्त करता है | लेकिन रुप्पन इस अन्याय को स्वाभाविक रूप से मान भी लेता है और वह कहता है - " पॉलिटिक्स में कमीनापन स्वभाविक है | ''6 रंगनाथ के स्वास्थ्य का सुधार तो होता है पर मस्तिष्क दूषित हो जाता है। वह शहर से पहले ही नफरत करता था लेकिन गॉव से भी अब नफरत करने लगता है इसलिए वह गांव से चले जाने की

बात करता है | इस तरह अपनी व्यंग्यात्मक शैली के कारण ' राग दरबारी' का स्थान विगत दशक के उपन्यासों में महत्वपूर्ण रहेगा |

2.1.5. कंदील और कुहासे -गिरिधर गोपाल

कंदील और कुहासे उपन्यास में कॉलेज की वास्तविक स्थिति का चित्रण हुआ है | यह चित्रण पूरे भारतीय विश्वविद्यालयों की दयनीय स्थिति को उजागर करने में समर्थ है | लेखक ने किशु के माध्यम से छात्र असंतोष एवं समस्याओं को बड़ी बारीकी से उभारा है | यह एक पूरी पीढ़ी के सपनों और आकांक्षाओं के ध्वस्त हो जाने की कहानी है |

लखनऊ कॉलेज का दूषित वातावरण देखकर किशु सोचता है -''न जाने कहां से कितनी दूर से किन किन

परिस्थितियों से गुज़र कर सपने लेकर लड़के कॉलेज में आते हैं | लेकिन उन्हें बड़ा धक्का लगता है ,जब वे देखते हैं रोज किसी न किसी बहाने से छुट्टी हुआ करती है | किसी नेता का जन्मदिन हो या मरण दिन या कभी नेता भाषण देने आते हैं , तो हड़ताल कर देते हैं |''7

युवक नौकरी की असफल तलाश की कुंठा और निराशावाद का शिकार बनता है | पूरे उपन्यास में एक तरह से पूरे देश की आज़ादी के बाद 22 के वर्षों के यथार्थ का मार्मिक चित्रण है । इसमें भारत के निराशा भरी युवकों के संघर्ष का चित्रण मिलता है |

किशु के युवा मित्रों का जीवन भी टूटे सपनों की कहानी है | मधुकर को एम. ए. करके भी स्टेशनरी की दुकान खोलना पड़ता है | रमापति एक प्रकाशक के शोषण

का शिकार होता है | सुरेंद्र पिता के प्राविडन फंड से 2000 रुपए लेकर अफसरों को दावत देता है | यह पूरी पीढ़ी के असफल संघर्ष की कहानी है | इसमें युवा लोग निराश होकर कभी गलत काम करने में कोई कसर नहीं छोड़ते |

डिग्री प्राप्त होने पर भी अशोक को नौकरी नहीं मिलती | वह पूरी ईमानदारी से काम करना चाहता था लेकिन आज़ादी के इक्कीस वर्षों के बाद भी उसे नौकरी नहीं मिली | अंत में किशु की मौत दिखाकर लेखक ने आज के शिक्षित बेरोज़गार नौजवानों के भविष्य का वास्तविक चित्रण पाठकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है |

2.1.6. जाने कितनी आँखें - राजेंद्र अवस्थी

यह उपन्यास बुंदेलखंड क्षेत्र के ग्रामीण जीवन के युवकों पर आधारित है | बदरी प्रसाद भ्रष्टाचार पूर्ण सरकारी नीति के कारण भडके युवा अध्यापक है | वह इतना प्रभावशाली था कि सभी गाँववाले अपनी समस्याएँ लेकर उसके पास आते हैं | स्कूल के लड़के बदरी प्रसाद से बेहद प्यार करते थे |अच्छी तरह पढ़ाने के साथ साथ वह बच्चों को सज़ा भी दिया करता था | इसी वजह से बदरी प्रसाद का रिज़ल्ट सारे जिले में सबसे अच्छा रहता था |

बदरी प्रसाद दारोगाजी की लड़कियों के ट्रूय्टर है | दारोगा की बेगम उस पर बेहद खुश है | अनुशासनहीनता के कारण एक बार दारोगा की बेटियों को वह सज़ा देता है | बेटियों को मारने की खबर सुनकर दारोगा उस पर गुस्सा

करता है और उसे जेल में बंद करने की धमकी देता है | पूछताछ में बद्री प्रसाद ने विनम्र शब्दों में कहा -" मैंने दारोगा साहब की उन दो लड़कियों को सज़ा दी जो न स्वयं नटखट कर रही थी बल्कि सारी क्लास को परेशानी में डाल रही थी |"7 स्कूल के कई लड़कों को वह सजा देता था लेकिन कोई उसके खिलाफ नहीं आया था | उपन्यास द्वारा लेखक यही दर्शाना चाहते हैं कि पहले समाज में अध्यापक को सम्माननीय पद प्राप्त था | लेकिन अब इसका अभाव है |

2.1. 7. एक करोड़ की बोतल - कृशन चंदर

यह निम्न मध्यवर्गीय युवा पीढ़ी का मनोवैज्ञानिक दस्तावेज है |इसे कृशन चंदर ने एक फैंटेसी के सहारे प्रस्तुत किया है | इंदु और रंजीत एक दूसरे से प्रेम करते थे | वे अपनी समस्याओं को एक समुद्र के किनारे पर

बैठकर एक दूसरे को बताते थे | उन्हें एक दिन समुद्र में एक बोतल दिखाई देता है | इसके संबंध में वे कल्पना करते हैं |

आज की युवा पीढ़ी जैसे दिवास्वप्न में आकर अपना बना बनाया जीवन नष्ट कर देती हैं इसका उदाहरण इस उपन्यास में मिलता है | रंजीत द्वारा समुद्र से बोतल मिलना और उस बोतल में सर बोमन नामक सेठ के एक करोड का वसीयतनामा मिलना कल्पना की बात है | बाद में दोनों की मृत्यु भी होती है | ये सारी घटनाएं युवा पीढ़ी के अतृप्त अचेतन मानस के विविध रूप हैं | आज के युवावर्ग वस्तुगत जगत में परितृप्ति न पाकर दिवा स्वप्नों में डूब जाते हैं | इसमें अभावग्रस्त , कुंठित और कल्पनाजीवी युवकों के संवेदनशील मानस को उजागर किया गया है |

2.1.8. अधिकार का प्रश्न- भगवती प्रसाद वाजपेयी

इस उपन्यास में लेखक ने परिवार में चल रहे युवा पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण किया है | हर नई पीढ़ी का युवक पितृ पीढ़ी की अधिकार -भावना से असंतुष्ट है | आज की पीढ़ी की सबसे बड़ी समस्या यह है कि वह अधिकारों के उपभोग पर ध्यान अधिक देती है | उनमें मानवीय कर्तव्य भावना का ज्ञान बहुत कम है |

उपन्यास का नायक उपेंद्र स्वतंत्र व्यक्तित्व रखने वाला युवक है | पिता के अधिकार को वह सहन नहीं पाता | पिता उसकी शादी मंजू के साथ परंपरागत ढंग से करना चाहता है लेकिन उपेंद्र अभी शादी नहीं करना चाहता | शिक्षा पूरी हो जाने के बाद वह गृहस्थ बनना चाहता था | पिता उसकी इच्छा के विपरीत उसकी शादी मंजु से करा

देता है | शादी के बाद उपेंद्र घर में मुख्य रूप से अपनी पत्नी के विषय में एक स्वतंत्र अधिकार चाहता है|

सामाजिक जीवन में मूल्यों में होने वाले परिवर्तन के अनुसार उपेंद्र व्यक्ति स्वातंत्र्य की ओर उन्मुख है | लेकिन घरवाले उसे गलत समझते हैं | इससे उपेंद्र और परिवार के बीच तनाव बढ़ जाता है | परंपरागत संयुक्त परिवार के लोग प्यार और कर्तव्य को अधिकार से अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं | लेकिन उपेंद्र कर्तव्य से पहले अधिकार की बात सोचता है | इसलिए वह घर से कटने लगता है | मंजु का लड़का देवेंद्र आई ए एस अफसर बन जाता है लेकिन वह अपने पिता से भी अधिक व्यक्तिवादी बन जाता है | उपेंद्र अपने पुत्र के इस प्रकार के व्यवहार से बहुत दुखी होता है |

2.1.9. किशोर- प्रभाकर माचवे

इस उपन्यास में छात्र वर्ग में फैले असंतोष एवं समस्याएँ हैं | छात्र आंदोलन के साथ युवा मन में गाँधी दर्शन के प्रति व्याप्त असंतोष को भी इस में लेखक ने चित्रत किया है | युवा वर्ग देश की सच्ची तस्वीर है | उसमें देश का सामाजिक, राजनीतिक , आर्थिक ,सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का रूप दिखाई पडता है | इस उपन्यास का नायक किशोर एक गरीब लड़का है | सौतेली माँ के अत्याचार एवं कडु व्यवहार झेलना उसकी विडंबना है | उसमें आज के समाज की व्यवस्था के प्रति घृणा है |

किशोर अपने मित्रों के बहकावे में आकर बस जला देता है | बाद में पुलिस द्वारा गिरफ्तार भी हो जाता है |कुंठा एवं आक्रोश के कारण दिशाहीन किशोर आज के दिग् भ्रमित युवकों का प्रतिनिधि है | इसमें लेखक ने समकालीन

समस्याओं में से छात्र समस्याओं को उठाकर उसे सहानुभूति पूर्वक ढंग से चित्रित किया है | युवकों में व्याप्त जोश ,आक्रोश , उत्साह आदि का चित्रण भी किया है |

युवकों में क्षणिक आवेश में अर्थ का अनर्थ हो जाता है | इसलिए युवकों को होश की अपेक्षा जोश का ध्यान अधिक होना चाहिए |

2.1.10. हरियाली और कांटे- शंकर पूणतांबेकर

हरियाली और कांटे आदर्शवादी युवकों की कहानी है | गाँधी दर्शन के प्रति व्याप्त असंतोष को इसमें लेखक ने दर्शाया है । युवा पीढ़ी निस्वार्थ भाव से समाज की सेवा करती हैं | रवींद्र डॉक्टरी के बाद गांव में सेवा करना चाहता है | इसके लिए वह कॉलेज में एक सेवा समिति की स्थापना भी करता है | पढ़ाई के बाद वह अपने आदर्शों को कार्य रूप

में लाता है | उसकी सहायता के लिए मित्र सुरेश भी आ जाता है |

देवेंद्र का दोस्त किशोर अध्यापक है | वह गॉव के युवकों को पढ़ाना चाहता है लेकिन गांव के जमींदार के डर से कोई युवक उसके पास नहीं आते | इसी बीच सुरेश की मृत्यु होती है | तब देवेंद्र और किशोर दु:खी बन जाते हैं | गांव के एक गरीब ब्राह्मण है हरिकिशन | उसकी बेटी सोना बाल विधवा है | पुनर्नविवाह करने के लिए देवेंद्र और उसके दोस्त सोना को प्रोत्साहन देते हैं | जमींदार के मुनीम का बेटा जयसिंह विलासी युवक है | उसकी नज़र सोना पर पड़ती है | अंत में मुरलीधर हत्यारा बन जाता है और जमींदार किसान की सहायता करते हैं | यह कहानी स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की कहानी है | आज देश की

परिस्थितियाँ बदल गई हैं | जो भी हो हमारे गांव में देवेंद्र , सुरेश और किशोर जैसे नवयुवकों की आवश्यकता है |ऐसे ही युवक और युवतियों द्वारा देश का उद्धार हो सकता है |

2.1.11. अंतराल **-**मोहन राकेश

यह मोहन राकेश का हिंदी में लिखित उपन्यास है | कुमार और श्यामा इसके प्रमुख पात्र हैं | इस उपन्यास में युवा पीढ़ी के नामहीन संबंधों का चित्रण है | इसमें श्यामा और कुमार के माध्यम से जीवन से कटे हुए युवकों का चित्रण मिलता है | श्यामा अपने पतिदेव के मरने के बाद अतीत में रहती है | ननद सीमा के साथ वह सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाती | सीमा एक स्वतंत्र रूप से जीने वाली औरत है। कुमार अपनी पत्नी से तलाक चाहता है |

उपन्यास में बंबई की यांत्रिक जिंदगी का चित्रण मिलता है और महानगरीय भावबोध भी उभरता है | यह एक स्त्री श्यामा और पुरुष कुमार के बीच नामहीन संबंधों की कहानी है | इसमें दोनों की शारीरिक और मानसिक व्यथा का चित्रण मिलता है | महानगरीय जीवन में संत्रास और घुटनेवाले युवकों का सच्चा चित्र इस में मिलता है |

2.1.12. परिंदे -श्रवण कुमार वर्मा

यह स्वतंत्र भारत की भ्रष्ट व्यवस्था में पिसती हुई दिशाहीन युवा पीढ़ी की कहानी है | नायक सागर है | वह भ्रष्ट राजनीतिक व्यवस्था से समझौता न कर पाने वाला युवक है | उपन्यास की भूमिका में लेखक लिखते हैं कि - ''परिंदे सिर्फ एक निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी नहीं | यह परिवार से ठोकर होते हुए युवक सागर की

कहानी है |''9 यह अपने चारों ओर भ्रष्टाचार और रुष्ट राजनीति देखकर बिखरने वाले युवक की कहानी है | इस भ्रष्टाचार का मूर्त रूप है सागर का दोस्त जगन | इसमें भ्रष्ट व्यवस्था के कारण युवतियों को वेश्यावृत्ति स्वीकार करनी पड़ती है और उसे वे पाप नहीं समझतीं | परिंदे ऐसी युवतियों की भी कहानी है|

2.1.13.अपना मोर्चा- काशीनाथ सिंह

कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाली युवा पीढ़ी अपने असंतोष , आक्रोश , दुख- र्दद और अकेलापन के कारण मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ लड़ रही है ।

इसी वर्तमान युवा विद्रोह तथा छात्र आंदोलन को विश्वविद्यालय के विशेष संदर्भ में रखकर काशीनाथ सिंह ने एक नई वस्तुस्थिति को सामने लाने का प्रयास किया है |

यह काशीनाथ सिंह का युवा आंदोलन पर लिखा गया पहला और प्रामाणिक उपन्यास है | संपूर्ण उत्तर भारत में होने वाले आंदोलन का नेतृत्व उत्तर प्रदेश के छात्र नेताओं ने किया | इस घटना को ही अपना मोर्चा की ज़मीन के रुप में लेखक ने अपनाया है |

विश्वविद्यालयों में पढ़ने वाले छात्रों के प्रति लोगों की आम धारणा है कि वे आवारा , मूर्ख , लफंगे और कामचोर हैं | लेखक ने ज्वान नामक एक पात्र के माध्यम से इसका चित्रण किया है | छात्र अपने अच्छे भविष्य के लिए तथा समाज में फैले अत्याचार , गरीबी और भूख जैसी अपनी समस्याओं का समाधान ढूंढने में व्यस्त हैं | छात्रों का नेतृत्व कुछ चालाक नेताओं के हाथ में है | ये लोग अपनी सुविधा के लिए आंदोलन करते हैं | नेताओं के निर्देश पर

भाषा आंदोलन हुआ | सरकार और भाषा के विरुद्ध छात्रों द्वारा विशाल जुलूस निकाला गया |

छात्रों को भडकाकर नेता लोग अलग हो गये | छात्र पुलिस का शिकार हुए | युवाजनों के आक्रोश का लक्ष्य अब भाषा नहीं ,आंदोलन बिखर गया | ऐसी स्थिति में राजू नामक एक गरीब युवक उनके सामने आता है इस बार उनका आंदोलन पिछली बार की तरह नहीं एक निश्चित योजना के अनुसार चलता है | आंदोलन में उन्हें अन्य लोगों की सहायता भी मिलती है | फलस्वरूप दूसरी बार आंदोलन सफल होता है |

‘ अपना मोर्चा ’ में युवा पीढ़ी बुजुर्ग लोगों से पद प्रदर्शन की मांग करती हैं | आंदोलन के सही रूप, लक्ष्य और दिशा का निर्देश करते हुए ज्वान कहता है - ‘‘अकेले

लड़ेंगे तो मारे जाएंगे | इसलिए ऐसी लड़ाई के लिए जरूरी है कि जो सवाल चुने वह सिर्फ तुम्हारा ना हो , वह तुम्हारे शरीर की भीतरी पीड़ा से परिचित हो |"10

आधुनिक युग में पारिवारिक , सामाजिक , राजनैतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में बिखराव के कारण युवकों का आत्मविश्वास टूटता जा रहा है | 'अपना मोर्चा' में छात्र युवक आंदोलन से हताश होकर जीने का सही रास्ता दिखलाने को कहते हैं | इस तरह यह उपन्यास उच्च शिक्षा की समस्या को उजागर करने के साथ युवकों के सशक्तीकरण की आवश्यकता की माँग करता है | आज की युवा पीढ़ी जिस दिशा की ओर जा रही है उस दिशा की ओर एक बार अपनी सशक्त भावना से जाना अति आवश्यक है |

2.1.14. गली आगे मुड़ती है - श्री शिवप्रसाद सिंह

इस उपन्यास में युवा पीढ़ी की शैक्षणिक ,पारिवारिक सामाजिक , राजनीतिक आदि समस्याओं का चित्रण हुआ है | युवा पीढ़ी के आक्रोश से युवा आंदोलन शुरू होता है | इसका नायक रामानंद है | वह सुबोध भट्टाचार्य जी के निर्देशन में रिसर्च कर रहा है | काशी विश्वविद्यालय तथा वहाँ का राजनीति उपन्यास का विषय है | रामानंद इस माहौल से पीड़ित है | उसे छात्रवृत्ति नहीं मिलती | वह सुबोध भट्टाचार्य की मदद से ट्यूशन करके अपने परिवार का खर्चा चलाता है |

रामानंद पर काफी जिम्मेदारी थी | उसके पिता बहुत पहले परिवार को छोड़ चुका था | रामानंद की मॉ और बहन आरती काशी में राजेश्वरी मठ में रहती हैं | रामानंद युवा

आक्रोश में युवा नेताओं के साथ भटकता रहता है | रामानंद गरीब विद्यार्थी है | मां के गहने बेचकर अपनी पढ़ाई पूर करता है | बिना छात्रवृत्ति के रिसर्च करना उसके लिए असंभव था | पर विश्वविद्यालय की राजनीति के परिणाम स्वरूप रामानंद का सपना टूट जाता है |

रामानंद की अवस्था शोध छात्र की नियति है | रामानंद अपने आप को बदलने का निश्चय करता है | सबसे पहले उसने अपना जनेऊ तोड़कर फेंक दिया | वह कहता है -" आज से मेरा सिर्फ एक व्रत है, वह है सदाचार की नाता| " 11 छात्र नेताओं के साथ उसका उठना बैठना बढ़ जाता है | छात्र नेताओं की मदद से रामानंद राजेश्वरी मठ के पुजारी को मारता है | इस प्रकार लेखक ने रामानंद के माध्यम से शैक्षणिक क्षेत्र में चलने वाली

राजनीति को और उससे जन्म लेने वाले छात्र असंतोष को प्रभावी रूप से अभिव्यक्त किया है |

युवा आक्रोश की दिशाहीनता के बावजूद लेखक निराश नहीं हैं | उसकी आशा का दीप है हरि मंगल | वह साहसी और सत्यवादी है | इस प्रकार शिव प्रसाद जी ने बड़े कलात्मक ढंग से युवा पीढ़ी के आक्रोश को अभिव्यक्त किया है |

2.1.15 .टूटे हुए फरिश्ते **-** आबिद सुरती

इस उपन्यास में लेखक ने युवा पीढ़ी की वैयक्तिक समस्याओं का चित्रण किया है। इसमें आर्ट्स कॉलेज के छात्रों का चित्रण है । सूरज प्रकाश निम्न मध्यवर्ग का युवा है | युवा वर्ग की मनस्थिति पर विफल प्रेम का प्रभाव कितना गहरा पड़ता है इसका चित्रण सूरज प्रकाश माध्यम

से किया गया है | राय सूरज का दोस्त है ।वह टैक्सी चला कर अपने खर्चे के लिए पैसा कमाता है |वह पढ़ाई को कभी नहीं छोड़ता |इस तरह युवा को अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सामाजिक बंधनों से विद्रोह करना पड़ता है |

2.1.16. भ्रमं भंग -देवेश ठाकुर

मध्यवर्गीय युवकों की विसंगतियों का चित्रण देवेश ठाकुर ने भ्रमं भंग में किया है। इस उपन्यास में चंदन नामक युवा अपने परिवेश से संघर्ष करता है | मध्यवर्गीय युवक आज़ादी के बाद देश में विकसित सामाजिक व्यवस्था का शिकार कैसे हो जाता है , उसका चित्रण चंदन के माध्यम से किया गया है | चंदन मुंबई के एक सरकारी कॉलेज में नौकरी करता है |

कॉलेज के छात्रों को पढ़ाई में रुचि नहीं | पाठ्यक्रम छात्रों को अपनी ओर आकृष्ट करने में असफल है | इसी कारण छात्र कक्षा में आते नहीं | इस प्रकार के वातावरण में चंदन जैसा प्रतिपद्ध अध्यापक निराश होता है | बाद में चंदन का तबादला राजकोट में होता है | वहां की कॉलेज की दशा देखकर वह स्तंभित हो जाता है | यहां भी विद्यार्थी क्लास में नहीं जाते | उपन्यास में प्रोफेसर बोरा अध्ययन अध्यापन में रुचि नहीं रखते | यह उपन्यास मुंबई के विश्वविद्यालय जो पुरानी विश्वविद्यालय है उसे केंद्र में रखकर रचा गया है |

2.1.17. दूरियां- रजनी पणिक्कर

इसमें लेखिका ने एक विद्रोही प्रवृत्ति वाली युवती के संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है | नमिता एक सशक्त

युवती का प्रतीक है | वह अपने सपना पूरा करने के लिए परिवार से अलग हो जाती है | नमिता परंपरागत सामाजिक बंधनों को तोड़ती है। वह अपनी इच्छा के अनुसार विवाहित कर हरी के साथ दूसरे घर में रहने लगती है | बाद में हरी को छोड़कर अकेली रहती है | उसे ज़िंदगी में कभी शांति नहीं मिलती | लेखिका इसमें बदलते हुए संबंधों का विश्लेषण करती हैं | अनेक संघर्षों के बावजूद भी नमिता को एक शांतिपूर्ण जीवन नहीं मिलता |

2.1.18.धुआ- अमृतराय

इस उपन्यास में स्वतंत्र्योत्तर काल के जीवन की विषमताओं और सघंर्ष का चित्रण किया गया है | शिशिर इस उपन्यास का नायक है | वह क्रांतिकारी विचारों वाला युवक है | इस उपन्यास में शंकर नामक एक और युवक है |

शकंर अपनी पढ़ाई के लिए गॉव से बनारस आता है | उसके व्यक्तित्व के कारण सभी लोग उससे प्रभावित होते हैं | इस उपन्यास में लेखक ने मध्य वर्गीय प्रेम - संबंधों की समस्या छात्र आंदोलन की समस्या , विश्वविद्यालय परिवेश की समस्या आदि को व्यक्त किया है |

2.1.19. नरक दर नरक -ममता कालिया

इस उपन्यास में लेखिका ने मध्यवर्गीय जीवन की विडंबनाओं को चित्रित किया है | इसमें मध्यवर्गीय जीवन में व्याप्त बेकारी और उससे उत्पन्न खिन्नता तथा जीवन को नरक बनाने वाली परिस्थितियों का चित्रण है | इस उपन्यास का नायक जगन अंग्रेजी में एम. ए.पास है | पढ़ाई के बाद उसे नौकरी नहीं मिलती | अनेक वर्षों बाद उसे

एक कॉलेज में व्याख्याता का काम मिल जाता है | वहॉ बडी ईमानदारी से वह अपना काम करता है |

वह समर नामक इंस्टिट्यूट में उषा से मिलता है | इसी बीच वह क्लास में देर से आयी एक छात्रा को निकालता है | इस पर कॉलेज के अधिकारी जगन से रुष्ट हो जाता है | उसे नौकरी से निकालता है | जगन इलाहाबाद में एक प्रस खरीदता है। काम में व्यस्त जगन अपनी पत्नी उषा से दूर होता है | उपन्यास में जगन और उषा का दांपत्य जीवन का चित्रण है | इसमें ममता कालिया जी ने मध्यवर्गीय युवकों के जीवन में व्याप्त बेकारी की समस्या का चित्रण किया है |

2.1.20. पतछड़ की आवाज़ -निरुपमा सोबती

इसमें युवा संघर्ष ,नारी शोषण अदि का चित्रण प्रस्तुत किया गया है | उपन्यास की नायिका नौकरी पेशा आत्मनिर्भर स्त्री है |कामकाजी युवतियों के अन्त : सघंर्ष और उनकी बदलती धारणाओं का चित्रण इस उपन्यास में मिलता है | आज की नयी पीढी में अपने परिवार से उदासीन रहने और कटकर रहने की प्रवत्ति दिखाई देती है |

2.1.21.लाल पीली ज़मीन **-** गोविन्द मिश्र

आज छात्रों का ज़माना है | उनकी नई शक्ति को पहचान करने के बाद यहॉ की राजनीतिक पार्टियों ने उस पर काबू पाने की कोशिश की है | यह बुंदेलखंड के छात्रों की कहानी है | वहां के कॉलेज में हॉस्टल की सुविधा नहीं है | यहाँ अच्छा खाना नहीं मिलता है इसपर छात्र

असंतुष्ट है | इसलिए छात्र आंदोलन करने का निर्णय लेते हैं |

वे जुलूस निकालकर अपनी मॉग को शांतिपूर्वक कलेक्टर के सामने रखने का निश्चय करते हैं लेकिन पुलिस के आने पर सब बदल जाता है और सघर्ष होता है। पढ़ाई के नाम पर लड़के दादागिरी करते हैं | शिवमंगल तथा उसके आवारा दोस्त मैदान में लड़ते हैं | छात्रों को बात बात पर पीटते हैं | इसमें युवा जीवन की धड़कनों को लेखक ने प्रस्तुत किया है | गोविंद मिश्र जी ने इस उपन्यास में सामाजिक वास्तविकता का यथार्थ चित्रण किया है |

2.1.22. नाच्यो बहुत गोपाल - अमृतलाल नागर

'नाच्यो बहुत गोपाल' नागर जी की सशक्त रचना है | निर्गुणिया इस उपन्यास की केंद्र बिंदु है | वह संस्कारों से ब्राह्मण है लेकिन अपनी विवशता के कारण वह मेहतरानी बनी है | उसके मन में संस्कारों के और इस गन्दे पेशे का जो अंतर्द्वन्द चलता है उसे नागरजी ने बडी कुशलता से प्रस्तुत किया है | इस उपन्यास द्वारा नागरजी का उद्देश्य मेहतर जाति को उनकी मेहतरी कार्य से मुक्त करवाना है | नागर जी ने इस उपन्यास के द्वारा पाठकों की चेतना को झकझोर कर जागृत किया है | सदियों से चले आ रहे जुर्म को उन्होंने अपनी लेखनी द्वारा चित्रित किया है |

2.1.23. दीक्षा- नरेंद्र कोहली

इस उपन्यास का उद्देश्य पौराणिक कथा कहना नहीं बल्कि पौराणिक कथा के माध्यम से वर्तमान समाज की ज्वलंत समस्या को उभारना है | आज के समाज में कर्म शक्ति और बुद्धि शक्ति को साथ दिलाने की आवश्यकता है | इसलिए विश्वामित्र ने युवक राम को मार्गदर्शन देकर दीक्षा देने की कोशिश की है |

कर्म की ऊर्जा युवकों से और चिंतन की ऊर्जा बुजुर्ग पीढ़ी से लेनी चाहिए | इन सब का मिलन होने से पीढ़ियों का अंतराल मिटा सकते हैं | विश्वामित्र कहते हैं - " सामान्यतः बुद्धिजीवी ऋषि कर्मशील हो जाता है | इसलिए मुझे तुम्हारी आवश्यकता पड़ी है राम | किंतु जब तुम स्वयं न्याय की बात सोच कर स्वतंत्र कर्म करोगे , जिसे मैंने कहा तो तुम आवातार कहलाओगे ''| 12 आज

के अधिकतम युवकों में चिंतनशीलता की कमी है | उसे सही रास्ता दिखाने की जिम्मेदारी बुजुर्ग पीढी को है |

आज का विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी जीना नहीं जानता | राम के गुरु वसिष्ट ने राम को जो शिक्षा दी है उससे राम केवल शिक्षित व्यक्ति कहलाया | और कुछ नहीं | लेकिन विश्वामित्र ने राम को जो शिक्षा दी है, उससे राम आदर्श राजा , आदर्श पति , आदर्श भाई कहा गया और जीवन की कठिनाइयों को समझ सका | आज समाज में हर जगह अत्याचार हो रहा है | युवकों को इन अत्याचारों के विरुद्ध लड़ना होगा |

'दीक्षा 'में विश्वामित्र राम से कहते हैं - " हे राम आज तुम्हें अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना होगा | यदि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष ना हुआ तो मानव का अस्तित्व , समाज

की शांति व्यवस्था भंग हो जाएगा | ''13 वर्तमान विश्व की प्रमुख समस्या यही है | लोग अन्याय का विरोध करने से डरते हैं ,कारण अन्याय का पक्ष बलवान होता है | दीक्षा में अप्रत्यक्ष रूप से राम का प्रवेश विश्वामित्र द्वारा अपनी यज्ञ की रक्षा हेतु हवाई यात्रा के द्वारा होता है |

नरेंद्र कोहली जी दीक्षा में राम को समाज में फैले हुए दुराचार को समूल नाश करने हेतु कृत संकल्पित दिखाते हैं | यह उनकी कर्मशीलता का प्रमाण है | विश्वमित्र राम को उनके दिव्यास्त्र भी देते हैं | इसलिए इसका नाम दीक्षा सार्थक प्रतीत होता है | राम का व्यक्तित्व आज के युवकों को सही रास्ते की ओर ले जाने के लिए सहायक होगा | इसका प्रयास लेखक ने उपन्यास द्वारा किया है | युवकों की चिंतनधारा और व्यवस्था की ढीलापन समाज को

छानबीन करती जा रही है | दिशाहीन शिक्षा नीति तथा शासकों की लापरवाही ने समाज के ऊपर कलंक लगा दिया है | इसलिए युवकों को संगठित होकर रहना चाहिये |

2.1.24. परिशिष्ट- गिरिराज किशोर

इस उपन्यास का क्षेत्र एक उच्च शिक्षा संस्थान ए.ए.टी.है | उच्च शिक्षा संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने के लिए आये होनहार दलित छात्रों को किन- किन परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है उसका चित्रण इस उपन्यास में किया गया है | 'परिशिष्ट ' उपन्यास का नायक अनुकूल नामक एक हरिजन छात्र है | वह संघर्षशील एवं सहनशील युवक है | वह पीड़ित और शोषित के लिए कुछ करना चाहता है | इस उपन्यास में दलित छात्रों की प्रतिभा को

कैसे शिक्षक द्वारा कुचल दिया जाता है इसका वर्णन लेखक ने किया है |

राम उजागर 'परिशिष्ट ' का केंद्र पात्र है | वह अत्यंत तेजस्वी युवक है | लेकिन दलित होने के कारण वह हमेशा तिरस्कृत होता रहता है | गिरिराज किशोर जी इस उपन्यास के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी मनुष्य के विकास के प्रतिनिधि हैं लेकिन यह मनुष्य की आंतरिकता को विकसित नहीं कर पाता | ' परिशिष्ट ' में भावी पीढ़ी को समाज में अच्छे योगदान देने के लिए आह्वान दिया गया है |

2.1.25. पहला पड़ाव –श्रीलाल शुक्ल

इस उपन्यास की कथा बिलासपुरी मजदूरों , ठेकेदारों और शिक्षित बेरोजगार युवकों पर आधारित है | संतोष

कुमार बेरोजगार युवा पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है | वह मजदूरों के प्रति पूरी हमदर्दी प्रकट करता है | वह शोषण के खिलाफ आवाज़ उठाना चाहता है | संतोष कुमार युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो समाज में बदलते मूल्यों के प्रति सचेत है |

संतोष कुमार की जिंदगी में जीवन यात्रा का पहला सोपान उनका पहला पड़ाव है | सावित्री उसका शुभचिंतक है | वह समय समय पर आर्थिक मदद भी करती है | वह अपने पति को सलाह सूचना भी देती है | इस उपन्यास में लेखक ने समाज की पूंजीवादी सभ्यता को झक -झोर कर दिया है | बिलासपुर के युवक मजदूरों को केंद्र में रखकर लेखक ने इस उपन्यास में युवा मज़दूर वर्ग के जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है |

2.1.25. अग्नि बीज **-**मार्कंडेय

इस उपन्यास के केंद्र में गॉव के युवा वर्ग हैं | इनमें श्यामा , सुनीत , सागर और मुराद हैं | ये चारों युवक विभिन्न वर्गों से संबंधित हैं | श्यामा गांधीवादी साधो काका की पुत्री है | सुनीत गॉव के जमींदार का इकलौता बेटा है | सागर महतो का बेटा है | मुराद भूमि हीन मुसलमान का बेटा है | ये चारों युवक लिंग- भेद के दीवार को तोड कर सामूहिक रूप से गांव का विकास चाहते हैं | श्यामा जागृत गतिशील और परिपक्व है | उपन्यास में गांव के युवा वर्ग के दृष्टिकोण को लेखक ने स्पष्ट किया है |

2.1.26. दूसरा घर **-** रामदरश मिश्र

इस उपन्यास का नायक शंकर प्राइमरी स्कूल का अध्यापक है | यह उपन्यास भारतीय जीवन में गरीबी और

औद्योगीकरण के पक्ष को उजागर करता है | अपने ही देश में युवक कैसे पराया हो जाता है, उसका चित्र उपन्यास के द्वारा लेखक ने प्रस्तुत किया है | युवा पीढ़ी को गरीबी के कारण अपना घर और गांव छोड़कर नौकरी के लिए बेघर होना पड़ता है |

गांव की अर्थ व्यवस्था का केंद्र शहर से जुड़ा हुआ है | कमलेश इसका एक युवा पात्र है | कमलेश प्रतिकूल परिस्थितियों से गुज़र कर पढ़ाई करता है | संघर्षशील युवा के रूप में उसका चित्रण यहॉ किया गया है | शिक्षा क्षेत्र में राजनीति के प्रवेश से उसका सारा गठन नष्ट हो जाता है | इसका चित्रण भी रामदरश मिश्र ने जीवनी के रूप में किया है |

उपसंहार

स्वतंत्रता के बाद हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में नवीन प्रवृतियॉ दिखाई पड़ती हैं | ग्रामीण संदर्भ में बदलाव ,नारी सबलीकरण , युवकों के सशक्तीकरण की प्रक्रिया , दलितों का पुनरुद्धान , मध्यवर्ग का नव निर्माण , राजनीति क्षेत्र की गिरावट आदि हिन्दी उपन्यास में दिखाई देते हैं | नवीन शिक्षा ,शहरीकरण , औद्योगीकरण और यंत्रीकरण के कारण गांव में भी कुछ नवीन परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं | अब गांवों में भी स्कूल और कॉलेज खुली हैं |

इस काल के उपन्यासकारों ने वर्तमान की सबसे महत्वपूर्ण समस्या युवा समस्या को अपने उपन्यास द्वारा उभारा है |

आज देश में व्याप्त शैक्षणिक , सामाजिक , आर्थिक समस्याओं का एक अंग युवा समस्या है | ये सभी समस्याएँ

प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में युवा से जुड़ी हुई हैं | सभी उपन्यासकार अपनी कृतियों में युवा समस्या से जूझते हुए दिखाई देते हैं | प्रेमचंद से लेकर आज के उपन्यासकारों ने युवकों के संघर्ष का चित्रण किया है | साठोत्तर उपन्यासकारों ने युवा पीढ़ी पर अधिक प्रभाव डाला है | अमृतलाल नागर , श्रीलाल शुक्ल , गिरिधर गोपाल आदि इनमें आते हैं |

प्रभाकर माचवे , शंकर पुणतांबेकर, मोहन राकेश , श्रवण कुमार वर्मा आदि भी उसमें शामिल हैं | पश्चिमी जीवन प्रणाली का प्रभाव नगरों में गांव से भी अधिक है | नई टेक्नोलॉजी और विज्ञान की सुविधाएँ नगर में अधिक हैं | शिक्षा के प्रचार प्रसार भी नगर में अधिक है |

गांव और शहर में युवकों की नौकरी की समस्या है | आज युवक को पढे - लिखे होने पर भी स्थायी नौकरी नहीं मिलती | युवा वर्ग ' वाइट कॉलर ' जॉब पसंद करते हैं | इसलिए शिक्षित बेकारों की संख्या अधिक है | बेकारी के कारण युवकों में आर्थिक और नैतिक पतन होती है | उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में शिक्षत होने पर भी नौकरी न मिलने के कारण दिशाहीन होते युवकों का चित्रण किया है |

गांव की अपेक्षा शहर में स्वच्छ वातावरण की कमी रहती है | यहॉ भी मेहनतकश लोगों में मानसिक सुख का अभाव है | इसलिए युवा मानसिक संत्रास, पीड़ा एवं घुटन के शिकार होते हैं | उसे सही रास्ता दिखाने की जिम्मेदारी बुद्धिजीवी वर्ग को है | भ्रष्ट राजनीति का प्रभाव

युवा पर पड़ता है | कॉलेजों एवं विभिन्न विश्वविद्यालयों में विभिन्न पार्टियों के गुड बने हुए हैं | वे आपस में संघर्ष करते हैं | उसके फलस्वरूप छात्र हड़ताल , तोड़फोड़ और मारपीट होते हैं | गोविंद मिश्र के 'लाल पीली जमीन' में भी इसका चित्रण है |

काशीनाथ सिंह के ' अपना मोर्चे' में छात्रों ने शहर में आतंक मचाया था | विश्वविद्यालय राजनीति के षडयंत्र के शिकार बनते जा रहे हैं | नई पीढ़ी को तबाह करने के लिए वे तुले हैं | देश की युवा पीढ़ी अयोग्य राजनीतिज्ञों के प्रलोभन में फस गयी है | आज युवकों के सामने केवल रोज़ी रोटी ही एक समस्या नहीं है उसे समाज में एक स्थान भी मिलना है | उसके मन में निराशा है | कॉलेजों की शिक्षा व्यवस्था में सुधार करना है | वह पाठ्यक्रम

बदलना चाहता है | उसके लिए युवकों में संघर्षशील चेतना का विकास होना अनिवार्य है |

संदर्भ ग्रन्द सूचि

1.कुवरपास सिंह - हिन्दी उपन्यास जनवादी परंपरा , 102

2.अमृतलाल नागर - अमृत और विष , 216

3.रुकोगी नहीं राधिका - उषा प्रियंवदा , 85

4.सुबह अंधेरे के पद पर - सुरेश सिंह , 56

5.राग दरबारी - श्रीलाल शुक्ल , 101

6.राग दरबारी - श्रीलाल शुक्ल , 136

7.कंदील और कुहासे - गिरधर गोपाल , 45

8.जाने कितनी आंखें - राजेंद्र अवस्थी , 53

9.परिंदे - श्रवण कुमार वर्मा , 2

10. अपना मोर्चा - काशीनाथ सिंह , 31

11. गली आगे मुड़ती है - श्री शिवप्रसाद सिंह , 72

12. दीक्षा - नरेंद्र कोहली , 86

13. दीक्षा - नरेंद्र कोहली , 201

अध्याय **-3**

नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण की दिशाएं- प्रतिनिधि उपन्यासों के आधार पर

हमारे समाज के सबसे सक्रिय वर्ग युवा वर्ग हैं | शिक्षित युवा गण आज सामाजिक कार्यों में अपनी भूमिका अदा कर रहे हैं | सही दशा और दिशा के अभाव में युवा पीढ़ी असंतोष प्रकट करती हैं | यह असंतोष सामाजिक एकता को हानि पहुंचाता है | आधुनिकता का समावेश युवकों के चिंतन , कर्म तथा विवेचन पर निर्भर रहता है | युवा पीढी देश की शक्ति का प्रतीक हैं| युवा वर्ग की समस्याएं और आवश्यकताएं समाज की भी है | इसलिए युवा वर्ग को सशक्तीकरण की सख्त जरूरत है| सशक्तीकरण का मतलब युवा वर्ग के अपने व्यक्तित्व और संपूर्ण विकास है साथ ही युवा वर्ग में आत्मविश्वास और स्वतंत्र चिंतन रखने की क्षमता का निर्माण करना भी है |

समकालीन उपन्यास का अर्थ समय के यथार्थ की अभिव्यक्ति है | प्रेमचंद के समय से हिंदी उपन्यास में यथार्थ का चित्रण हो रहा है | युवा समस्याओं का चित्रण इससे आरंभ होता है | नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा समस्याओं का चित्रण अधिक है | मुख्य रूप से युवा सशक्तीकरण को आधार बनाकर बारह उपन्यास लिखे गये हैं | इसमें युवा सशक्तीकरण की समस्याएँ भी है|

1. रुहेलखण्ड़ का गाँधी - श्री योगेन्द्र शर्मा (2011)

श्री योगेन्द्र शर्मा का पहला उपन्यास है 'रुहेलखण्ड़ का गाँधी'। यह एक व्यक्ति के जीवन की यथार्थ कथा पर आधारित श्रेष्ठ उपन्यास है। लेखक ने इसमें स्वतंत्रता पूर्व एवं स्वतंत्रता के तुरन्त पश्चात की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है। यह बरेली के जनाब फ़जलुर्रहमान उर्फ चुन्ना मियाँ के व्यक्तित्व पर केन्द्रित है। भारत के युवा लोगों को आदर्श का सही नमूना है चुन्ना मियाँ। मुसलमान होने पर भी बरेली के प्रसिद्ध लक्ष्मीनारायण मंदिर चुन्ना मियाँ का मंदिर के नाम से जाना जाता है। इस मंदिर के निर्माण में चुन्ना मियाँ ने तन, मन और धन से सहायता की। गरीबी के कारण अपने मामा के घर से भाग जानेवाले युवा चुन्ना मियाँ से उपन्यास शुरु होता है। युवा मियाँ अपने साथ चने तथा गुड़ लेकर घर से निकला था। गुजराती

चाचा व्यापार करने के लिए दो रुपये देते हैं। युवा चुन्ना शीशेवाले बक्शे से काम शुरु करता है। बाद में फेरीवाला युवा मियाँ बी.डी. माचिस का धंधा करके अमीर बन जाता है। युवा चुन्ना ने अपना व्यापार केवल दो रुपये से शुरु किया था। लेकिन अन्त में चुन्ना शहर में मंदिर, सड़क और शिक्षालय आदि बना देता है। मियाँ के जीवन में कई उतार-चढ़ाव भी आते हैं।

2. **अतिशय- मृदुला सिन्हा** (2003)

हिन्दी के सशक्त उपन्यासकार मृदुला सिन्हा जी का उपन्यास है 'अतिशय'। उपन्यास का नायक यति नौजवान व्यापारी था। इसमें पौराणिक पात्र ययाति, शर्मीष्ठा और देवयानी की कथा को आधुनिक रूप में चित्रित किया गया है। लेखिका कहती हैं कि - "ययाति- युगीन समाज को भी संयम आधारित जीवन जीने के लिए चेतना आवश्यक था। आज के समाज को भी एक बार भोग-रोग से मुक्त कर उसका जीवन के प्रति अतिशय आसक्ति से मोह भंग कराना अपरिहार्य हो उठा है। "[1] 'अतिशय' का नायक यति मुबंई के बडे व्यवसायी का पुत्र है। यति का दोस्त रजनीश बाद में बडे दार्शनिक विद्वान बन जाता है। यति पत्नी शिवानी के साथ खुशी से जी रहा था। लेकिन रजनीश शिवानी का पहला प्रेमी था। रजनीश के आगमन से शिवानी के दिल में

हलचल पैदा होता है। इसी समय शिवानी के पिता के कॉलेज के मैनेजर की बेटी शर्मीष्ठा आ जाती है। शिवानी को पहले से ही शर्मीष्ठा से घृणा थी। वह शर्मीष्ठा को नीचे दिखाने की कोशिश करती है। लेकिन इसके कारण यति और शर्मीष्ठा के बीच नया रिश्ता पैदा होता है। शिवानी को इसके बारे में पता लगने पर तीनों की ज़िदगी बरबाद होती है। अंत में पुत्रों के द्वारा मिलन होता है।

3. **पीढियाँ- अमृतलाल नागर** (1992)

'पीढियाँ' अमृतलाल नागरजी का अंतिम उपन्यास है। यह वास्तविक घटनाओं पर आधारित एक उपन्यास है। भारत की स्वतंत्रता के बाद का आकलन करके यह उपन्यास लिखा गया है। नागरजी के 'करवट' उपन्यास की अगली पीढियों की कहानी है 'पीढियाँ'। इस उपन्यास में **1905** से **1986** तक के भारत का चित्रण हुआ है। इसमें डॉ.देशदीप टण्ड़न उनके पुत्र जयंत टंडन, जयंत टंडन के पुत्र सुमिंत टंडन और सुमिंत टंडन के पुत्र युधिष्ठिर टंडन आदि चार पीढियों का चित्रण हुआ है। इस उपन्यास का नायक युवा युधिष्ठिर टंडन है। युधिष्ठिर टंडन एक हौनहार युवा पत्रकार है। वह अपनी पीढियों की कथा जानना चाहता है। युवा युधिष्ठिर टंडन अपने परिवार की घटनाओं को लेकर एक उपन्यास लिखता है। डॉ. देशदीपक के पुत्र जयंत टंडन

ने स्वाधीनता की लड़ाई में अपनी जान कुर्बान दी। सुमिंत टंडन मुख्यमत्री के रूप में देश की सेवा की थी। उन दोनों के चरित्र को पढ़कर प्रेरणा मिलकर युवा युधिष्ठिर टंडन के स्वभाव में भी परिवर्तन आता है। स्वतंत्र भारत में इन वर्षों में हुई अराजकता का चित्रण इस उपन्यास में हुआ है। पत्रकार के माध्यम से युवा टंडन इसका विवरण देता है।

यातना घर- गिरीराज किशोर (1997)

यातना घर विष्णुनारायण नामक युवा प्रशासन अधिकारी की कहानी है। यह उपन्यास गिरिराज किशोरजी के अनुभव की कथा है। इसका पहला नाम ‘छीलन’ था। विष्णुनारायण शिक्षा कार्यालय में प्रशासन अधिकारी के रूप में उसकी नियुक्ति होती है। साक्षात्कार के वक्त में उसको निर्देशक ने कार्यलय की पूरी जानकारी दी। दफ्तर में उसे कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके साथ-साथ विध्या परिषद में हुए एक घटना के कारण विष्णुनारायण की नौकरी चली जाती है। कार्यलय नौकरी के मानसिक संघर्ष के कारण विष्णुनारायण टूट जाता है। इमानदार विष्णुनारायण शिक्षण संस्थान के भ्रष्टाचार से अपरिचित है। कूट राजनीति उसे नौकरी से टकेलती है। आज के शिक्षित

नवयुवक नौकरी मिलने के बाद भी कैसे उलझे रहते हैं यह इस उपन्यास में हम देख सकते हैं।

5. **लक्ष्यवेद- इन्दिरा राय**(2002)

इन्दिरा राय का सशक्त उपन्यास है 'लक्ष्यवेद'। इसका कथानक कृषि विश्वविद्यालय का कैम्पस है। कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.मनोरमा सक्सेना हैं। कुलपति के स्थान पर आसीन होने पर उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसमें विश्वविद्यालय के छात्रों का संघर्ष और आक्रोश भी है। युवा नारी डॉ. मनोरमा सक्सेना को विश्वविद्यालय में कई समस्याओं को झेलना पड़ता है। नारी सशक्तीकरण का उत्तम नमूना है डॉ. मनोरमा सक्सेना। उसकी काबिल्यत और परिश्रम से विश्वविद्यालय के छात्रों, अध्यापकों और कर्मचारियों में उन्नति

होती है। आज के समाज के भ्रष्टाचार ,घूस और संगठनों से अपने विश्वविद्यालय को बचाने की कोशिश मनोरमा सक्सेना करती हैं।

6. **मीनारें- डॉ. शशिप्रभा शास्त्री**(1992)

शिक्षण संस्थाओं में होनेवाले भ्रष्टाचार और शोषण का चित्रण करके लिखा गया उपन्यास है **'मीनारें'**। शशिप्रभा शास्त्रीजी इसमें कालेज की प्राचार्य प्रेमादीवान की कथा कहती हैं। प्राचार्य प्रेमादीवान अचानक कालेज की प्रिंसिपल बन जाती हैं। प्रेमा दीवान एक न्यायप्रिय अधिकारी हैं लेकिन शिक्षा मंत्री और कर्मचारियों के भ्रष्टाचार उसके लिए समस्याएँ पैदा करती हैं। महिला कालेज होने के कारण उसे और भी क्लेश का सामना करना पड़ता है। छात्राओं के होस्टल सुविधा में सुधार करने के लिए प्रेमा दीवान प्रयत्न करती हैं। लेकिन कालेज के मेनेजर मंत्रीजी के कारण सब विफल होता है ।शिक्षण संस्थाओं को आमदनी के रूप

में देखनेवालों के कारण आज शिक्षा में घिराव आया है। इसका उत्तम नमूना हम मीनारें उपन्यास में देख सकते हैं।

7. दीक्षान्त- सूर्यबाला (1992)

सूर्यबाला जी ने 'दीक्षान्त' नामक उपन्यास में युवा छात्रों की कथा को चित्रित किया है। इसका नायक विध्याभूषण शर्मा है। एम.ए और पी.एच.डी गोल्ड मेड़लिस्ट होने पर भी उसे माध्यमिक विध्यालय की अस्थाई नौकरी ही मिलती है। बिसारिया कॉलेज के कलुषित वातावरण ने उसे जीने नहीं दिया। शर्मा सर ईमानदारी और अनुशासन से पढ़ाना पसन्त करता है। लेकिन बाकी अध्यापक यह नहीं सोचते। शर्मा को कॉलेज में शोषण और विरोध का सामना करना पडता है। इसके कारण शर्मा सर की मृत्यू हो जाती है। विध्याभूषण शर्मा अपने ज्ञान को भारत की युवापीढ़ी के बीच बाँटना चाहता था लेकिन उसकी अकाल मृत्यू हो जाती है।

8. इसे विदा मत कहो- धर्मेन्द्र गुप्त (1992)

शैक्षणिक वातावरण को आधार बनाकर धर्मेन्द्र गुप्त द्वारा रचित उपन्यास है 'इसे विदा मत कहो'। इसमें युवा अध्यापक मि. आर्य राजस्थान के शिक्षा केन्द्र में हुए संघर्ष और कठिनाइयों का चित्रण है। मि. सुभाष आर्य दिल्ली से राजस्थान के एक कुग्राम में आदर्श शिक्षा केन्द्र में अध्यापन के लिए आया था। साथ में वह अपनी पी.एच.डी भी कर रहा था। यहाँ आने पर शिक्षा संस्था का वातावरण देखकर वह चौकता है। पहले उसे रहने के लिए भी जगह नहीं मिलता। शिक्षा केन्द्र में आकर उसे पता चलता है कि उसे कॉलेज के साथ-साथ एक स्कूल में भी पढाना है। गाँव में दादा चेलाराम नामक अमीर व्यक्ति का शासन है। लोग उसकी आज्ञा का पालन करते हैं। शिक्षा संस्था में कोई अनुशासन नहीं। वेतन सब ठीक तरह नहीं मिलता। इसलिए अध्यापक वर्ग पढ़ाने में कोई तात्पर्य नहीं दिखाते। इन सबसे निपटने के लिए सुभाष आर्य को बड़ी मेहनत करना पड़ता है।

9. हॉस्टल के पन्नों से- मनोज सिंह(2011)

परिवर्तित युवा संस्कृति को आधार बनाकर लिखा गया एक उपन्यास है मनोज सिंह का 'हॉस्टल के पन्नों से'। इसमें युवापीढ़ी की द्वंन्द्व मानसिकता एवं आधुनिक बदलते परिवेश का चित्रण है। यह मनोन सिंह द्वारा अपने जीवन के भोगे हुए पलों को संजोकर लिखा गया उपन्यास है। माता-पिता अपने बच्चों को बडे प्यार और उम्मीद के साथ पढाने के लिए हॉस्टल भेजते हैं लेकिन हॉस्टल के वातावरण में आकर युवा एकदम बदलता है। हॉस्टल में स्वतंत्र जीवन बिताने के अवसर का युवा भरपूर आनंद लेता है। हॉस्टल जीवन से युवापीढ़ी के जीवन में बदलाव आ जाता है।

10. लेडीज़ कल्ब- नमिता सिंह (2011)

सुप्रसिद्ध कथाकार नमितासिंह द्वारा लिखा गया उपन्यास है 'लेडीज़ कल्ब '।

अपने सैलाब उपन्यास के बाद नमिता सिंह का दूसरा उपन्यास है 'लेडीज़ कल्ब'। इसमें नमिता सिंह ने 'लेडीज़ कल्ब' में आनेवाली युवतियों की ज़िदगी के साथ -साथ अलीगढ विश्वविद्यालय के परिसर की कथा को दर्शाया है। अतुल और राधा पति-पत्नि हैं। अतुल विश्वविद्यालय का अध्यापक था। राधा के माध्यम से कथा कही गयी है। 'लेडीज़ कल्ब' के मुख्य कर्मी शहनाज़ आपा है। उन्हीं के द्वारा 'लेडीज़ कल्ब' का आरंभ होता है। इसके साथ-साथ विमलेश बहन, सलमा बेगम गज़ाला, शशिबाला, ज़हरा रिज़वी आदि आती हैं। इसके साथ इस उपन्यास में अलीगढ़ विश्वविद्यालय के आस-पास हुए सांप्रदायिक दंगे का भी मार्मिक चित्रण हुआ है।

11. वैलेंटाइन डे- राजेन्द्र मोहन भट्नागर(2011)

युवा सशक्तीकरण को आधार बनाकर लिखा गया राजेन्द्र मोहन भट्नागर जी का प्रमुख उपन्यास है 'वैलेंटाइन डे' । इसकी भूमिका में उन्होंने लिखा है कि यह उपन्यास नवयुवक-युवतियों के लिए है। उनके संघर्ष और समस्याओं का अंकन इसमें हुआ है। इसका नायक हिमांशू अपनी पढ़ाई के बाद मानसिक संतोष के लिए पहाड़ी प्रदेश में रहने के लिए आया था। वहाँ शालू से उसकी मुलाकात होती है। दोनों प्रेम करते हैं। शालू और हिमांशू आधुनिक युवा वर्ग के प्रतीक हैं। शालू अपने भविष्य को संभालना चाहती है। उसे प्यार के चक्कर मे पड़कर जीना पसंद नहीं। मिस. वुल्ला जो विदेशी अध्यापिका है हिमांशू से सच्चे दिल से प्रेम करती है। हिमांशू दोनों के बीच द्वन्द में पड़ता है। अंत में सच्चे प्यार के

खातिर हिमांशु शालू को छोड़ता है और मिस. वुल्ला को स्वीकारता है।

12. न भूतो न भविष्यति- नरेन्द्र कोहली (2011)

यह स्वामी विवेकानंद की जीवनी पर आधारित उपन्यास है ।उनके जीवन से सम्बन्धित सारे तथ्य इतिहासंकित हैं ।' न भूतो न भविष्यते ' में लेखक नरेंद्र कोहली ने उनके व्यक्तित्व के विविध पहलुओं पर प्रकाश डाला है ।इस उपन्यास में विवेकानंद के जन्म से लेकर उनका अमेरिका में सफलता के साथ विचार प्रसारित करने तक की विस्तृत जीवनी आयी है ।स्वामी विवेकानंद के व्यक्तितव का प्रमुख केंद्र वेदांत था । बचपन से ही विवेकानद की वाणी में जबरदस्थ शक्ति थी । अपनी अत्यधिक ऊर्जा के कारण वे अनेक कार्य करते है ।

इसी तरह इस बारह उपन्यासों में युवा वर्ग के अनेक रूप को हम देख सहते हैं। कुछ युवा आधुनिक परिवेश से मिलजुलकर आगे बढ़ते हैं तो कुछ उसके गिराफत में आकर टूट पड़ते हैं। कुछ युवा में अभिमान की झलक देखने को मिलती है कुछ युवा भड़ककर आतंकवाद या नशे में पड़ते हैं। उसे सही रास्ते में लाने की ज़िम्मेदारी राष्ट्र को भी है। इसलिए उनके सशक्तीकरण की ज़रूरत है।

साहित्यिक दृष्टि से उपन्यास साहित्य ने अनेक समस्याएंओं को उभारा है| आज सबसे बड़ी समस्या युवा वर्ग की है | शिक्षित होने पर भी उसे बेरोजगार होना पड़ता है इसलिए अनेक युवक - युवतियां योग्यता होने पर भी रोजगार पाने से वंचित रहते हैं |

3.1. शिक्षा की समस्या

हमारे भारत में लगभग पच्चीस प्रतिशत गरीब बच्चे प्राथमिक शिक्षा से वंचित रहते हैं | प्राथमिक शिक्षा प्राप्त होने पर भी गरीबी के कारण वे पढ़ नहीं पाते | उत्तर भारत में बच्चे प्राथमिक शिक्षा के बाद काम धंधे में लगे रहते हैं | इसी कारण वहां अशिक्षित लोग भारी संख्या में हैं | शिक्षा का उद्देश्य युवा वर्ग के व्यक्तित्व का बहुमुखी विकास करना है | विश्वविद्यालयों और कॉलेजों का शिक्षा क्रम नौकरी तक ही सीमित रह गया है |

सूर्यबाला के 'दीक्षांत' नामक उपन्यास में इसका चित्रण मिलता है | इस उपन्यास का नायक विद्या भूषण शर्मा है | ' बिसारिया कॉलेज' के छात्राओं को केवल अच्छी नौकरी चाहिए | उन्हें अपने अध्यापक विद्याभूषण को सम्मान देने की आवश्यकता महसूस नहीं होती | जब शर्मा सर पढ़ाते हैं तो छात्र उनपर मज़ाक उड़ाते हैं | उसे मान अभिमान की कोई फिक्र नहीं रहती |

विद्यार्थी परीक्षार्थी बन गये हैं | विद्यार्थी तो बहुत कम दिखाई देते हैं | सब को परीक्षा पास करके अच्छी नौकरी चाहिए | छात्रों से अपमानित होकर शर्मा सर शिकायत करने को सोचते हैं | लेकिन बाद में अपनी राय बदलते हैं | शर्मा सर कहते हैं - " नहीं , अब हद से गुजर चुकी है , जाना ही होगा , सुपरवाइजर के पास | लेकिन , क्या शिकायत करना ठीक होगा | पागलपन मत करो , देखा नहीं यादव , बसल और वह बुक कोपिंग वाली सेन गुप्ता को क्लास में लॉख शोर मचाने और बेइज्ज़त होने पर भी प्रिंसिपल के सामने यही कहते हैं | जी कुछ नहीं , नो प्रॉब्लम सर | " 2 इसलिए जबकि एक दिन बंसल के बाद उसी क्लास रूम में लेक्चर होने पर भी उन्होंने उड़े हुए कागजों के तमाम और चौक के अंनगणित फेंके हुए टुकडे देखे थे |

आज की शिक्षा के बारे में नरेंद्र कोहली जी 'न भूतो न भविष्यति' में ज़िक्र किया हे | विवेकानद युवकों से कहते हैं कि- "यह उच्च शिक्षा बंध हो जाये तो देश को सॉस लेने का विचार करने का समय मिलेगा | ग्रेजुएट बनने की यह अंधी दौड़ थमेगी | इस शिक्षा से हमारे बालक सिखते क्या है ? बस यही तो कि हमारा धर्म ,आचार विचार और रीति रिवाज़ सब निकृष्ट कोटि का है; और पश्चिम की सारी बातें अत्यंत श्रेष्ठ है | ऐसी अकल्याणकारी उच्च शिक्षा के रहने और न रहने से क्या बनता बिगड़ता है ? इस उच्च शिक्षा को प्रप्त कर नौकरी के लिए कार्यालयों की धुल फॉकने से कहीं अच्छा है कि वे लोग थोड़ी यांत्रिक शिक्षा प्राप्त करें, जिससे काम धंधे में लगकर अपना पेट पाल सके "।3

3.2.छात्र आंदोलन की समस्या

वर्तमान शिक्षा प्रणाली के प्रति आक्रोश और पाठ्यक्रम की कमियां आदि छात्र आंदोलन के कारण बन जाते हैं | कॉलेजों के वातावरण में अनैतिकता बढ़ीं है | छात्र -छात्राएं राजनीति में भाग ले रहे हैं | राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए छात्राओं द्वारा झगड़ा तथा तोड़फोड़ कराते हैं | ऐसे वातावरण में छात्रों को शिक्षा पाने से वंचित रहना पड़ता है | स्वतंत्रता आंदोलन के समय छात्रों ने अपनी पढ़ाई छोड़कर गांधी जी के आह्वान से राजनीति में प्रवेश किया था | ' रूहेलखंड का गांधी ' नामक उपन्यास में श्री योगेंद्र शर्मा इसका विवरण देते हैं |

इस उपन्यास में महंत नामक युवक अंग्रेज़ों के खिलाफ खुलकर लड़ता है | महानंद ने कहा - " दोपहर के तीन बजे का वक्त रहा होगा | कलेक्टर इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल और शहर के सारे प्रधानाचार्य के साथ कॉलेज हॉल में मीटिंग ले रहा था , कि

लड़कों को आंदोलन से कैसे दूर रखा जाए , मैं कॉलेज की छत पर चढ़ गया | तिरंगा मैंने कमीज के अंदर फसाया हुआ था | जल्दी - जल्दी यूनिय जैक का फ़्लाग उतारा और नीचे फेंक दिया | और उसकी जगह तिरंगा फहरा दिया और नारे लगाए | भारत माता की जय , महात्मा गांधी की जय , अंग्रेजों भारत छोड़ो |''4

विश्वविद्यालय परिवेश में बड़ा परिवर्तन हुआ है | उसका प्रभाव छात्रों के मस्तिष्क में पड़ा है। 'लक्ष्यवेध' उपन्यास में इंदिरा राय छात्र लोगों को अध्यापक के खिलाफ लड़ते दिखाती हैं |

' दीक्षांत' में शर्मा सर की मृत्यु इन्हीं छात्र आंदोलन के फलस्वरूप हुई है | शशिप्रभा शास्त्री के 'मीनारें ' उपन्यास में छात्र लोग महिला कुलपति को एक कमरे में बंद कराते हैं | वे कॉलेजों में जाकर परीक्षा तिथि बदलने के लिए दंगा करते हैं -"

क्या कुलपति महोदय को घेर लिया गया है | कुलपति महोदय एक छोटे नहीं काफी बड़े घेराव में घिर गई थीं | यह तब बिल्कुल स्पष्ट हो गया था | क्योंकि प्रांगण के एक किनारे खडे अपनी गाड़ी तक वह नहीं जा पा रही थी | प्रेमा दीवान को याद आया | इधर उधर फैलें विद्यार्थी इसी ताक में थी कि कब वे अपनी गाड़ी में बैठने के लिए नीचे उतरें और खबर उन्हें बुरी तरह घेर ले | उस समय पुलिस और छात्र एक दूसरे के साथ गले मिले दिखने लगे थे |''5

नई शिक्षा प्रणाली छात्रों को नए मूल्यों के विकास करने के लिए दी जाती है | लेकिन इस उपन्यास में यह तो अपने अध्यापक की मृत्यु तक उसे ले जाती है | ऐसी स्थिति कॉलेजों और विद्यार्थियों के भविष्य को अंधकार पूर्ण बनाती है | इसी तरह छात्र संघों का अत : पतन हो जाता है |

वे शिक्षार्थी को अवसरवादी बनाते हैं और उनका भविष्य बर्बाद हो जाता है |

3.3. नेतागिरी का प्रभाव

राजनीति का गलत प्रभाव कॉलेजों में प्रवेश पाने के समय से देखा जा सकता है | राजनीति विद्यार्थियों में झगड़े कराती है | हमारी शिक्षा में भ्रष्टाचार पनप रहा है | मीनारें उपन्यास की नायिका प्रेमा दीवान छात्रों से कहती है कि - " यह सब राजनीति है | अभी तुम नहीं समझती हो | पर जब समय निकल जाएगा | तब तुम समझोगी ,देखो , लग रहा है | शोर हो रहा है | जाओ, वह बाहर पहुंच कर उसे काबू करो | तुम समझदार लड़कियाँ हो | तुम्हारा अपनी छात्रा बहनों पर प्रभाव है | उन्हें समझा न कि वह ठीक समय पर इम्तिहान दे दें |"6 आज दादागिरी का प्रभाव छात्रों में फैल रहा है |

पथभ्रष्ट करने वाले गलत नेता का प्रभाव छात्र - छात्राओं पर अधिक पड़ता है | इस झगडे में वे नेतागिरी के माध्यम से छात्रों को भड़काकर अपना इरादा पूरा करते हैं |

3.4. पारिवारिक समस्या

पहले सम्मिलित परिवार में एक व्यक्ति का शासन चलता था | आज परिस्थिति बदलने से आवश्यकताएं बढ़ गयीं | इस कारण परिवार शुष्क होकर एकल परिवार बन जाता है | एकल परिवार में सब को अपनी अपनी जिम्मेदारियां होती हैं |पारिवारिक तनाव के कारण युवा वर्ग में संघर्ष होते रहते हैं |इसका उदाहरण अनेक उपन्यासों में हम देख सकते हैं | गिरिराज किशोर के ‘ यादना घर ‘ उपन्यास में विष्णु नारायण पर पूरा परिवार की जिम्मेदारी पड़ती है |

परिवारिक समस्या से वह उभर नहीं सका | रोगी बहन और उनकी दो लड़कियों की पढ़ाई की जिम्मेदारियॉ भी विष्णु नारायण पर है | विष्णु नारायण के छोटे बेटे के मानसिक विकास की कमी के बारे में जब डॉक्टर बताते हैं तो तब वह एकदम टूट जाता है |

‘ वैलेंटाइंस डे ’ नामक उपन्यास में युवा पीढ़ी की पारिवारिक समस्या का चित्रण है | इस उपन्यास के शालु , पिता के मरने के बाद अनाथ हुई | मां बूढ़ी हुई तो परिवार की जिम्मेदारी शालु पर पड़ी | आजीविका चलाने के लिए शालू अपने चित्र लेकर सड़क पर आई | इसी समय उसको कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा | पाश्चात्य संस्कृति ने एकांकी परिवार में रहने वाले युवक युवतियों पर अधिक प्रभाव डाला है | ‘मीनारें’ उपन्यास में मोहिनी खन्ना नामक एक छात्रा कॉलेज से

साइकिल चुराती है | पकड़े जाने पर पता चलता है कि उसको मानसिक बीमारी है | पिता के साथ वह अकेली रहती है | मां के मरने के बाद पिता उसकी हर इच्छा पूरा करते हैं | फिर भी उसे कोई कमी महसूस होती है | इस तरह वह मानसिक तनाव में पड़ती है और अपने कॉलेज से साइकिल चुराती है |

3.5. पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष

परिवार हमारे सामाजिक जीवन का मूल आधार है |आधुनिक समय में दोनों पीढ़ियों के चिंतन की प्रक्रिया में विरोध पाया जाता है | युवा पीढ़ी में व्यापक परिवर्तन दिखाई देते हैं | पुराने चिंतन और पुराने मूल्यों को युवा पीढ़ी नकारती है | इसलिए दो पीढ़ियों के बीच संघर्ष शुरू होता है | ‘अतिशय’ उपन्यास में मृदुला सिन्हा जी ने शिवानी के पिता और पति का संघर्ष दिखाया है | शिवानी

के पिता दार्शनिक शास्त्र के बहुत बड़े प्रोफ़ेसर हैं | अपने मत और दर्शनों को वे जामादा 'यति' पर टोपते हैं | ' यति' इससे असंतुष्ट है | वह अपने बलबूते पर खड़ा होना चाहता है |

यति अपने वस्त्र व्यापार में बहुत आगे बढ़ चुका है लेकिन शिवानी के पिता इससे संतुष्ट नहीं | ससुर के उपदेशों और पुराने खयालों को यति ठुकराता है | ' मीनारें' उपन्यास में भी हमें इसी प्रकार का चित्रण मिलता है | प्रेमा दीवान का कहना है - " दो पीढ़ियों के बीच कितना बड़ा अंतराल था | एक तरफ अपने सुख की कीमत पर परिवार की दरारों को भरने की कोशिश करती मां , और दूसरी तरफ सुख पाने की लालसा में परिवार से अलग हो जाने वाली बेटी | "7 इस उपन्यास में हम पीढियों के अंतराल की समस्या देख सकते हैं ।

3.6. आर्थिक समस्या

अनेक उपन्यासों में आर्थिक विषमता का चित्रण मिलता है | हम समाज में प्रचलित अनेक विसंगतियों का कारण आर्थिक विषमता मानते हैं | आधुनिक शिक्षा प्रणाली व्यवसायऔर वाणिज्य से कम संबंधी दिखती है | इसके फलस्वरूप बेरोज़गारी की समस्या सबसे बढ़ गई है | इस कारण युवा पीढ़ी के मन में कुंठा, निराशा और विद्रोही प्रवृत्ति की भावना उत्पन्न होती है | बेरोजगारी के कारण युवा वर्ग काफी पीडित हैं |

स्वतंत्रता संग्राम के समय सामाजिक और आर्थिक समस्या के कारण ग्रामीण जीवन में बेकारी अधिक बढी | 'रुहेलखंड का गांधी' नामक उपन्यास में इसका चित्रण हुआ है | गरीबी और बेकारी के कारण युवक चुन्ना का हाल बहुत बुरा हुआ था | कई दिनों तक वह घूमता रहा था | बाद में गुजराती चाचा की मदद से आगे बढ़ा | चाचा कहते हैं -" अच्छा तू बोल , तेरे पास पैसा नहीं

है | लेकिन तेरे चच्चा के पास बहुत पैसा है | हम तेरे को दो रुपइया देंगे | यह ले , लक्ष्मी मैया तेरे कृपा करेगा |" 8

बेकारी के एक कारण युवकों की सफेद पेशी या बाबूगिरी की भावना है | सभी युवक कुर्सी पर बैठकर हुकुम चलाना चाहते हैं | मेहनत के कामों की ओर नहीं जाना चाहते | परंपरागत धंधों से युवा भाग जाते हैं | धर्मेंद्र गुप्त के 'इसे विदा मत' कहो उपन्यास का नायक सुभाष कुमार आर्य है |वह एम. ए करने के बाद कॉलेज में काम करना चाहता था| उसने कहा था " मेरा भी कैसा भाग्य है | जब तक एम. ए. नहीं किया तो सोचता था , एम ए करने के बाद सब ठीक हो जाएगा | लेकिन अच्छी डिग्री होने के बाद भी नौकरी नहीं मिली | तीन साल से दिल्ली में फ्रीलांसर के रूप में पत्रकार रहा था | अभी नौकरी मिली तो भविष्य पर ही प्रश्न चिन्ह लग गया | ''9 कॉलेज में काम करने पर भी उसे वेतन

नहीं मिलता | माधव बाबू जैसे अध्यापक कुटीर व्यापार करके काम चलाते थे | यह देख कर सुभाष आर्य को बहुत दुख हुआ |

सर्वाधिक कठिन समस्या पढ़े लिखे युवकों की है | अपने को पढ़ा लिखा मानकर युवक यह समझ लेता है कि उन्हें सरकारी नौकरी मिलनी ही चाहिए | नरेंद्र कोहली के ' न भूतो न भविष्यति ' में नरेंद्र पढ़े लिखे होने के कारण छोटी मोटी नौकरी करना नहीं चाहता | स्कूल की नौकरी मिलने पर भी संतुष्ट नहीं था | कॉलेज में अध्यापक की नौकरी करना चाहता था | नरेंद्र बोला - " बात यह है मॉ कि मेट्रोपोलिटन इंस्टिट्यूशन की सुखिया स्ट्रीट वाली शाखा में एक अध्यापक का पद होने की संभावना है | किन्तु अगले महीने छापा कला में उनकी एक और शाखा भी खोलने वाली है | कुछ चर्चा ऐसे हैं कि वहां वह मुझे हेडमास्टर बना

देंगे " 10 | शिक्षा अब बेरोजगारी का कारण बन गया है | अशिक्षितों की संख्या शहर से अधिक गांव में है |इसलिए गांव वाले शिक्षा पर अधिक बल देते हैं |

भारत के गांवों में युवक अशिक्षितों के ढेर लगाये रहते हैं | ' इसे विदा मत कहो ' उपन्यास में राजस्थान के पिछड़े गांव का चित्रण है | गांव के लोग अपने बच्चों को पढ़ाने नहीं भेजते | उनका मत है कि पढ़ लिख कर क्या करेगा ? बेरोजगारी युवा वर्ग की सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्या है | नवयुवक इसी अवस्था में भड़क रहा है | इस तरह बेरोजगारी युवकों की सोच और आक्रोश को लेकर अनेक उपन्यास लिखे गए हैं | राजेंद्र मोहन भटनागर के ' वैलेंटाइंस डे' उपन्यास में इसका चित्रण है | शालू रोजगार के लिए अपने पेंटिंग बेचना चाहती है और संकट में पड़ती है ।

3.7. युवा पीढ़ी पर सोश्यल मीडिया का प्रभाव

युवा वर्ग बौद्धिक सुख संपत्ति के प्रति अत्यंत आकरषित हो जाते हैं। कंप्यूटर , मोबाइल फोन ,लैपटॉप , आई पैड , TV, इंटरनेट आदि का वह अधिक उपयोग करते हैं | इसके कई गुण हैं लेकिन अधिक युवक पर उसका दुष्प्रभाव ही पड़ता है | मनोज सिंह के ' हॉस्टल के पन्नों से ' , राजेंद्र मोहन भटनागर के ' वैलेंटाइन डे ' , इंदिरा राय के 'लक्ष्य वेद ', नमिता सिंह के ' लेडीज क्लब ' आदि उपन्यासों में सोशल मीडिया का गलत प्रभाव के शिकार वे कैसे हो जाते हैं इसका चित्रिण है | 'हॉस्टल के पन्नों से ' उपन्यास में तकनीकी संस्था विराट नगर कॉलेज के हॉस्टल में रहने वाले छात्रों की कथा है | दुष्यंत , प्रणव दा , आर पी यादव , मनोज आदि मित्र रैगिंग से बचने के लिए रात में फिल्म देखने जाते हैं | बाद में उन्हें फिल्म देखने की आदत पड़ती है | रात भर

वे लोग मोबाइल पर बातचीत करते रहते हैं | उसके बाद सुबह उनसे उठाये नहीं जाते | राजेंद्र मोहन भटनागर के ‘ वैलेंटाइन डे ’ उपन्यास में भी शालू नशे वालों की गिरफ्त में पड़ गयी थी | अपने चित्र बेचने के चक्कर में वह नशे वालों की शॉप तक पहुंचाई गयी | बाद में हिमांशु ने आकर उसे बचाया था | शालू अपनी पेंटिंग का सौदा करने गई थी | लेकिन दो युवकों ने उसे नशे की गोली कॉफी में मिलाकर दिया | इससे वह बेहोश हो जाती है | हॉस्पिटल में डॉक्टर का कहना है - “ गयी क्यों , पता कर लेना दा | नहीं मिस्टर हिमांशु , ऐसा करना यह पीढ़ी अपनी हिम्मत मानती है | और उसके बाद भी सुधरेगी नहीं | दलदल में फस दी जाएगी |” 11 युवकों को आर्थिक सहायता देकर उसे नशे की ओर ले जाने के लिए लोग कोशिश करते हैं ।

सूचना क्रांति का मुख्य सामाजिक केंद्र युवा लोग हैं | युवा वर्ग अब ज़्यादा समय कंप्यूटर पर व्यस्त रहते हैं |इस के कारण वे परिवार के लोगों से अलग होते हैं | वे सामाजिक और पारिवारिक कार्यों से कट्ने रहते हैं और अपने सुख के लिए वे लोग ऑनलाइन में शामिल हो जाते हैं | इसके द्वारा युवा लोग गलत प्रेम संबंध में पड़ जाते हैं | युवा पीढ़ी अब बिना किसी समझौता करके बंधन मुक्त जीवन जीना चाहती है | इसका उदाहरण अनेक उपन्यासों में हम देख सकते हैं |

इंदिरा राय के ' लक्ष्य वेध ' उपन्यास में युवा पीढ़ी पर आधुनिकीकरण का असर चित्रित हुआ है | डॉक्टर मनोरमा सक्सेना जब प्रोफैसर द्विवेदी से बातें करते तो यह बात सपष्ट हो जाती है - " डॉक्टर साहब बीस वर्ष से यही है | अमेरिकी नागरिकता ले ली है | बच्चे बड़े होकर यहां की संस्कृति में रज बस

गए हैं | सब के अलग - अलग अपार्टमेंट है | वीकेंड में मिलने आते हैं | वह भी तब जब उनका कोई कार्यक्रम ना हो | युवा पीढ़ी आधुनिकता की ओर इतनी प्रभावित हो रही है कि उन्हें अपने माता पिता तक एक बोझ सा बन गया है |"12

युवा वर्ग कंप्यूटर का उपयोग ईमेल , समाचार , चैटिंग , खेल , टाइपिंग आदि के लिए करते हैं | इंटरनेट से दुनिया भर की सभी जानकारियां मिलती हैं |लेकिन कुछ लोग इसका गलत इस्तेमाल करते हैं |अपना समय युवा वर्ग साइबर कफे में बिताना चाहते हैं | वहां अश्लील वेबसाइट में जा कर राह भटक जाते हैं| ' लेडीज क्लब ' में नमिता सिंह ने इसके बारे में जिक्र किया है | शौकत मिया की बेटी गजाला अमेरिका में पली पड़ी है |

दो विपरीत धाराओं के बीच जूझ रहे शौकत मिया जब भारत लौटना चाहते हैं तो गजाला मना करती है | वह अपने बॉयफ्रेंड के

साथ जाना चाहती है | गजाला कहती है - “ आयाम ओरफन , आई हैव नो पेरेंट्स | वह सचमुच अपने मां बाप को अपने से अलग कर देना चाहती थी | साइक्याट्रिस्ट कहते हैं कि शि इसे ए प्रॉब्लम चाइल्ड । ऐसे युवा प्रॉब्लम चाइल्ड बन जाता है ”13 |

3.8. युवा पीढ़ी पर रोमांस का प्रभाव

आधुनिक काल में युवा पीढी में स्वच्छंद प्रेम की समस्या दिखाई देती है | युवक और युवती अब साथ - साथ शिक्षा और नौकरी करते हैं | अपने जीवनसाथी को चुनना चाहते हैं | माता पिता को पहले की तरह जिम्मेदारी नहीं देते | आज युवतियॉ स्वच्छंद प्रेम की समस्या की शिकार हो गई हैं | ‘इसे विदा मत कहो’ उपन्यास की लक्ष्मी इसका उदाहरण है | मिस्टर आर्य से वह बहुत प्यार करती है | लेकिन उसके घर परिवार के बारे में कुछ नहीं जानती | वह उनसे यौन संबंध भी जोड़ती है | बिना विवाह करके इस

अवैध संबंध से उसका जीवन बर्बाद हो जाता है |

इसके साथ ' वैलेंटाइन डे ' उपन्यास में शालू और हिमांशु का प्रेम संबंध भी टूट जाता है | शालू अपनी कैरियर के लिए विदेश चली जाती है। बाद में हिमांशु अपने प्रोफेसर मिस वेस्ट वुल्ला के साथ संबंध जोड़ता है । इस तरह युवा पीढ़ी पर रोमांस का प्रभाव अधिक होता है और उसके जिंदगी बदल जाती है |

3.9.युवा पीढ़ी पर अनुशासन का अभाव

छात्रों को अनुशासन के महत्व को समझे बिना सफलता प्राप्त नहीं होती | आजकल अनुशासन का स्तर काफी गिर गया है | अनुशासनहीनता के अनेक कारण हैं | आधुनिक युग में माता पिता को अपने संतानों को देखने तक का समय नहीं मिलता | इसके कारण बच्चों में असंतोष बढ़ता है |' मीनारें ' उपन्यास में इसका जिक्र किया गया है | छात्रावास में 'रेशमा ' नामक

लड़की गायब हो जाती है | हॉस्टल के नए कर्मचारी सुमनगला यह बात प्रेमा दीवान को बताती है | सुमन कहती है- " रेशमा नाम की कोई लड़की कल रात हॉस्टल नहीं लौटी है |

हाजिरी लेते समय दूसरी छात्राओं ने बताया कि "मेरे आने से पहले मुख्य वार्डन की अनुमति के बिना वह नगर में रहने वाले अपने प्रेमी के यहां गई | " 14 घर पर पूछने से पता चला कि मां बाप के झगड़े के कारण वह अलग रहती है |

आज की शिक्षा प्रणाली छात्रों की बढ़ती हुई आकांक्षाओं तथा मांगों को दिशा देने के लिए पर्याप्त नहीं है | उन्हें डिग्रियां तो हासिल होती हैं | लेकिन नौकरी में वे असफल हो जाते हैं | अपने परिवार के बोझ के कारण वे टूटते हैं | 'न भूतो न भविष्यति ' में विवेकानंद कहता है - '' आप लोगों को यहां शिक्षा का अभाव नहीं है | आप पढ़ी लिखी विदुषियां है , फिर भी मैं यह क्या देख रहा हूँ

कि समाज में भेदभाव बहुत है | शिक्षा ने सबको समान नहीं बनाया है , भेद को बढ़ाया है |इसका अर्थ है शिक्षा का सदुपयोग नहीं हो रहा है |" 15 शिक्षा संस्थानों की घिनौनी राजनीति और गैर जिम्मेदारी अध्यापकों की लापरवाही के कारण छात्रों की बूरी दशा हो जाती है | वे नशा , आतंकवाद आदि की ओर बढ़ गये हैं | ऐसे ही छात्रों की अवस्था को उपन्यासकार गिरिराज किशोर ने ' यातना घर ' में चित्रित किया है | विद्या परिषद के शिक्षा संस्थान में संगीत यामिनी के आयोजन में कुछ लड़कों ने लड़कियों के साथ अभद्र व्यवहार किया था | इन लड़कों के कारण विष्णु नारायण की नौकरी खतरे में पड़

जाती है | उचित शिक्षा के विस्तार के अभाव में पीढ़ी संघर्ष जोर पकड़ता जा रहा है | आज नई पीढ़ी इन दिशाहीन स्थिति का दंश झेल रही है |

3.10. नशे की ओर लगाव

भारत में मदिरापान एक बड़ी समस्या है | इसका प्रयोग युवा वर्ग में अधिक पड़ गया है जिसके कारण युवा वर्ग पतन की ओर जा रहे हैं | आधुनिक युग में युवा लोगों को अनेक प्रकार के तनाव के बीच गुज़रना पड़ता है | इन तनाव से मुक्ति पाने के लिए वे लोग नशे का इस्तेमाल करते हैं | शराब , बांग , सिगरेट. हिरोइन आदि का इस्तेमाल करके युवा वर्ग होश खो बैठते हैं | आज भारत में मुंह और गले का कैंसर इसके इस्तेमाल से अधिक होता है |

सरकार तथा गैर सरकारी संगठनों की कोशिशों के बावजूद भी इसका इस्तेमाल युवकों पर अधिक बढ़ गया है |मीडिया द्वारा इस से होने वाले खतरों से युवकों को अवगत कराना चाहिए | समाज में नशे को लेकर जागरूकता का अभियान चलाना चाहिए जिससे हमारी युवा पीढ़ी इसके नुकसान को समझ सके |

दिशाहीन युवक कुछ सोचे बिना अपना ही नुकसान कर बैठता है | वह नशीली हो गया है | नशे के कारण आवारा भी हो गया है | शशिप्रभा शास्त्री के ‘ मीनारें ’ उपन्यास में प्रेमा दीवान को ऐसी छात्राओं का सामना करना पड़ता है | एक छात्रा कॉलेज में आ कर ड्रग्स लेकर पूरी नशा में गुम जाती है | प्रेमा दीवान को प्रिंसिपल होने के कारण उससे निपटना पड़ता है | पूछने पर पता चलता है कि उसकी मां मर गई है | पिता के लाड प्यार ने उसे ऐसी हालत पर रखा है | नशा युवा वर्ग को खोखला कर रहा है इसलिए युवा वर्ग अनैतिक राह की और बढ़ रहे हैं |

‘इसे विदा मत कहो ’ उपन्यास और ‘वैलेंटाइन डे’ उपन्यास में हम यह देख सकते हैं | इसमें युव वर्ग नशे के इस्तेमाल से भड़क जाते हैं और अपनी जिंदगी बर्बाद कर देते हैं |

जब युवक गलत लालन पालन और गलत संस्कार में पडता है तो प्रत्येक समाज का दायित्व है कि उसे सही रास्ता दिखाना |

3.11. युवा पीढ़ी में यौन समस्या

यौन भावना को लेकर युवकों में अनेक समस्याएं होती हैं | आधुनिक काल में युवक युवतियां अपनी पसंद के साथी के साथ प्रेम विवाह करते हैं और घर से भाग जाते हैं | आजकल युवक युवतियां एक साथ शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश करते हैं | व्यवसाय और नौकरी एक साथ करते हैं | एक साथ रहने पर शारीरिक आकर्षण उनमें होता है | यह समस्याएं कई बार पति-पत्नियों के बीच में भी देखने को मिलती हैं | आजकल युवतियॉ ऐसे कामुक वस्त्रों को पहनती हैं कि उनकी ओर युवक आकृष्ट हो जाता है और अपनी शारीरिक काम पिपासा को शांत करने हेतु वह उनसे अवैध संबन्ध जोड़ता है ।काम' के सम्बन्ध में अतिशय उपन्यास

में त्रिपदीजी कहते है -'' काम अत्यंत हतवपूर्ण पुरुषार्थ है | इसलिए कि मनुष्य को इस पर विजय प्रप्त करनी पड़ती है, अंकुश रखना पड़ता है |जैसे सुख के साथ दु:ख है वैसे ही ' काम ' जीवन और मृत्यु - दोनों से युक्त है | 'काम ' का भद्रा रूप जीवन और अभद्र रूप मृत्यु है |''16

समय परिवर्तन होने के साथ-साथ युवा पीढ़ी की यौन मनसिकता में भी बदलाव आ रहे हैं |विवाह पूर्ण यौन संबंध में अधिक बढ़ावा हो रहा है | मूल्य परिवर्तन, रोमांटिक प्रेम आदि एसी समस्या को बढ़ाने का कारण बन जाते हैं | युवा पीढ़ी विवाह से पूर्व यौन संबंध स्थापित करना अनैतिक नहीं समझती | 'इसे विदा मत कहो' उपन्यास में मिस्टर आर्य लक्ष्मी के साथ विवाह पूर्व यौन संबंध रखता है |

पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव युवा पीढ़ी पर बड़ी तेजी के साथ हो रहा है | युवा वर्ग परिवार में माता पिता की आज्ञा की अवहेलना करते हैं | सहशिक्षा के कारण और पाश्चात्य जीवन मूल्यों से वे प्रभावित होते हैं ।

युवक युवतियां काफी समय एक साथ रहते हैं और एक दूसरे की ओर आकर्षित होते हैं | 'इसे विदा मत कहो ' उपन्यास में आर्य और लक्ष्मी को लेकर ऐसा एक प्रसंग है | मिस्टर आर्य लक्ष्मी को पढ़ाने के लिए घर आता है लेकिन घर में कोई न होने के कारण वह लक्ष्मी की ओर उन्मुख हो जाता है | वह लक्ष्मी से यौन संबंध जोड़ता है | दोनों को उस बात पर कोई दु:ख नहीं होता

3.12 .युवा पीढ़ी और नई भाषा

भारत में युवा पीढ़ी नई-नई भाषाओं के साथ बदलती जा रही है | धीरे-धीरे राजनीति, फिल्में, नाटक आदि के क्षेत्र में अंग्रेजी की घुस पेट बढ़ती जा रही है | हिंदी भाषा के साथ अंग्रेजी में ज़्यादा प्रयोग आते हैं |

अखबारों और टीवी चैनलों में अब आसान और समझ में आने वाली भाषा हिंदी और अंग्रेजी का मिला-जुला रूप है | मृदुला सिन्हा के 'अतिशय' और राजेंद्र मोहन भटनागर के 'वैलेंटाइंस डे' आदि उपन्यासों में ऐसी भाषा का प्रयोग है |

सूचना क्रांति ने कंप्यूटर ,मोबाइल ,इंटरनेट और हमारी मीडिया को प्रभावित किया है | बाजार में मीडिया विज्ञापन की भाषा में अपना माल बेचने की कोशिश कर रही है | इसका असर युवकों पर पड़ता है | वे ऐसी भाषाओं का प्रयोग अधिक करते हैं जिन में अंग्रेजी भाषा के शब्ध अधिक हैं | अंग्रेजी भाषा के साथ-

साथ युवक पश्चिमी दुनिया की ओर बढ़ रहा है | यह दौर बहुत सारी उदल पुतल का है | पुरानी सोच पीछे छूटती जा रही है | ऐसे हालात में नई भाषा का विकास हो जाएगा ।

3.13. बाज़ारवाद और युवापीढी

आज बाज़र का पकड़ जीवन के हर क्षेत्र में हम देख सकते हैं | बाज़ार का सबसे ज़्यादा असर युवा पीढ़ी पर होता है | कंप्यूटर और इंटरनेट के यह युग ग्लामर और आकर्षण से भरा है | इन सब का बुरा असर बस ज़्यादा युवा पीढ़ी पर पड़ता है | ऐसे युवकों की जिंदगी का चित्रण अनेक उपन्यासों में किया गया है | युवा पीढ़ी पर सौंदर्य मूलक और चमकीला वस्तु का अधिक प्रभाव पड़ता है | मीडिया में सब कहीं विज्ञापन है | अमृतलाल नागर के 'पीढ़ियां ' उपन्यास में विज्ञापन से मीडिया का बुरा असर युवा पीढ़ी पर कैसे पड़ता है इसका चित्रण मिलता है | युधिष्ठिर एक

प्रसिद्ध वर्तमानपत्र के रिपोरटर हैं | वर्तमान दुनिया विज्ञापन की है | असत्य को यथार्थ में बनाने में विज्ञापन का हाथ बहुत बड़ा है |

इसके लिए मीडिया फिल्मी और खेल जगत के लोगों का इस्तेमाल करती है | इसे देखकर युवा लोग बिना सोचे-समझे अनुकरण करते हैं | आजकल मीडिया में आने वाले ज़्यादातर विज्ञापन युवकों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाते हैं | युवक जो भी नया है उसकी ओर आकर्षित होते हैं | युवा वर्ग ने अपने जीवन के सभी स्तरों का विकास किया है | आजकल प्रेम , मोहब्बत, प्यार आदि का भी अर्थ बदल गया है | 'वैलेंटाइन डे' उपन्यास में हिमांशु और शालू का प्यार भी ऐसा ही है | शालू को विदेश जाने का आवसर मिला तो वह हिमांशु को छोड़ कर चली जाती है |

हिमांशु भी शालु से कोई प्रतीक्षा नहीं रखता | शालू को न मिलने पर वह मिस वेस्ट वुल्ला के साथ प्रेम संबंध रखने की कोशिश करता है |

3.14. उत्तर आधुनिकता से प्रभावित युवा पीढ़ी

आज उत्तर आधुनिकता का युग है | इस युग में संबंधों का स्थान लुप्त होता जा रहा है | युवा लोग किसी भी प्रकार के उत्तरदायित्व लेने के लिए तैयार नहीं | वे लोग एक स्वतंत्र जीवन शैली को अपनाने की कोशिश करते हैं जिसके परिणाम स्वरूप लिव इन रिलेशनशिप का समाज में प्रबलता मिलती है | इसका मुख्य कारण पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव ,मूल्यों की क्षति , संबंधों में आए बदलाव ,औद्योगीकरण , सिनेमा , विज्ञापन आदि हैं |

इन सब का प्रभाव सबसे अधिक युवा वर्ग पर पड़ता है | युवा वर्ग से सारे मानवीय गुण नष्ट हो गए हैं | पारिवारिक संबंधों में

भी बदलाव आया है | धन कमाने और बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए वे वृद्ध मां बाप को घर में छोड़कर विदेश चले जाते हैं | उत्तर आधुनिक मानसिकता के कारण बुरा प्रेम संबंध और गर्भपात बढ़ते हैं | इस प्रकार युवा लोग सारे मानवीय मूल्य नष्ट कर भटक रहे हैं |

'इसे विदा मत कहो' नामक उपन्यास में लक्ष्मी और मिस्टर आर्य के साथ विवाह पूर्ण यौन संबंध होता है लेकिन दोनों में कोई पश्चाताप नहीं होता | मिस्टर आर्य अपनी शुभ जिंदगी के लिए शहर चला जाता है | लक्ष्मी गांव में उसका इंतजार करती रहती है |

3.15. गांव और शहर की युवा पीढ़ी की समस्या

आधुनिक युग में परिस्थितियॉ तेजी से बदल रही हैं | आज गांव की अपेक्षा शहर में विकास अधिक हो रहा है | लेकिन गांव के

युवकों को भी अनेक समस्याओं से गुजरना पड़ता है | गांव में शिक्षा का न मिल पाना ,नौकरी का कम होना ,आर्थिक स्थिती से कमज़ोर होना , स्वास्थ्य की कमज़ोरी , कम उम्र में विवाह जाति एवं धर्म की रूढि आदि समस्याएं हैं |

'रुहेलखंड के गांधी ' उपन्यास और 'इसे विदा मत कहो' उपन्यास में गांव के युवकों की दयनीय स्थिति का चित्रण गया किया है |गांव की अपेक्षा शहर में युवकों को काफी सुविधाएं उपलब्ध हैं | शहर में युवक युवतियां पढ़े लिखे होने के कारण काफी बदलाव आते हैं | इसलिए वे लोग प्रेम में स्वतंत्र रहकर यौन संबंध को जोड़ना चाहते हैं | माता पिता की सहायता के बिना वे लोग आगे बढ़ना चाहते हैं |

‘ वैलेंटाइन डे’ उपन्यास में हिमांशु और शालू की अवस्था ऐसी ही है | अपनी जिंदगी वे लोग गुप्त बनाना चाहते हैं | इसलिए अपने प्रेम को ठुकराते हैं । नौकरी पाने के लिए शहरी युवा पीढ़ी अपना सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार हैं | शालू अपनी पेंटिंग्स बेचने के चक्कर में गलत लोगों के हाथ में पड़ती है | उसे नशे की गोली भी दी जाती है |

उपसंहार

हिंदी उपन्यास में बदलती परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार की समस्याओं का चित्रण मिलता है| भूमंडलीकरण के युग में मानवीय मूल्य में भी बदलाव आ रहे हैं | युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव अधिक है | शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी युवजनों के सामने अनेक समस्याएं आती हैं | कुछ युवक इन समस्याओं को जान कर भी उन से मुंह मोड़ कर आगे बढ़ते हैं |

कुछ समस्याओं का खुले दिल से सामना करते हैं | उनका समाधान भी करते हैं | फिर भी कुछ लोग जिंदगी से छुटकारा पाना चाहते हैं | ऐसे युवक आतंकवादियों के जाल में और नशे में पड़ जाते हैं |

हिंदी उपन्यास में युवा पीढ़ी की बेरोजगारी की समस्याओं को लेकर अनेक उपन्यासकारों ने रचना की है | शिक्षित होने पर भी युवा पीढ़ी नौकरी की तलाश में भटकती रहती हैं | इसका नमूना 'मीनारें', 'दीक्षा ', 'इसे विदा मत कहो' आदि उपन्यासों में है | इसके साथ युवा पीढ़ी की दिशाहीनता और अनुशासनहीनता का भी चित्रण हुआ है | छात्र आंदोलन युवा पीढ़ी पर शिक्षा के समय बहुत असर डालते हैं | युवा पीढ़ी में नेतृत्व आदि गुण होने पर भी सही मार्गदर्शन के अभाव में उनकी पढ़ाई रुक जाती है | राजनैतिक दल युवा पीढ़ी के जोश का गलत इस्तेमाल करते हैं

और उसे अपने शिकंजों में बसाते हैं | इसके साथ के संघर्ष का भी उसको सामना करना पड़ता है | सोशल मीडिया का प्रभाव युवा पीढ़ी पर अधिक दिखाई देता है | इसके कारण उनकी मानसिकता में भी बदलाव आते हैं | पारिवारिक समस्याओं ने भी युवा पीढ़ी के जीवन को बदल दिया है | इस तरह देखा जाए तो युवा पीढ़ी के सामने अनेक समस्याएं हैं | उन्हें नई राह दिखाने की जिम्मेदारी समाज को ही है |

संदर्भ ग्रन्द सूचि

1. मृदुला सिंहा ,अतिशय .पृ- 2

2, सूर्यबाला , दीक्षांत, पृष्ठ- 8

3. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति,पृ- 399

4. श्री योगेंद्र शर्मा , रुहेलखंड का गांधी, पृ-199

5. शशिप्रभा शास्त्री , मीनारें , पृ -118

6. शशिप्रभा शास्त्री, मीनारें, पृ-125

7. शशिप्रभा शास्त्री ,मीनारें ,पृ- 86

8. योगेंद्र शर्मा, रुहेलखंड का गांधी, पृ -114

9. धर्मेंद्र गुप्त ,इसे विदा मत कहो , पृ-22

10. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति,पृ- 106

11. राजेंद्र मोहन भटनागर, वैलेंटाइंस डे पृ-41

12. इन्दिरा राय, लक्ष्य वेध ,पृ 48

13. नमिता सिंह ,लेडीज क्लब, पृ-102,

14. शशिप्रभा शास्त्री ,मीनारें,पृ-80

15. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति,पृ- 495

16. मृदुला सिंहा ,अतिशय .पृ- 206

अध्याय - 4

चर्चित उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण के मार्ग - लेखकीय सोच

युवावस्था में व्यक्ति का शारीरिक और मानसिक विकास हो जाता है | व्यक्ति की शारीरिक और मानसिक शक्ति प्रखर, प्रबल और सदा संवेदनशील रहती है | चिंतन, चेतना और कर्म के स्तर पर युवा पीढ़ी को प्रबुत्व बनाने की प्रक्रिया को युवा सशक्तीकरण कहते हैं|

कुबेरनाथ राय ने युवा विशेषताओं का प्रतिपादन करते हुए कहा है -“ जो सतर्क है , सृष्टि करता है , वह निश्चय ही चिरयुवा होगा | जवानी एक चमाचम धारदार गडक है।’’ 1 सशक्तीकरण ‘ एंपावरमेंट ’ शब्द का हिंदी अनुवाद है | किसी भी संज्ञा या सर्वनाम के मूल गुणों को उभारकर शक्तिप्रदान करना ही सशक्तीकरण है |

संसार के प्राचीन वेद , शिक्षा आदि से युवकों को निर्देश मिलते हैं | वे युवा पीढ़ी को संस्कारित कर सकते हैं

और उन्हें मानवीय और सामाजिक गुणों से भर सकते हैं | वैदिक ऋषियों ने अपने मनन , चिंतन और अध्ययन से युवकों के लिए कई गुणों को आवश्यक बताया है | उनमें पहला गुण है ' साधनी' बनना| इसका अर्थ है माता पिता की आज्ञा के अनुसार पारिवारिक दायित्व का निर्वहन | दूसरा गुण 'वितन्य' होना बतलाया गया है |

गांव के लोगों द्वारा सामाजिक और धार्मिक उत्सवों के सामूहिक आयोजन को हम वितन्य कहते हैं | इस में भाग लेने से युवा वर्ग में निर्णय लेने और उन्हें पूरा करने की शक्ति विकसित होती है | इसमें युवकों का तीसरा गुण 'सभेय' होना माना गया है | इसमें सभा में कैसे बोलना चाहिए , कैसे अपनी संवेदनाओं का पालन करना है आदि

का ध्यान होता है ।चौथा गुण ‘ पितृ श्रवण ’ होना है | इसका अर्थ है माता पिता का अनुसरण करना ।

साहित्य में युवा सशक्तीकरण का अभी महत्वपूर्ण स्थान है | इसमें युवा जीवन के हर पहलुओं का चित्रण होता है | यहाँ उनके जीवन के शारीरिक , मानसिक सामाजिक , राजनीतिक ,आर्थिक , मनोवैज्ञानिक आदि सभी क्षेत्रों की समस्याएँ उठाई जाती हैं ।

सोलह से लेकर चालीस की उम्र के व्यक्ति युवक और युवतियां होते हैं | युवक देश की आशा होता है | वह भारत को हर क्षेत्र में जीतता और आगे बढ़ता देखना चाहता है | आज के युवक अपने मनपसंद क्षेत्र में पाव रखकर कुछ कर गुज़रने चाहते हैं | युवकों की शारीरिक एवं मानसिक शक्ति समाज के अन्य सभी वर्गों से अधिक होती है |

इसलिए उनके दायित्व भी आधिक होने चाहिए| सूचना, तकनीकी ,दूरसंचार आदि क्षेत्र में अब प्रगति हुई है | यह युवापीढ़ी के प्रयासों का नतीजा है |

4.1.युवकों का स्वतंत्र चिंतन

सामाजिक अनुबंधन युवाओं के व्यक्तित्व और मानसिकता के अंग बन जाते हैं | उनके व्यवहार पर प्रभाव डालते हैं | युवको में सशक्तीकरण की शुरुआत सबसे पहले अपने व्यवहार और दृष्टिकोणों में परिवर्तन से होता है | इसका अर्थ यह है कि सर्वप्रथम युवकों की चेतना को ही बदलना चाहिए |' न भूतो न भविष्यति ' में नरेंद्र कोहीली जी ने विवेकानंद के चरित्र का अकंन किया है | विवेकानंद का मूल उद्देश्य समाज और देश का उद्धार करना था | उनके व्यक्तिगत आग्रह उसके लिए कभी बाधक नहीं बनते थे |

तभी तो उन्होंने युवकों से ऐसा कहा कि घर बैठकर गीता पढ़ने के बदले मैदान में फुटबॉल खेल कर अपने आप ईश्वर को जल्दी प्राप्त कर सकेगा | उसे अपनी आत्मा का स्वर सुनाई पड़ रहा था -" परिवार के पालन, पोषण और जीवन के सुख भोग के लिए तेरा जन्म नहीं हुआ है | यह संसार तेरा प्राप्त नहीं है | तुझे इसके पार जाना है | तुझे माया की इस यवनिका के पार उस माया पति का साक्षात्कार करना है |वह गृह पालन से नहीं ,गृह त्याग से होगा । तुझे अपने पितामह के सामान गृह त्याग करना है । सन्यासी होकर तपस्या करनी है |" 2 इस रास्ते पर चलकर विवेकानंद ने युवा पीढ़ी के लिए तर्कशीलता और संतुलित व्यवहार बुद्धि का आह्वान दिया |

अपने परिश्रम से विश्व विद्यालय की कुलपति बनने वाली महिला की कहानी है 'लक्ष्य वेद' | इंदिरा राय ' लक्ष्य वेद ' में मनोरमा नामक एक सशक्त नारी की कहानी कहती हैं | साधारण परिवार में रहने वाली मनोरमा कृषि विश्वविद्यालय की कुलपति बन जाती हैं | मनोरमा मुश्किल वक्त में अपने आप को जगाने के लिए कहती थी - " डॉक्टर मनोरमा सक्सेना ! तुम्हारे भाग्य में ऐसा पलायन कहॉ तुम्हें संघर्ष करना है अपने को बनाए रखने के लिए । कब कहॉ से आक्रमण हो जाए , इसका यदि पूर्वानुमान लगाकर काट न सोच पाई तो , हो चुकी तुम्हारी जीत |" 3

अंग्रेज़ी के महान चिंतक बर्ट्रेंड रसेल का कहना है - " श्रेष्ठ जीवन जीने वाले लोगों का जीवन यदि सामान्य प्रसिद्धि से हीन है , तो उन्हें इस बात से डरने की जरूरत

नहीं है कि उनका जीवन व्यर्थ जाएगा | उनके जीवन से एक ऐसा प्रकाश निकलता है, जो उनके मित्रों आसपास के लोगों का मार्गदर्शन करता है | युगों - युगों तक | ” 4

ऐसे ही एक साधारण आदमी के अपने कर्म से एक महान व्यक्तित्व बन जाने की कहानी है योगेंद्र शर्मा का उपन्यास ‘रुहेलखंड का गांधी’ | गरीबी से लड़कर चुन्ना मियां एक पूरे शहर के नहीं राज्य के लिए अच्छा नमूना बन जाते हैं | फेरी लगाने वाला चुना मियां गांव में सड़क , मंदिर , अस्पताल , स्कूल आदि का निर्माण बिना किसी झुकाव से कर लेते हैं |

मृदुला सिन्हा जी का ‘अतिशय ’ नामक उपन्यास का नायक भी एक सशक्त युवक का प्रतिनिधित्व करता है | अपने पिता के मरने के बाद वह उसका वाणिज्य आगे बढ़ाता है |

वह कपड़े व्यापार की दुनिया में स्थान प्राप्त करता है | यति ने एक संकल्प किया है - " मेरे पिता की जो इतिहास खंडा था , उसका एक हिस्सा मैं भी बनूंगा | कपड़ा उद्योग में ऐसा नाम कमाऊंगा कि लोग याद करें " 5 | उनका संकल्प सच हुआ | यति ने अपने व्यापार में ऐसी उन्नति प्राप्त की कि उसके आगे कुछ नहीं होता | उन्होंने कई युवकों को नौकरी भी दिलाई| अपने आत्म विकास के साथ साथ यति पूरा राष्ट्र का विकास चाहता है । उसके लिए युवकों की आवश्यकता है | यति कहता है - " मैं समझता हूँ , मिल मालिकों के संगठन को पुनर्जीवन करना होगा | इस उद्योग में नई पीढ़ी आ गई है | अधिकतर नौजवानों का सोच विचार नया

है |पुरानी से नहीं चलेगा | अब सरकार ने इस उद्योग पर ध्यान देना शुरू किया है | नव जवानों के लिए विशेष पढ़ाई शुरू कर दी है | मैं बनाऊंगा संगठन | लेकिन इसके लिए विशेष समय चाहिए |" 6 यति युवकों के वाणिज्य बढ़ाने के लिए संगठन कराना चाहता है | स्वयं अवरोध होने के साथ साथ यति दूसरे युवकों को आगे बढाने का रास्ता देता है ।

4.2. मानवीय मूल्योन्मुखी शिक्षा

समय और देश काल में परिवर्तन के साथ मूल्यों में भी परिवर्तन होता है । वैज्ञानिक तकनीकी युग में मूल्यों का पतन हो रहा है | इन मूल्यों पर ही समाज , राष्ट्र और मानवता का विकास है | युवकों के अंदर मानवीय भाव तभी पैदा होगा जब वह मूल्यों को अपने जीवन में आत्मसात कर लेता है |

'न भूतो न भविष्यति' में शिक्षा के सम्बन्ध में विवेकानंद कहता है - " समाज श्रेष्ठ ढंग से शिक्षित हो | उसके मूल्य उदात्त हो |वह धर्म और जीवन के मर्म को समझते हो | प्राचीन काल में शिक्षा की अच्छी व्यवस्था थी | शिक्षा का काम आश्रमों में होता है | आश्रम का कुलपति एक ऋषि था | उसका सम्मान राजा भी करता था | आश्रम में प्रवेश करने से पूर्व राजा अपने शास्त्र तथा अपना वाहन त्याग देता था | ऋषि के संम्मुख सिर झुकाकर उन्हें प्रणाम करता था और उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करता था | प्राचीन काल में जब आश्रमों में सहशिक्षा प्रणाली फलफूल रही थी , स्त्रियों को शिक्षा की समस्त सुविधायें प्राप्त थीं | भारतीय ऋषियों के विवरणों में महिला ऋषियों का भी महतवपूर्ण स्थान है '' | 7 ठाकुर के रोग जानकर हताश हुई शिष्यों को विवेकानंद उपदेश देता है

-" ठाकुर को जो भीषण व्याधि हुई है , उससे उन्होंने शरीर छोड़ने का संकल्प किया है या नहीं , कौन कह सकता है |समय रहते उनकी सेवा और ध्यान भजन करके,जहां तक हो सके आध्यात्मिक उन्नति कर लो ,नहीं तो उनके चले जाने पर पश्चाताप की सीमा नहीं रहेगी | यह काम हो जाए तो भगवान को पुकारूंगा |'वह काम हो जाए तो साधना भजन में लगूगॉ' | इस प्रकार तो समय बीतता जा रहा है और हम वासना के जाल में झकड़ते जा रहे हैं | इस वासना का ही तो परिणाम सर्वनाश और मृत्यु है - वासना का त्याग करो , त्याग करो |" 8

व्यक्ति का मानवीय व्यवहार मूल्यों पर निर्भर रहता है | युवकों के अंदर कई कार्य करने की क्षमता तभी विकसित होगी जब उसको अपना व्यवहार मनसा वाचा

करमणा एकता से करना होगा | मूल्यों से युवकों का मानवीय होने का पता चलता है | मानवीय व्यवहार से लोगों का जीवन सफल और उच्च बनता है। नमिता सिंह के

‘ लेडीज क्लब ’ नामक उपन्यास में समाज के लिए काम करती युवतियॉ दिखाई देती हैं |‘लेडीज क्लब’ में कुलसुम बेन नामक एक युवती थी | वह शादी के बाद कुलसुम बेन यूनियन स्कूल में पढ़ाती है और शहर के नौजवानों को सही रास्ता दिखाने की कोशिश करती है |वह रजा इमाम साहब से कहती है -“ नहीं भाई ,बात इतनी सीधी नहीं है | डेरी समथिंग सीरियस | हमें इन लड़कों की ओर ध्यान देना चाहिए | इन्हें कुछ क्रिएटिव काम में लगा लो | वरना तबाह हो जाएगा ये बच्चे | ” 9

एक व्यक्ति के मूल्यों पर आधारित है उसकी शिक्षा, बौद्धिक स्तर और समाज की स्थिति । अगर हम युवकों को प्रारंभ से ही सकारात्मक दृष्टि से मूल्यों की ओर प्रेरित किया जाए तो युवक प्रभावशाली सिद्ध होगा | 'अतिशय' उपन्यास में यति के दोस्त रजनीश युवकों को आर्थिक विकास के साथ साथ बौद्धिक विकास की भी ज़रूरत को समझाता है ।

रजनीश कहता है - " देश को आर्थिक विकास के साथ साथ बौद्धिक विकास की भी ज़रूरत है । ज़रा सोचो, किसी व्यक्ति का शरीर तो खूब फूल जाए और सिर बिल्कुल छोटा हो तो कैसा बेंढगा दिखेगा | वैसे भी बिना बौद्धिक विकास के आर्थिक विकास संभव ही नहीं है |''10

इस तरह रजनीश यति और उसकी पत्नी शिवानी से अपना मत प्रकट करता है |रजनीश एक बड़ा दार्शनिक है | वह भारत के साथ साथ अन्य देशो में भी अपने भाषण से युवकों को प्रेरित करता है |

वर्तमान युग में सबसे जरूरी कार्य युवा एवं छात्रों को उनके विकास के लिए पर्याप्त साधन उपलब्ध कराना है | तभी युवकों के अंदर कुछ सीखने की भावना जागृत होगी | इससे युवा पीढ़ी की शिक्षा का औचित्य प्रासंगिक होगा |

युवकों को शिक्षा के द्वारा सुसंस्कृत और सुनागरिक बनाया जा सकता है |

‘ इसे विदा मत कहो ’ उपन्यास का नायक आर्य आदर्श विद्या मंदिर में अध्यापक

था | लेकिन भ्रष्टाचार के कारण आदर्श विद्या मंदिर शिक्षा फैक्ट्री बन जा रही है |

इससे तंग आकर आर्य अपने दोस्त माधव बाबू से कहता है - " आप जो कह रहे हैं , वह तो मैं भी देख रहा हूं | मगर यह सब है बड़ा दमघोटू सा | अगर थोड़ी सी उदारता भरती जाए और ढंग से चला जाए तो , संस्था में जान आजाए | चारों तरफ ऐसी चहल पहल हो जाएगी देखते ही बन | "11

शिक्षा का लक्ष्य है व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना | युवकों का विकास करके हमें परिवार, समाज और देश का विकास करना है | मिस्टर आर्यन ने एम .ए तक की पढ़ाई ट्यूशन करके की है | घर से उसे सहारा नहीं मिला | इस तरह उसे अपने पैरों पर खड़े होने की

मज़बूती भी मिली | लखनऊ के प्रोफेसर दस्तूर की मदद से वह दिल्ली विश्वविद्यालय पहुंचॉ | बाद में राजस्थान में आकर पढ़ाई के साथ साथ कॉंलेज का अध्यापन भी करता है |

युवा पीढ़ी के लिए कुछ अच्छा करने का जोशऔर उमंग उसके दिल में है| ऐसे नौजवानों की ज़रूरत आज हमारे भारत को है | शिक्षा के माध्यम से युवाओं में नैतिक मूल्य विकसित होते हैं | ये नैतिक मूल्य युवा के विकास को महत्त्वपूर्ण दिशा प्रदान करते हैं |

जीवन की सफलता का आधार शिक्षा में निहित है | 'मीनारें' उपन्यास में प्रेमा दीवान कहती है -" पीढ़ियों के मोहरे न बनकर आज के छात्र संगठित होकर अपनी शिक्षा

की दिशा , शिक्षित छात्रों की बेरोज़गारी के विरुद्ध अभियान आंदोलन आरंभ करें ,तो बहुत कुछ हो सकता है | '' 12

युवा वर्ग अपनी शक्ति क्रियाशील कार्यों में डालें तो उनके जीवन में उन्नति होगी | शिक्षा छात्रों के आगे की जिंदगी में नई राह होती है | युवा पीढ़ी का विकास पूर्ण रूप से होने के लिए उनका सही मार्गदर्शन कराना पड़ता है| उन्हें जीवन के व्यावहारिक पक्षों से अनुभूत कराना पड़ता है

4.3.विवाह में परिवर्तन

आधुनिक युग में अंतर्जातीय विवाहों का प्रचलन बढ़ चुका है | इसका कारण औद्योगीकरण , नगर संस्कृति , छात्र आंदोलन आदि हैं | ' वैलेंटाइन डे ' उपन्यास में राजेंद्र मोहन भटनागर हिमांशु के माध्यम से यह दिखाने की कोशिश करते हैं | विदेशी युवती वेस्ट वुल्ला प्यार की सच्चाई

समझ चुकी है |हिमांशु प्रोफेसर वेस्ट वुल्ला का सच्चा प्यार जान लेता है |

शालू से हिमांशु ने प्यार किया था लेकिन अपनी जिंदगी में तरक्की के लिए शालू विदेश चली जाती है | अंत में वेस्ट वुल्ला विदेशी होने पर भी भारतीय नवयुवक से प्रेम करती है | मिस वुल्ला को भारतीय संस्कृति पसंद आती है | वह एक साधारण भारतीय नारी का जीवन यापन करना चाहती है | लेकिन शालू अपने भारत को छोड़कर विदेश जाना चाहती है |

वैवाहिक जीवन में युवकों को एक दूसरे के सहयोग से कार्य करना पड़ता

है | ‘अतिशय’ उपन्यास में जब यति और शिवानी के बीच तनाव उत्पन्न होता है तब रजनीश उसे समझाने की

कोशिश करता है |रजनीश शिवानी से कहता है - “ शिवानी एक और रहस्य है दांपत्य जीवन का | अधिकार की अपेक्षा समर्पण अधिक सुख देता है | अधिकार की अधिक मांग दुखदायी होती है | दरअसल कर्तव्य ही करना मनुष्य का सर्वोत्तम अधिकार है | परिवार में कर्तव्य पूरा कर के अधिकार अर्जित किया जाता है |” 13

4.4.नारी सशक्तीकरण

हिंदी कथा साहित्य में नारी सशक्तीकरण की बात पर अधिक ध्यान दिया गया है |नारी अस्मिता की तलाश को और उसकी सार्थकता को सही रुप से उपन्यासों में चित्रित किया गया है |’लक्ष्यवेध’ उपन्यास में डॉक्टर मनोरमा विश्वविद्यालय की कुलपति तक बन जाती हैं | डॉक्टर

मनोरमा को इस काबिल तक पहुंचाने के लिए कई मुश्किलों का सामना करना पड़ता है |

मनोरमा अपनी दादी की मदद से पढ़ लिख कर विश्वविद्यालय के प्रोफेसर से कुलपती तक आती हैं | यह उसकी लगन और कठिन परिश्रम का नतीजा

है |आज के युवाओं के लिए डॉक्टर मनोरमा एक उत्कृष्ट नारी की पृष्ठभूमि निभाती हैं | अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में नारी की आर्थिक रूप से स्वावलंबी होना चित्रित किया है | ‘ लेडीज क्लब ’ उपन्यास में शहनाज़ नामक पात्र इसका उदाहरण है |

वह अपने आप के साथ गरीब नारियों का उद्धार करना चाहती है और गरीब बच्चों को पढ़ाने के लिए एक स्कूल भी खोलती है |’ इसे विदा मत कहो ’ उपन्यास के

नायक सुभाष कुमार आर्य अपनी पहली तनख्वाह मिलने पर सबसे पहले प्रेमिका लक्ष्मी को देता है। ' इसे विदा मत कहो ' उपन्यास की युवा विधवा लक्ष्मी पढ़ी लिखी होने पर भी गरीबी में जी रही है | उसे अध्यापिका बनने के लिए पैसे की ज़रूरत थी | इसलिए उपन्यास का नायक सुभाष कुमार आर्य अपनी पहली तन्ख्वाह मिलने पर सबसे पहले प्रेमिका लक्ष्मी को देता है |

‘ न भुतो न भविष्यति ‘ में विवेकानंद नारी सशक्तीकरण का स्वतंत्र चित्रण देता है | नरेंद्र कोहली जी ने उसको अच्छे ढंग से प्रस्तुत किया है | जब विवेकानंद को अपनी बहन की आत्महत्या की खबर मिलती है तो वह उदास होता है| बाद में सोचता है -“ पर यह दु:ख केवल योगेंद्र बाला का नहीं था - बंगाल की नहीं , समग्र भारत की नारी

का था , क्यों नहीं नारी को भी शिक्षा और उच्च शिक्षा दी जा सकती ? क्यों उसे ब्रह्मवादिनी नहीं बनने दिया जा सकता | जो विवाह नहीं करना चाहती थी और ब्रह्म को प्राप्त करना चाहती है ? क्यों आवश्यक है कि नारी विवाह करें ही । संतान को जन्म दे | उसका पालन पोषण करें और फिर उसके मोह में बंधी सांसारिक दलदल में धसती चली जाए | ”14 योगेंद्र बाला को वह नहीं बचा सका । वह सोचता है कि भारत में नारी के लिए कुछ क्यों नहीं किया जा सकता उसे शिक्षा क्यों नहीं दी जा सकती ? क्या बाल विवाह का कलंक समाज से नहीं मिटाया जा सकता ? क्या नारी भी पुरुष के समान स्वयं अपने जीवन का निर्णय नहीं कर सकती आदि | इसके बाद स्वामी जी अपने बहन की जगह भारतीय नारी का स्वरूप सोचता है | विवेकांद की राय में नारी को शिक्षा देना अत्यधिक

आवश्यक है शिक्षा के बिना नारी का सशक्तीकरण संभव नहीं है |

4.5.राजनीति और युवा पीढ़ी

भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक राष्ट्र है | यहां अठारह वर्ष के पुरुष और महिला को निर्वाचन देने का अधिकार है | राजनीतिक और युवा वर्ग में अभेद्य सामंजस्य है | स्वतंत्रता आंदोलन के समय में युवकों की सक्रिय भागीदारी थी | गांधी जी के आह्वान से युवकों ने कॉलेज और विश्वविद्यालय छोड़कर राजनीति में भाग लिया था और भारत की स्वतंत्रता के लिए अपना जीवन अर्पित किया था ।

आजकल कुछ छात्र महाविद्यालयों में राजनीति के नाम से गुंडागर्दी करते हैं | लेकिन राजनीति में सच्चाई के साथ

भागीदारी लेना वाले छात्र भी हैं | उपन्यास में अमृतलाल नागर ने इसका सही उदाहरण दिया है | जयंत टंडन में देश प्रेम की भावना जागृत है |

विद्यार्थी होते समय ही जयंत टंडन ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी ली थी | जयंत ने जान लिया कि भारत में अनेक लोग गरीबी और अशिक्षा में जी रहे हैं | उपन्यास में युवक युद्धिष्ठर टंडन अपने दादा जयंत टंडन के बलिदान को बाद में जीवनी के रूप में लिखता है | इसमें युवकों का एक बदलता रुप देखने को मिलता है | आधुनिक युवकों में अब देश प्रेम की भावना लुप्त होती जा रही है | समकालीन समाचार चैनलों में इससे संबंधित खबर फैल रही है | ऐसी परिस्थिति में युधिष्ठर टंडन जैसे युवक के आज समाज की सख्त ज़रूरत है |

4.6. जाति-पांति का तिरस्कार

देश में जाति - पांति की संख्या आज बढ़ती जा रही है | स्वतंत्रता काल से लेकर भारत की जनता इसकी शिकार बन रही है | सभी उपन्यासों में युवकों के जातीय संगठनों में शामिल होने का जिक्र नहीं है | अधिकतर युवकों को इन्हीं संगठनों में भाग लेना पसंद नहीं है | शिक्षा के कारण उनके मन में जाति- पांति की भावना मिट गई है |फिर भी अशिक्षित या मतलबी नेताओं के शिकार बनकर युवावर्ग दंगों में भाग लेते हैं |

गांधी जी से प्रेरित होकर देश भर में , अनेक लोगों में सामाजिक सद् भाव की भावना आ गयी है | इसका उदाहरण ‘ रुहेलखंडका गांधी ’ नामक उपन्यास में है | बरेली के

चुन्ना मियां जी के गॉधीजी के भाषण से प्रभावित होकर विभाजन के समय दंगों में फसते नौजवानों को बचाता है | वह उन्हें उपदेश देता है - “ हर बात में पाकिस्तान को क्यों ले आते हो किसी को पता भी है कि कहां बनेगा पाकिस्तान ? मुसलमान भाई सोचते हैं, जहां - जहां वह अक्सरियत में है वहीं, वहीं पाकिस्तान बन जायेगा | कहाँ , कहाँ बनेगा पाकिस्तान , अलीगढ़, मुरादाबाद , रामपुर , हैदराबाद , पूर्वी बंगाल |”15 इसी तरह युवा मियां में पहले ही जातीय संगठनों को तिरस्कार करने की भावना है |

‘लेडीज क्लब ’ उपन्यास में लेखिका ने जातीय संगठनों का तिरस्कार करने वाली शक्तिशाली युवतियों को चित्रित किया है | अलीगढ़ में जब कर्फ्यू हुई तो कुछ आतंकवादियों ने एक लडकी को निवस्त्र करने की कोशिश की । तब लेडीज

क्लब के विमलेश ने धीरज से उन आक्रमणकारियों को रोका - " विमलेश के सामने से दो सिर्फ लड़कियां नहीं थी | पूरी औरत जात थी | उसकी अपनी जात थी | वह इन लड़कियों के पास खड़ी थी | जिनके लिए वह आसमानी फरिश्ते के रूप में उतर कर आई

थी |"16

विमलेश की वजह से हथियारों ने नववधू पर आक्रमण करना छोड़ दिया | लेडीस क्लब में विमलेश बहन का सम्मान किया गया | आज हमें विमलेश बहन जैसी युवा नारी की जरूरत है | अधिक पढ़ी लिखी न होने पर भी अन्याय के विरुद्ध विमलेश खुल कर लडती है |

'लेडीज़ क्लब ' में एक सशक्त युवा नारी के रूप में विमलेश बहन आती है | लेडीज़ क्लब के समारोह में उसे

सम्मानित किया गया | अलीगढ़ के शहर में कर्फ्यू से सब लोग भाग रहे थे लेकिन विमलेश ने पूरी ज़ोर से एक निरबल नारी को बचा लिया था | जब विमलेश को सम्मानित किया था तब विमलेश ने कहा - " ये तो हम सबकी इज्ज़त का मामला था बहन | अपनी आंखों के सामने कैसे कोई औरत ये सब बर्दाश्त करेगी |"17 आज के युग में हमें ऐसी नारी की ज़रूरत है | पढ़े लिखे लोग भी इस अवसर पर मुंह मोड़ते हैं लेकिन विमलेश अधिक पढ़ी लिखी न होने पर भी अन्याय के विरुद्ध धीरज से आवाज़ उठाती है | उसकी पहली आवाज़ ने भीड़ को जगाया | लोग उसकी मदद के लिए आ पहुंचे |

4.7..युवा वर्ग में सांप्रदायिक सद्भावना

भारतीय संस्कृति सामान्य संस्कृति है | यह हिंदू , मुसलमान , सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध सब को मान्य है | आज शिक्षा नीति बनाते समय हमें इस तथ्य को ध्यान में रखने की आवश्यकता है | मंदिर और मस्जिद के नाम पर युवकों में लड़ाई आपस में हो रही है | लेकिन एक मुसलमान द्वारा मंदिर का निर्माण अलग बात है |

'रूहेलखंड का गांधी ' उपन्यास में यह देखने को मिलता है | चुन्ना मियां ने स्वामी हरमिलाप जी के आग्रह पर लक्ष्मी नारायण मंदिर का निर्माण कराया | उसके लिए उसने तन मन धन तक न्योछावर किया | यह सच्ची घटना पर आधारित उपन्यास है | पारस्परिक सौहार्द का उत्तम नमूना है |

मिया ने ब्रिटिश सरकार की ' बांटो और राज करो ' की नीति पर खुल कर विरोध किया | जब मिया के दोस्तों ने पाकिस्तान जाने का आग्रह किया तो मियां कहता है -" मैं तो सीधी बात ये जानू हूँ कि अभी तक मैं हिंदू भाइयों के साथ बड़े मज़े से रहा | अल्ला ने चाहा तो आगे भी अच्छी कट जाएगी | मुझे तो पूरी उम्मीद है कि मुसलमानों की भलाई यहीं रहने में है |" 18 इसके अलावा मियां ने मुसलमान होने पर भी चौधरी रामपाल सिंह की ज़मानत की | उन्हें हिंदुओं और मुसलमानों की नफरत का शिकार होना पडा | फिर भी मियां सब का विरोध लेकर सांप्रदायिक भाईचारा के लिए लड़ता है |

4.8. युवकों में देश प्रेम की भावना

स्वाधीनता आंदोलन से आदर्श राजनीति का प्रारंभ हुआ | गोपाल कृष्ण खोखले , महात्मा गांधी , लोकमान्य तिलक , मालवीय जी आदि नेता राजनीति में आए | इन्होंने देश सेवा के लिए अपने जीवन के सभी सुखों को त्याग दिया | राष्ट्रीय दलों ने छात्र राजनीति में अपना हक जमाए रखा है | आज छात्रों में देश प्रेम के प्रति नकारात्मक भावना है | इसे सकारात्मक रूप देने का दायित्व हमारी सरकार को है | कई युवकों ने राष्ट्र के अंधियारे को मिटाने का प्रयास किया है | ‘ रोहिलखंड का गांधी ’ उपन्यास में महानंद नामक एक साहसी युवा का चित्रण हुआ है |

महानंद ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जोश के साथ लड़ता है | चुन्ना मियां इस घटना का वर्णन करता है - “ दोपहर के तीन बजे का वक्त रहा होगा | कलेक्टर ,

इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल और शहर के सारे प्रधानाचार्य के साथ कॉलेज हाल में मीटिंगले रहा था , कि लड़कों को आंदोलन से कैसे दूर रखा जाए |मैं रामपाल सिंह जी और तीन लड़के हमारे साथ थे ।रामपाल सिंह पास रखी सीठी लगाई और मैं कॉलेज की छत पर चढ़ गया | तिरंगा , मैंने कमीज़ के अंदर फंसाया हुआ था और जल्दी जल्दी यूनियन जैक उतारा , उसे नीचे फेंक दिया उसकी जगह तिरंगा फहरा दिया | रामपाल सिंह जी मेरे उतरने का इंतजार कर रहे थे | मेरे उतरते ही हमने साथ लाया, मिट्टी का तेल यूनियन चेक कर डाला , उसे जला दिया और नारे लगाए भारत माता की जय ' ' महात्मा गांधी की जय ',' अंग्रेज भारत छोड़ो |"19

4.9.युवकों के सकारात्मक दृष्टिकोण

युवा सशक्तीकरण के लिए युवा वर्ग में सबसे पहले सकारात्मक दृष्टिकोण की आवश्यकता है | भारत के प्रसिद्ध समाज सुधारकों ने भी सकारात्मक दृष्टिकोण को अपनाया है | स्वामी विवेकानंद युवा सन्यासी एवं प्रशस्त समाज सुधारक भी थे | नरेंद्र कोहली ने ' न भूतो न भविष्यति ' में उनके दर्शन को चित्रित किया है | स्वामी विवेकानंद वेदांत के अध्ययन बहुत अधिक मानते थे | युवकों को आध्यात्मिक साधना से अधिक मानव सेवा की ओर प्रेरित करना उनका प्रमुख उद्देश्य था | युवा वर्ग से बातचीत करते समय स्वामी कहते हैं - " अपने स्वभाव को पहचानो और अपने स्वधर्म को जानो | " 20 नौकरी के संबंध में उनका मानना है कि " भारत के युवा वर्ग को कृषि की ओर ध्यान देना चाहिए |"21

स्वामी जी आगे कहते हैं- " हम लोग एक भूल करते हैं कि अपने वंश व्यवसाय के अनुसार अपना स्वभाव बनाने का प्रयत्न करते हैं | जबकि होना यह चाहिए कि हम अपने स्वभाव के अनुसार अपना व्यवसाय चुनें |अपना वंश चुनना हमारे हाथ में नहीं है |" 22

युवा वर्ग से स्वामी जी कहते हैं - " हमारे युवक पढ़ लिखकर नगरों की ओर नहीं , ग्रामों की ओर बढ़े , हमारे ग्रामों में जो ज्ञान की भूख है उसे देख पढ़ा लिखाकर आदमी ग्रामीणों के बीच बैठता है , तो वह उसका सम्मान करते हैं | इस प्रकार ऊंच नीच का भेद कम होता है | समाज में समता आती है |'' 23

इस तरह युवा वर्ग सबका आदर करते हैं | युवकों से वैज्ञानिक ढंग से खेती करने के लिए स्वामी जी ने आह्वान

दिया |युवा वर्ग से स्वामी जी का उपदेश है कि " तुम लोग संस्कृत और अंग्रेजी दोनों पढ़ो |संस्कृत इसलिए कि अपने देश अपने धर्म अपने प्राचीन ज्ञान को जान सको और अंग्रेज़ी इसलिए कि पश्चिम से आए आधुनिक ज्ञान से परिचित हो सकें |" 24 इस प्रकार स्वामी विवेकानंद युवकों में प्राचीन तथा नवीन ज्ञान के समन्वय कराना चाहते थे |

' रुहेलखंड का गांधी' नामक **उ**पन्यास में चुन्ना मिया एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति है | मियां की सादगी पर बेटा सवाल करता है तो मियां कहता है -" बेटा, पैसे का अपना गुरुर होता है | सादगी में रहना , यानी उस गुरूर से दूर रहना | अपनी नफज पर काबू रखना बेटा कपड़ो में भी किसी गंवई किसान जिसके कपड़े फटे , मिट्टी और पसीने की बदबू वाले हो , मैं ऐसे आदमी के पास बैठ

जाऊंगा | तुम नहीं बैठ पाओगे "25 चुन्ना मिया अपने जीवन में सदा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाता है |

सुर्यबाला ने 'दीक्षांत' उपन्यास में शिक्षण संस्थाओं के शोषण को नायक शर्मा सर के जीवन से जुड़कर दर्शाया है। विध्याभूषण प्राचार्य के पास कॉलेज में सीनियर पद की नियुक्ति का अनुरोध करता है। लेकिन प्राचार्य ने उन्हें नौकरी से निकाल देने की अल्टीमेटम दे देता है। इससे मानसिक संतुलन बिगड़कर शर्मा सर की मृत्यु हो जाती है। लेकिन शर्मा सर की अनाथ बच्चों को पढ़ाने की ज़िम्मेदारी कॉलेज के नवयुवक छात्र ले लेता है। शर्मा सर की मृत्यू उनके मन में परिवर्तन लाता है। आज भी सकारात्मक दृष्टिकोण रखनेवाला छात्रों को हम समाज में देख लेते हैं। ऐसे ही नवयुवकों को राष्ट्र के लिए ज़रुरी है। उनसे ही समाज में बदलाव ला सकता है। सुर्यबाला जी के रचनात्मक दृष्टिकोण

सकारात्मक है। वे आस्था और करुणा आदि मूल्यों को बहुत महत्व देती हैं। उनके राय में तमाम असंगतियों और भटकावों के बावजूद भी युवा वर्ग अपने सकारात्मक दृष्टिकोण से समाज को प्रभावित करते हैं।

4.10.युवा वर्ग का संगठन और जागरण

युवा वर्ग में ऊर्जा और शक्ति, संगठन और जागरण से हम पैदा कर सकते हैं | स्वामी विवेकानंद नवयुवकों के सर्वांगीण विकास पर बल देते थे | वे युवकों को अपना सर्वोच्च विकास के लिए प्रेरणा देते हैं | युवकों में विवेकानंद आत्मिक विकास को जगाने का प्रयास करते हैं | विवेकानंद

युवकों से निरंतर संघर्ष करने के लिए कहते हैं | 'न भूतो न विष्यति ' में नरेंद्र कहते हैं – " न्याय कहता है, अन्याय का विरोध करो | अन्याय का विरोध करने के लिए संघर्ष भी करना पड़ता है | संघर्ष से युद्ध जन्म लेता है | इसलिए न्याय के लिए युद्ध भी करना पड़ता है |" 26 स्वामीजी नवयुवकों को यह उपदेश देते हैं कि सदा जागृत रहो |वे युवकों से परिश्रम को अपनाने के लिए कहते हैं | उनकी राय में देश के युवकों में संगठन की कमी है | इसलिए रामकृष्ण परमहंस के नाम पर उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिससे युवा जन सेवा में अपने जीवन अर्पित करें |इस तरह स्वामी विवेकानंद ने भारत का उद्धार करने का कार्य युवा वर्ग पर सौंपा है | इसके लिए युवा वर्ग को संगठन के महत्व को समझना चाहिए |

4.11.पर्यावरण संरक्षण नीति अपनाना

देश की पर्यावरण नीति के अनुरूप पर्यावरण में हो रहे नुकसान और उसे रोकने के संबंध में युवकों को प्रशिक्षण देना है | देश के पर्यावरण संरक्षण में युवा वर्ग को अहम भूमिका प्रदान करना है | एन .जी. ओ और पर्यावरण संस्कार से मिल जुलकर इस संबंध में स्थानीय स्तर पर युवकों को प्रेरित करना है |कॉलेजों में पाठ्यक्रम एवं पर्यावरण सुधार के संबंध में आवश्यक एवं व्यक्त पाठ को शामिल करना है | ‘ लक्ष्यवेध ’ उपन्यास में इदिंरा राय मनोरमा सक्सेना के माध्यम से इसका इशारा देती हैं | वह छात्रों को विश्वविध्यालय के आसपास साफ करने और पेड़ पौधे लगाने

को आदेश देती हैं । ' लेडीज क्लब ' में भी नमिता सिंह पर्यावरण संरक्षण को बल देती हैं |

स्वामी विवेकानंद ने भी 'न भूतो न भविश्यति ' में पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में कहा है | विवेकानंद ने भारत में कृषि के महत्व को समझाते हुए कहा कि - " हमें वैज्ञानिक ढंग से खेती करनी चाहिए, ताकि हमारे खेतों की उपज बढे । " 27 'मीनारें' उपन्यास में प्रेमा दीवान पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर छात्रों को ध्यान देने के लिए कहती है | संगीत यामिनी के वक्त कॉलेज की साफ -सफाई पर पूरा ध्यान देती है । इस तरह देखा जाए तो उपन्यासों में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर अधिक बल दिया गया है |आज की ज़माने में इसकी ज़रूरत है ।

4.12.पारिवारिक परिवेश का प्रभाव

व्यक्ति और समाज का घनिष्ठ संबंध है | परिवार, विद्यालय , समाज , विवाह आदि विविध संस्थाएं युवा वर्ग के व्यक्तित्व विकास में सहायता देंगी | इन विविध सामाजिक संस्थाओं में युवा वर्ग को विविध भूमिका निभानी पड़ेगी | युवकों का सशक्तीकरण करने वाली पहली महत्वपूर्ण इकाई है परिवार | परिवार युवा वर्ग की नींव है |

माता पिता के आदर्श और अनुशासन का प्रभाव युवकों पर पड़ता हैं |' न भूतो न भविष्यति ' में नरेंद्र कोहली जी नरेंद्र से स्वामी विवेकानंद तक की विकास यात्रा का हेतु उनके पारिवारिक परिवेश मानते हैं | नरेंद्र की माता भुवनेश्वरी देवी सात्विक महिला थी | भजन , कीर्तन पूजा - पाठ हमेशा करती रहती थी | सभी व्रतों का पालन करती थी | घर में हमेशा पौराणिक कथाओं का गायन होता था | इन सब का

प्रभाव नरेंद्र पर पड़ा | इस तरह नरेंद्र से भारत के प्रसिद्ध आचार्य स्वामी विवेकानंद बनने में वे सक्षम हुए |

सूर्यबाला जी के प्रसिद्ध उपन्यास ' दीक्षांत ' में भी उन्होंने पारिवारिक परिवेश के महत्व को समझाया है | विद्या भूषण शर्मा संस्कृत और अनुशासित वातावरण में पाला गया है | इसलिए उसे पि .एच.डी में गोल्ड मेडलिस्ट उपाधि मिली | यह उपाधि मिलने पर भी नौकरी के क्षेत्र में उन्नति नहीं प्राप्त कर सका । इसलिए वह स्कूल का अध्यापक बन जाता है ।

4.13. स्वास्थ्य का प्रभाव

युवावस्था में शारीरिक बनावट और मानसिक परिवर्तन की जानकारी होनी चाहिए | इसके लिए सभी पाठ्यक्रमों में स्वास्थ्य से संबंधित शिक्षा को शामिल करना है | युवा वर्ग

को विशेषकर युवतियों को शारीरिक साफ –सफाई के महत्त्व से अवगत कराना है| आज के युवा वर्ग ने फास्टफूड संस्कृति को अपनाया है | उसका चित्रण 'मीनारें' , 'लक्ष्य वेद' आदि उपन्यासों में मिलता है | प्रेमा दीवान हॉस्टल के छात्रों के स्वास्थ्य के प्रति बड़ी जागरूक है ।होस्टल में नये कर्मचारी को छात्राओं के भोजन के बारे में ध्यान रखने के लिए रखती है और छात्राओं को पौष्टिक आहर देने की आदेश देती है।

'लक्ष्य वेद' में मनोरमा सक्सेना छात्रों के स्वास्थ्य के प्रति बडी जागरूक दिखायी देती हैं | वे खुद जाकर होस्टल में निखरानी रखती है कि छात्रा अच्छे भोजन खा रही है या नहीं । जब एक छात्र को अस्पताल में भर्ती की तो मनोरमा सक्सेना उसके लिए पूरी रात वहॉ रुक गयीं ।" लड़के बहुत प्रभावित हैं वी.सी. से कि एक लड़के के लिए सारी रात अस्पताल में बैठी

थी ।''28 'न भूतो न भविष्यति में ' में स्वामी विवेकानंद ने अच्छे सेहद के लिए योग साधना को अपनाने के लिए कहते हैं | विवेकानंद कहते हैं -" प्रत्येक जीव शक्तिप्रकाश का एक केंद्र है | पूर्व कर्मफल से जो शक्ति संचित हुयी है , उसी को लेकर हम लोग जन्मे हैं | जब तक वह शक्ति कार्यरुप में प्रकाशित नहीं होती , तब तक कहो तो कौन स्थिर रहेगा , कौन भोग का नाश करेगा ? " 29 इसके साथ विवेकानंद युवकों से नियमित रूप से व्यायाम करने के लिए कहते हैं। 'अतिशय' उपन्यास में रजनीश यति से अवश्यकता के अनुसार भोजन करने की सलाह देता है - '' शरीर को आवश्यकतानुसार भोजन चाहिए ,यति | उन वस्तुवों को जबरन क्यों अंदर धकेलना ,जिनकी कोई उपयोगयता शरीर में हो ही नहीं हो ? "30

4.14.धर्मनिरपेक्ष समाज निर्माण में युवकों का योगदान

धर्मनिरपेक्ष समाज का निर्माण करना आज हमारे भारत की आवश्यकता है | समाज में प्रत्येक सदस्य को सभी धर्मों का आदर करना है | इसके लिए युवा पीढ़ी को सोचना होगा | 'अतिशय ' उपन्यास में भारतीय संस्कृति के बारे में रजनीश कहता है - '' चाह और उसकी पूर्ति की आशा आनंद भी है और काम -शक्ति भी और यह मिलता है 'स्व' की पहचान से | इस मंत्र के लिए आज वे लोग भारतीय दर्शन की ओर आकर्षित हैं। सत्या , अहिंसा ,त्याग .वैराग्य 'स्व ' की पहचान के मार्ग हमारे दर्शन के आलावा मिलें भी तो कहां? ''31

युवा वर्ग को सामाजिक बुराइयों एवं कुप्रथाओं के विरुद्ध लड़ना होगा | 'न भूतो न भविष्यति ' में नरेंद्र कोहली जी ने स्वामी विवेकानंद के द्वारा इसका चित्रण किया है | विवेकानंद गुरु की आज्ञा के अनुसार पहले भारत भर का भ्रमण करते हैं और भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिशिष्ट को पहचानते हैं बाद में वे उनके प्रचार के लिए विश्व का भ्रमण करते हैं | शिकागो के प्रभाषण द्वारा वे पूरे विश्व के आराधना पात्र बन जाते हैं | उनके आदर्श निष्ठा और कर्म के बारे में सुनकर सभी विदेशी भी उनसे प्रभावित होते हैं | धर्मनिरपेक्ष की शिक्षा द्वारा युवकों के मन में बसे हुए जाति - पाँति के भाव को दूर करना होगा | इसके लिए युवकों को वास्तविकता से परिचित कराना है |

विवेकानंद की मदद से युवा वर्ग आगे बढे हैं। भारत खोज यात्रा में विवेकानंद अजमेर में गए। उन्होंने वहाँ के प्रमुख पंडितों से वाद विवाद भी किया |ब्रह्म और परब्रह्म के बारे में चर्चा की | स्वामी जी की राय में हमारे वेदों में सभी प्रश्नों का उत्तर है | उसे समझ कर उसका सही अर्थ निकालना होगा | इसके लिए युवा पीढ़ी को सभी वेदों का ज्ञान होना चाहिए | शिक्षा के द्वारा ही यह संभव है। युवकों को धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र का निर्माण करने की दिशा दिखाने में स्वामी विवेकानंद ने कदम उठाया है |

4.15.समाज में युवा मोर्चा का सदुपयोग

आज युवक शक्ति, साहस और संवेदना का उज्ज्वल रूप है | यौवन की ज्वाला सभी समस्याओं को मिटाती है | उसे रोकना मुश्किल काम है |युवकों के सामने अनेक

समस्याएँ खड़ी होती हैं | लेकिन उसके समाधान करने में युवा सक्षम हैं | युवा मोर्चा का सदुपयोग राष्ट्र और समाज के लिए जरूरी है | शशिप्रभा शास्त्री के 'मीनारें' उपन्यास में प्राचार्य प्रेमा दीवान द्वारा लेखिका अपना मत व्यक्त करती हैं | कुल पति के खिलाफ सभी कॉलेज के छात्र रोष प्रकट करके उसे कमरे में बंद करते हैं |कॉलेज में पढ़ाई का बहिष्कार होता है तब प्रेमा दीवान अपने छात्रों को उपदेश देती हैं " - युवा वर्ग को अपनी शक्ति का सदुपयोग करना चाहिए | उनकी लड़ाई सही के लिए हो जाना चाहिए | जोश में आकर अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना | "32 यौवन की शक्ति सभी व्यक्ति में होती है लेकिन उसे आत्मसात् करके उसका सदुपयोग करना जरूरी है | यौवन की शक्ति का दुरुपयोग हुआ तो युवा संहारक बन जाएगा | युवा जीवन की शक्ति समाज को सार्थक और संर्वधित करती है |

‘हॉस्टल के पन्नों से ’ उपन्यास में मनोज सिंह जी यही बात बताने की कोशिश करता है | पढ़ाई के समय सबसे ज़्यादा जोश दिखाने वाला छात्र दुष्यन्त जिंदगी में आगे नहीं बढ़ सका बल्कि राजनीति दलों में पड़कर वह एक गुंडा बन जाता है | अंत में उसे जेल जाना पड़ता है ।

4.16.प्यार की तलाश में भडकते युवा मन

युवा हमेशा प्यार की तलाश में किसी हमसफर को ढूढते रहते हैं | भावनात्मकता के कारण उसके अंदर मन में हमेशा दर्द होता रहता है | एकल परिवार में माता पिता का प्यार भी सही रूप से नहीं मिलता है | आज की युवा पीढ़ी प्यार की पवित्रता को नहीं समझती है | ‘वैलेंटाइंन डे ’ उपन्यास में राजेंद्र मोहन भटनागर ने इसका उदाहरण दिया है | हिमांशु मन: शांति के लिए शहर से दूर पहाड़ी

प्रदेश में आया था | वहाँ से शालू मिल गई | पहले वह शालु की अहमियत को समझ नहीं पाया | जब शालु विदेश जाने को तैयार होती है , तब हिमांशु उसके प्यार को जान पाया | लेकिन वह शालु को रोक न सका |

शालू की करियर उसके कारण बर्बाद हो जाए वह यह नहीं चाहता | लेकिन शालु को इंतजार करने का वादा भी नहीं देता | हिमांशु जानता है अगर शालु विदेश जाए तो उसके चरित्र में भी बदलाव आ जाएगा | हिमांशु व्यवहारिक ढंग से सोचता है |

इसी तरह है डॉक्टर धर्मेंद्र गुप्त के उपन्यास ' इसे विदा मत कहो ' में आर्य और लक्ष्मी का प्यार | राजस्थान के प्रसिद्ध गांव में रहने वाले लक्ष्मी विधवा थी | आर्य लक्ष्मी की मदद करता है लेकिन उसे शादी करने के लिए राज़ी

नहीं | उसे नौकरी चाहिए | उसकी जिंदगी को सुरक्षित कराना है | लक्ष्मी जानता है आर्य एक बार गांव से चला जाए तो लौटकर नहीं आएगा | फिर भी उससे शारीरिक संबंध जोड़ती है | आर्य के चले जाने पर वह उसका इंतजार करने का वादा भी देती है | आज के युवक एक दूसरे पर आरोप नहीं लगाते |

4.17. पीढ़ियों का संघर्ष

पुरानी पीढ़ी और नई पीढ़ी का संघर्ष आजकल अधिक होता रहता है | पुरानी पीढ़ी, नई पीढ़ी पर अपनी मत और मान्यताएं टोकना चाहती है | लेकिन नई पीढ़ी उपदेश लेने से इनकार करती हैं | 'पीढ़ियां' उपन्यास में अमृतलाल नागर जी ने तीन पीढ़ियों की कथा कही है | युदिष्ठर टंडन इस उपन्यास की युवा पीढ़ी है | वह जयंत टंडन का पोता और

सुंमंत टंडन का पुत्र है | युदिष्टिर एक प्रसिद्ध चैनल का रिपोर्टर भी है | राजनीतिक विषयों में अपने पिता के अहिंसावादी मत से सहमत नहीं है | उनकी राय में बुराइयों के खिलाफ लड़ने के लिए ताकत की जरूरत है |उसके लिए पैसा चाहिए |

सुमंत टंडन दंगे के समय बिना सुरक्षा क्रमीकरण लिये शहर से बाहर जाता है और घायल होता है | 'पीढियाँ' उपन्यास में दो पीढ़ियों के वर्ग संघर्ष में नागर जी ने नई पीढ़ी की सोच को उजागर किया है । युद्धिष्ठिर अपने पितामाह के साहस के बारे में जानकर उसकी खोज करने की कोशिश करता है। जयंत टंडन के जीवन संबंधी तथ्यों को एकत्रित करता है और उसे एक उपन्यास का रूप

देता है | इस तरह देखा जाए तो पीढ़ियों के संघर्ष को हमेशा उपन्यासकारों ने चित्रत किया है |

4.18. सूचना प्रौद्योगिकी और युवापीढ़ी

सूचना क्रांति में हुए परिवर्तन ने युवाओं पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव डाला है | सकारात्मक प्रभाव में युवाओं में कर्म के प्रति झुकाव , नियमितता , ज्ञान की भूख और गंभीरता हम देख सकते हैं |नकारात्मक प्रभाव के रूप में युवा वर्ग में समाज के प्रति अलगाव की भावना पैदा हुई है | यह अलगाव पारिवारिक विघटन का कारण बन जाता है |

नैतिक मूल्यों में भी कमी आ रही है | ‘ हॉस्टल के पन्नों से ' उपन्यास में अरुण को पुलिस ने ड्रग्स के मामले में गिरफ़्तार किया तो सारे छात्रों को मोबाइल फ़ोन से जानकारी

मिलती है | खबर सुनकर सारे लड़के इकट्ठे हुए | तब अरुण ने कहा - '' बच्चों इसे जीवन की परीक्षा कह सकतें हैं | शान से जीने के लिए इसमें पास होना ज़रूरी है | अगर इसमें फैल हो गए तो बाकि परीक्षा में पास होने का कोई फ़ायदा नहीं | हम सच की खातिर लड़ेंगे ,अंत तक लड़ेंगे | जिसने हमारे साथ जबरदस्थ बिना वजह गलत करने की कोशिश की है ,उन्हें छोड़ देना शैतान को खुला छोड़ने के सामान होगा '' | 33 छात्र इस भाषण से प्रभावित होते हैं | उन्हें अन्याय के विरुद्ध लड़ने की ताकत मिलती है | युवा सूचना क्रांति के माध्यम से देश की समस्याओं के प्रति जागरूक हुए हैं | लेकिन बौद्धिक महत्वकांशाओं ने युवाओं में उपभोग्तावादी मूल्यों को जन्म दिया है |

4.19. स्वावलंबन का महत्त्व

स्वावलबंन का गुण प्रत्येक समाज की उन्नति के लिये परम आवश्यक है । बच्चा युवा होता है तो उसे अपने पैरों पर खडे होने का अवसर मिलना चाहिए । अपने श्रम से अपनी ज़रुरतों को पूरा करने की क्षमता ही स्वावलंबन है । 'अतिशय' उपन्यास में यति स्वावलम्बन की महत्व को समाझाते हुए कहता है -'' सोचो , तुम्हारी उपलब्धि से आज समाज को क्या मिल रहा है ? देश जिस मोड़ से गुज़र रहा है , सभी को कड़ी मेहनत करने की अवश्यकता है | विकासशील देश की समस्याओं की भी थाह नहीं | एक दिन हम अपनी औद्योगिक प्रगति के बल पर ही दुनिया के मेले में अपनी दूकान लगाने की जगह बना सकेंगे | जहां तक गरीबी का सवाल है , उद्योग -धंधों के विकास से उनकी भी बेरोज़गारी दूर होगी , उनका जीवन स्तर उड़ेगा | तुम्हारा ज्ञान की खोज खाली बैठे - बिठाए मन का फितूर नहीं है क्या ?''34

'इसे विदा मत' कहो उपन्यास में लक्ष्मी को आत्मनिर्भर बनाने के लिये आर्य कोशिश करता है । आत्मनिरभर बनने का कोई सरल मार्ग नहीं है । आजकल पैतृक संपत्ति के आधार पर आत्मनिरभर होने की बात बेमानी हो गयी है ।आज के युवा इस तथ्य को जानकर स्वंय कुछ कर दिखाना चाहते हैं ।इस लिये शालु 'वेलंडैनस डे 'उपन्यास में अपने चित्र बेचने के लिये सडक पर घूमती है ।

उपसंहार

हिंदी उपन्यास में पहले युवा पीढ़ी के संघर्ष का चित्रण उतना अधिक नहीं है | सन् साठोत्तर के बाद के उपन्यासों में युवा पीढ़ी के आक्रोश का चित्रण मिलता है |नब्बे के बाद के हिंदी साहित्यकारों ने युवा पीढ़ी पर आधारित कहानी , कविता और उपन्यास को लिख दिया है | इसमें

अमृतलाल नागर से लेकर मृदुला सिंह तक के उपन्यासों का चयन किया गया है | इन उपन्यासकारों ने युवा पीढ़ी के सशक्तीकरण की नई राह को खुला दिया है | युवा पीढ़ी के सशक्तीकरण की प्रक्रिया को लेखक आर्थिक ,सामाजिक, शैक्षिक, राजनीतिक आदि स्तरों पर लेते हैं | कुछ साहित्यकारों ने शिक्षा के ज़रिए युवकों को सशक्त करने की आवश्यकता बताई है| इसके साथ युवा वर्ग में होने वाले गुणों का भी जिक्र किया है | सूर्यबाला का 'दीक्षांत', धर्मेंद्र गुप्त का 'इसे विदा मत कहो' आदि उपन्यास शैक्षणिक सशक्तीकरण पर बल देने वाले हैं| साहित्यकारों ने युवा पीढ़ी में रोल मॉडल के अभाव को चित्रित करने की कोशिश की है | सही उपदेश न मिलने पर भड़के युवकों को रास्ता दिखाने का काम बुजुर्ग पीढी का है | इसके लिए बुजुर्ग पीढ़ी को आगे आने की जरूरत है |

‘रुहेलखंड का गांधी ’, ‘न भूतो न भविष्यति ’आदि उपन्यासों में लेखक आदर्श नमूने को सामने खडा करते हैं | प्रेम संबंधी मान्यताओं में भी नए मत देने वाला उपन्यास है ‘वैलेंटाइंस डे’ । ‘अतिशय’ उपन्यास में व्यावसायिक सशक्तीकरण का चित्रण मिलता है | इसमें युवकों में शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ाने की बात कही है | इस तरह देखा जाए तो इक्कीसवीं सदी की युवा पीढ़ी पर सोच विचार करके उनके संघर्ष को पहचान कर शोध करना चाहिए | उनकी सहायता करने की जिम्मेदारी समाज को भी है | वैश्विक परिस्थितियों ने पारिवारिक तत्वों को , मूल्य ,नैतिकता , पारिस्थतिकी, खानपान , संस्कृति , ज्ञान और राजनीति को अंतराष्ट्रीय व्यापार के रूप में ढकेल दिया

है | युवापीढ़ी पर वैश्वीकरण ने सकारात्मक प्रभाव डालने का कार्य किया है । इससे युवकों को नौकरी मिली है । पाश्चात्या संस्कृति और जीवन शैली ने युवाओं के सांस्कृतिक जीवन में एक अच्छा स्थान प्राप्त किया है | जनसंचार और सिनेमा ने युवाओं पर विशेष प्रभाव डाला है | मीडिया संस्कृति में हो रही अश्लीलता ने युवकों में विद्रोही संस्कृति को जन्म दिया हैं |

सरकार को युवकों को रोज़गार के लिए धन , प्रशिक्षण आदि देकर उन्हें अधिक सक्षम् बनाना चाहिए| इससे युवापीढ़ी का राष्ट्रहित में अतिकतम उपयोग सम्भव है | आर्थिक रूप से युवकों का संपन्न होना राष्ट्र की उन्नति में सहायक है | प्रत्येक देश में व्यापार, उद्योग, कृषि आदि क्षेत्र में युवकों का ही योगादान सर्वधिक होता है| इसतरह हो जाये तो उस देश का विकास होगा। बुजुर्ग पीढी युवकों का मार्गदर्शन कर सकती हैं | वे

अपने अनुभवों से युवा वर्ग को शिक्षित कर सकती हैं | बुजुर्ग का अनुभवी मस्तिष्क युवा शक्ति को नियोजित कर सकता है | युवा शक्ति का उपयोग कर पाना एक बड़ी बात है ।

संदर्भ ग्रन्द सूचि

1. कुबेरनाथ राय, कुबेरनाथ राय का निबंध संकलन, पृ- 10

2. नरेंद्र कोहली ,न भूतो न भविष्यति ,पृ-89

3. इंदिरा राय, लक्ष्यवेद ,पृ- 50

4. कथादेश , जनवरी -1999

5. मृदुला सिन्हा ,आतिशय ,पृ- 36

6. मृदुला सिन्हा, आतिशय ,पृ-62

7. नरेंद्र कोहली ,न भूतो न भविष्यति,पृ- 149

8. नरेंद्र कोहली ,न भूतो न भविष्यति,पृ-600

9. नमिता सिंह, लेडीज क्लब ,पृ- 143

10. मृदुला सिन्हा, अतिशय, पृष्ठ 38

11 .धर्मेंद्र गुप्त ,इसे विदा मत कहो, पृ- 75

12. शशिप्रभा शास्त्री ,मीनारे, पृ- 196

13. मृदुला सिन्हा ,अतिशय, पृ- 175

14. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति, पृ- 252

15. योगेंद्र शर्मा ,रुहेलखंड का गांधी ,पृ- 209

16. नमिता सिंह ,लेडीज क्लब, पृष्ठ 47

17. नमिता सिंह, लेडीज क्लब, पृ- 47

18. योगेंद्र शर्मा, रुहेलखंड का गांधी ,पृष्ठ 209

19. योगेंद्र शर्मा ,रोहिलखंड का गांधी, पृष्ठ 199

20. नरेंद्र कोहिली, न भूतो न भविष्यति, पृ- 293

21. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति पृ-15

22. नरेंद्र कोहली ,न भूतो न भविष्यति ,पृ-291

23. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति पृ-295

24. नरेंद्र कोहली ,न भूतो न भविष्यति ,पृ-595

25. योगेंद्र शर्मा रुहेलखंड का गांधी ,पृ-197

26. नरेंद्र कोहिली ,न भूतो न भविष्यति , पृ-107

27. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति, पृ- 295

28. इंदिरा राय, लक्ष्यवेद ,पृ- 135

29. नरेंद्र कोहली, न भूतो न भविष्यति, पृ-372

30. मृदुला सिन्हा ,अतिशय, पृ-92

31, मृदुला सिन्हा ,अतिशय, पृ-38

32 .   शशिप्रभा शास्त्री, मीनारें, पृ-84

33. मनोज सिंह , होस्टल के पन्नों से ,पृ-275

34 .मृदुला सिन्हा ,अतिशय, पृ- 36

उपसंहार

स्वतंत्र भारत में आर्थिक , सामाजिक क्षेत्रों में कई परिवर्तन आये हैं | उनमें कुछ उत्थान और कुछ पतन के संकेत देते हैं। युवा ऊर्जा की अनिवार्यता पर सोच आधिक प्रबल बन गयी है | युवा सशक्तीकरण से प्रभावित हिंदी उपन्यास साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है | उपन्यासकार मानते हैं कि आज के संकट से बचने के लिए युवकों के अभियान एवं संगठन पर विशेष बल देना है। जब तक युवा शिक्षित एवं संगठित नहीं होगें तब तक उनकी समस्याएं बढ़ती रहेंगी | हिंदी उपन्यास में चित्रत युवा परंपरागत विचारधाराओं का दास न होकर नई विचारधारा का निर्माता और समर्थक बन रहे हैं | नवीन विचारधारा से ही युवकों का सशक्तीकरण पूरा हो जाएगा | बदलते परिवेश में मानवीय जीवन मूल्यों में भी बदलाव आ रहे हैं | इसमें पाश्चात्य संस्कृति का योगदान है | युवकों का जीवन क्रम भी बदल

रहा है | युवा वर्ग शिक्षित होकर अपने अस्तित्व की खोज में लगे हुए हैं | उन्हें अपने सशक्तीकरण करना पड़ रहा है | युवा सशक्तीकरण का चित्रण हिंदी के अनेक उपन्यासकारों ने किया है |

शोध में उपसंहार सहित पांच अध्याय हैं | १. युवा सशक्तीकरण का महत्व - समाजशास्त्रियों और साहित्यकारों के दृष्टिकोण ।२. युवा पीढ़ी पर केंद्रित पूर्ववर्ती उपन्यास - एक परिचय । ३. नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण की दिशायें । ४. चर्चित उपन्यासों में युवा सशक्तीकरण के मार्ग |

इन अध्यायों में विभिन्न उपन्यासों में प्रतिपादित प्रवृत्तियों और समस्याओं का विशेष अध्ययन हुआ है | पूरे उपन्यासों की भावभूमि और विचार भूमि का सार संक्षेप यहां प्रस्तुत है | विषय एक होने पर भी रचनाकाल की दृष्टि से अलग अलग

है | एक साथ उन पर विचार विमर्श किया गया है । युवावस्था में व्यक्ति को सर्वांगीण विकास और परिपक्वता अर्जित करनी है | मुख्य रूप से युवावस्था बीस से पैंत्तीस वर्ष के बीच का समय है |युवकों के पास असीम शक्ति होती है | युवकों में बौद्धिक ऊर्जा भी अधिक होती है |उनमें कार्य करने की नवीन क्षमता भी होती है |

भारत युवकों का देश है। देश की आबादी में आधि से अधिक संख्या उनतीस वर्ष के लोगों की है |2011 की जनगणना के अनुसार दस करोड़ की आबादी में पच्चीस वर्ष से कम उम्र के हैं | शिक्षा में सत्तर प्रतिशत आबादी उनतीस वर्ष से कम उम्र के हैं |भारत में युवकों की संख्या अधिक होने के कारण अमेरिका के बाद विश्व की तीसरी बडी अर्थ व्यवस्था भारत की बन जाएगी | यह सब युवकों के कारण

ही है। इसलिए भारत के मनीषियों ने भारत को दुनिया का प्रमुख राष्ट्र बनाने का सपना देखा |इन में डॉक्टर .ए .पी. जे .अब्दुल कलाम जी प्रमुख हैं | विवेकानंद , महात्मा गांधी भगत सिंह , सुभाष चंद्र बोस आदि प्रमुख महारथियों ने भारत को आगे बढ़ाने का कार्य किया |

विश्व के दो तिहाई से अधिक युवक अवश्य चीज़ों की अपर्याप्तता के कारण बिखर रहे हैं |उदारीकरण और भूमंडलीकरण के कारण आर्थिक असमानता बढ़ती गई है | युवकों की प्रतिभा और शारीरिक शक्ति से इस असमानता को दूर करना है | इसलिए सशक्तीकरण जरूरी है | युवा सशक्तीकरण के लिए अनेक पैमाने होते हैं |युवकों के व्यक्तित्व का विकास , व्यवहार कुशलता को बढ़ाकर उनमें राजनीतिक जागृति उत्पन्न करना आदि होते हैं |इसके

साथ युवकों में विश्व बंधुत्व भावना उत्पन्न करना और शिक्षा का महत्व समझाना आदि भी होते हैं | युवा सशक्तीकरण में छात्र आंदोलन की भी बड़ी भूमिका है | भारत के महापुरुष स्वामी विवेकानंद युवा पीढ़ी के लिए दीपस्तभ बने रहे हैं | इसके साथ अनेक महापुरुष भारत को देशभक्ति और समाजसुधार का संदेश देकर संसार से विदा हो गये | सर्जनशील लोग अपना सर्वश्रेष्ठ अवधान चालीस वर्ष की आयु तक बड़ी स्फूर्ती से दे देते हैं |

युवा पीढ़ी के बारे में अनेक उपन्यासकारों ने लेखनी चलाई है | फिर भी सबसे प्रमुख युवा पात्र हम ' प्रेमचंद' के गोबर को मानते हैं | 'गोदान' उपन्यास में गोबर में युवा विद्रोह की भावना दिखायी गयी है | प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यासकार भी शिक्षा से संबंधित और युवा पीढ़ी पर अनेक

उपन्यास लिखे थे | प्रेमचंदोत्तर युग में जैनेंद्र , इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय ,भगवतीचरण वर्मा जैसे उपन्यास्कारों ने भी युवा पीढी को प्रमुखता दी है | लेकिन साठोत्तरी युग के उपन्यासकारों ने युवा पीढ़ी पर केंद्रित होकर अधिक उपन्यास लिखे हैं । अमृतलाल नागर का 'अमृत और विष' , उषा प्रियंवदा का 'रुकोगी नहीं राधिका ' सुरेश सिन्हा का 'सुबह अंधेरे पथ पर' , श्रीलाल शुक्ल का 'राग दरबारी,' गिरधर गोपाल का ' कंदील और कुहासे ' , भगवती प्रसाद वाजपेयी का 'अधिकार का प्रश्न' आदि अनेक उपन्यास आते हैं | स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास में मारकंडेय का आग्नीबीज,' रामदरश मिश्र का ' दूसरा घर' काशी नाथ सिंह का 'अपना मोर्चा' , नेरन्द्र कोहली का ' दीक्षा ' आदि हैं | इन उपन्यासकारों ने युवा पीढ़ी को सही मायने में परख कर उनकी समस्याएँ और चुनौतियों को चित्रित किया है |

शोध के लिए मैं ने बारह उपन्यासों का चयन किया है | इसमें श्री योगेंद्र शर्मा का ' रुहेलखंड का गांधी' , मृदुला सिन्हा का 'अतिशय', नमिता सिंह का 'लेडीज क्लब' अमृतलाल नागर का 'पीढियाँ ', गिरिराज किशोर का ' यातनाघर' , नरेंद्र कोहली जी का ' न भूतो न भविष्यति' , इंदिरा राय का ' लक्ष्यवेध' शशिप्रभा शास्त्री का ' मीनारें',सूर्यबाला का 'दीक्षांत' , धर्मेंद्र गुप्त का 'इसे विदा मत कहो' , राजेंद्र मोहन भटनागर का 'वैलेंटाइंस डे,' मनोज सिंह का ' हॉस्टल के पन्नों से' आदि आते हैं |

नब्बे के बाद के उपन्यासों में युवा समस्याओं का चित्रण अधिक हुआ है | इन उपन्यासकारों ने युवापीढ़ी की शैक्षणिक , आर्थिक , सामाजिक और पारिवारिक स्थितियों पर विशेष ध्यान रखते हुए उपन्यासों की रचना की है | साथ ही

राजनैतिक , वैवाहिक , यौन और प्रेम सम्बंधों का भी सशक्त चित्रण इन उपन्यासों में मिलता है | इन सारे उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों के द्वारा अपनी राय प्रकट की है | युवकों के सामने कई समस्याएँ उभर आए हैं | उसे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इन समस्याओं को झेलना पड़ता है | उनमें मुख्य समस्याओं को नीचे अकिंत किया है | समस्याएँ इस प्रकार हैं |

युवकों को सबसे अधिक रूप से परेशान करने वाली समस्या बेरोज़गारी है | 'इसे विदा मत कहो', 'दीक्षांत', 'मीनारे' आदि उपन्यास में इसका चित्रण मिलता है | शिक्षा की समस्या भी युवकों को झेलनी पड़ती है | 'लक्ष्यवेद ' , 'मीनारें ' आदि उपन्यासों में इसका ज़िक्र किया गया है | आधुनिक काल में शिक्षा व्यवस्था में कई परिवर्तन आये हैं | युवा वर्ग अब मूल्याधारित शिक्षा के स्थान पर रोज़गारोंन्मुखी शिक्षा को

पसंद करते हैं | राजनीतिक दल या नेतागिरी के दुषप्रभाव से उत्पन्न समस्याएँ भी होती हैं | 'अतिशय' , 'पीढ़ियां ' आदि उपन्यास में इसका चित्रण मिलता है |

इसके साथ पुरानी और नई पीढ़ी के संघर्ष से उत्पन्न समस्या का भी युवकों को सामना करना पड़ता है | परिवार से जुड़ी समस्या भी युवकों को तंग करती है | आधुनिक यंत्र उपकरणों जैसे कम्प्यूटर , लैपटॉप , मोबाइल आदि का दुषप्रभाव युवापीढी पर पड़ता है | सूचना प्रौद्योगिकी ने युवापीढ़ी को रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराये हैं | मीडिया में बढ़ती अश्लीलता ने युवाओं में यौन आकांक्षाओं को उजागर किया है | इंटरनेट के उपयोग से युवा वैश्विक परिदृश्य में जागरूक हुए हैं |

लेकिन युवा अपने आसपास की समस्याओं से अनजान रहते हैं | युवकों की फास्टफूड जीवन शैली ने उसे कम उम्र में रोगग्रस्त बनाया है |

आर्थिक समस्या सबसे बड़ी समस्या होती है | प्रेम संबंधी समस्या भी होती

है | अनुशासनहीनता युवकों को गलत रास्ते पर ले जाती है | यह भी एक समस्या है | युवा वर्ग व्यस्त जीवन में उल्लास के लिए मादक द्रव्य वस्तुवों का उपयोग करते हैं इससे उनकी ज़िन्दगी बदलती है | शहर की ज़िन्दगी युवकों में वैयक्तिकता की प्रवृत्ति को पैदा करती है | नशे बंदी की समस्या आधुनिक युवकों को परेशान करती है | आतंकवाद की समस्या इससे जुड़ी होती । यह एक प्रमुख समस्या है | इस तरह आधुनिक युवकों के सामने अनेक समस्याएं होती हैं | इन

समस्याओं का समाधान उनके पास कभी नहीं होती तो समाज को उसे सही रास्ते बताने की जिम्मेदारी है |

युवा सशक्तीकरण के लिए समाज को युवकों में एक ऐसी ऊर्जा का संचार करना है जिससे युवकों की सोच में सकारात्मकता आए। युवकों की ऊर्जा का राष्ट्र के विकास में उपयोग करना चाहिए | उसके लिए युवकों को समग्र विकास का अवसर देना है । संयुक्त परिवार का रूप आज के युवापीढ़ी के लिए आवश्यक हैं | ' न भूतो न भविष्यति ,'अतिशय' आदि उपन्यासों में इसका चित्रण हुआ है । वैयक्तिक स्वांतत्र्य की इच्छा ने युवकों को एकल परिवार में फंसा दिया है | युवकों को अपने अधिकारों और राजनीतिक विचारों के प्रति सचेत रहना होगा | इससे युवापीढ़ी को जातिवाद ,सांप्रदायिकतावाद के विरुध्द लड़ने के लिए प्रेरणा मिलती

है | विवाह क्रम में भी परिवर्तन आये हैं | आधुनिक युवा प्रेम विवाह को आधिक पसंद करते हैं |

आज की युवापीढ़ी विवाह पूर्व यौन संबंधों को गलत नहीं मानती हैं | विश्वविद्यालय स्तर पर मिलने वाली छात्र वृत्ति से युवापीढ़ी को आर्थिक सहायता मिलती है | युवको में धर्म के प्रति आस्था दिखाई देती है । व्यस्तता भरी ज़िन्दगी में युवा त्योहारों में पूजना स्थल जाते हैं |आज कल युवापीढ़ी में तलाक की प्रवृत्ति आधिक दिखाई देती है । इसके अनेक कारण हैं | कुछ युवा अपने जीवन साथी के अलावा अन्येत्तर सम्बन्ध रखते हैं | कुछ युवक विवाह को अपने वैयत्तिक स्वांतत्र्य में बाधक मानते हैं | अनेक युवा पारिवारिक ज़िम्मेदारियों के दबाव के कारण विवाह को अपनाने से इंकार करते हैं | कुछ लोग आर्थिक समस्या के कारण विवाह करने से इनकार करते हैं |

आर्थिक स्थिति में हुए बदलाव ने युवकों के विचारों को प्रभावित किया है। आज युवा अपने भविष्य के प्रति सचेत हो गये हैं | आज बैंक युवकों को ऋण लेने को प्रेरित करते हैं | युवकों में उपभोगवादी संस्कृति का विकास हुआ है | वे आसानी से अपनी आवश्यकतओं की पूर्ति करते हैं |

केवल समस्या का चित्रण करना इन उपन्यासकारों का मकसद नहीं है | उपन्यास से युवकों में गुणात्मक परिवर्तन लाने की कामना भी उपन्यासकारों के मन में है | ये अपने सभी उपन्यासों में इसको प्रकट करते हैं | आधुनिक भारत की सभी समस्याओं को उपन्यासकारों ने व्यक्त किया है | इनमें शिक्षा क्षेत्र में हुई प्रगति , विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास , नारी सशक्तीकरण , आर्थिक विकास आदि

शामिल हैं | शिक्षाक्रम में बदलाव लाने की मकसद से कई उपन्यास उभर आये हैं।

' मीनारें',' इसे विदा मत कहो ' ,'लक्ष्यवेद ', 'दीक्षांत', आदि इसके उदाहरण हैं | सांप्रदायिक दंगों के घोर विरोध की प्रवृत्ति को ' लेडीज क्लब ', उपन्यास में हम देख सकते हैं | युवा वर्ग में बढते प्रेम सम्बंधों का चित्रण , औद्योगीकरण की प्रवृत्ति आदि 'अतिशय ', ' वैलेंटाइन डे ' आदि उपन्यास में हम देख सकते हैं | तकनीकी और वैज्ञानिक प्रगति का चित्रण 'हॉस्टल के पन्नों से ' उपन्यास में मिलता है | संयुक्त परिवार के महत्व का चित्रण ' न भूतो न भविष्यति ', 'यातना घर ', आदि उपन्यासों में मिलता है | परिवार के कभी भी न टूटने का सन्देश ये उपन्यास देते हैं |

आधुनिक युवापीढ़ी को रोल मॉडलों का अभाव है | इसका चित्रण ' रुहेल खण्ड का गाँधी ', उपन्यास में मिलता है | नारी सबलीकरण की भावना को लेकर लिखा गया उपन्यास है ' लक्ष्यवेद', ‘लेडीज क्लब’ आदि | मनोरमा सक्सेना , कुलसुम बेन , प्रेमा दीवान आदि पात्रों के ज़रिये इसका चित्रण किया गया है | उपन्यासों में चर्चित बातों को परखने पर कुछ विचार बिंदु सामने आए हैं | वे इस प्रकार है | युवा सशक्तीकरण के लिए -

- युवकों को पहले स्वतंत्र चिंतन रखना होगा ।
- युवकों को दी जानेवाली शिक्षा मानवीय मूल्य पर आधारित होना चाहिए |

- नारी को सशक्तीकरण की मुद्दा को आगे रखकर जीना होगा ।
- राजनीति में युवकों को शुभ अवसर प्राप्त होना चाहिए ।

- युवकों को समाज में हो रहे जातीय संगठनों से दूर रहना है ।
- युवा पीढ़ी में सांप्रदायिक सद्भाभावना जगाना होगा ।
- युवकों में देश प्रेम की भावना होनी चाहिए ।
- पीढियों के अंतराल को मिटाना है ।
- नशाबंदी और आतंकवाद से युवकों को दूर रखना होगा ।
- युवा विकास के लिए पारिवारिक वातावरण को शांत रखना चाहिए ।
- युवापीढी के सामने ऐसे समाज का निर्माण करना जिसमें युवक

  अपनी योग्यता को निहारते हुए आवश्यक कौशल अर्जित कर सके ।
- उसको पहले आर्थिक रूप से सशक्त होना चाहिए ।

- युवकों के सशक्तीकरण के लिए उनमें व्यक्तित्व एवं नेतृत्व गुण का

  विकास करना चाहिए । जिससे युवक समाज के विकास में सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करने में सक्षम हो सके । इन सबको स्कूली शिक्षा से शुरू करना चाहिए ।
- पाठ्यक्रमों का निर्माण इस प्रकार किया जाएगा कि विभिन्न कौशल , खेलकूद आदि में छात्र अपनी अभिरुचि के अनुसार किसी भी विषय में निपुण हो सके ।
- उच्च शिक्षा को रोज़गारोन्मुखी बनाना है ।
- युवकों के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य की आवश्यकता का समग्र आकलन कर उन्हें समग्र स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना होगा ।

- युवकों में नशा, यौन रोगों, एच आई वी , एड्स के फैलाव को रोकने के लिए आवश्यक शिक्षण , काउंसलिंग और मार्गदर्शन की व्यवस्था की जानी चाहिए ।
- युवकों से संबंधित कार्यक्रमों के लिए एक स्तरीय एजेंसी गठित की जाना चाहिए | इनसे सरोकार रखने वाली विभिन्न जानकारियां तथा शैक्षणिक पाठ्यक्रम, रोजगार के अवसर और विभिन्न प्रकार के आयोजन की जानकारी रखनी होगी । सूचना प्रौद्योगिकी को उच्च रूप पहुंचाना चाहिए |

इस तरह युवा सशक्तीकरण के लिए युवा पीढ़ी के साथ साथ समाज को भी आगे आना चाहिए |

काल की दृष्टि से इन उपन्यासों में कुछ विचार हम देख सकते हैं | इसमें उन्नीसवीं सदी के अंत के समय से

इक्कीसवीं सदी के आरंभ तक का चित्रण है | इस तरह इन उपन्यासों में युवकों के शिक्षादर्शन , राजनीति का विकास ,रोल मॉडल की आवश्यकता ,नारी सबलीकरण आदि आते हैं | इन सभी विषयों पर इन उपन्यासकारों ने अपने विचार को अपने पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत किया है | इस दृष्टि से देखें तो आधुनिक भारत का वर्तमान और भविष्य इन में विद्यमान है |

उपजीव्या सामग्री

आधार ग्रन्थ

1. अमृतलाल नगर — पीढियॉ
   राजपाल एंड संन्स
   1590
   मदरसा रोड़
   कश्मीरी गेट
   नयी दिल्ली-110006
2. इंदिरा राय — लक्ष्यवेध
   समय प्रकाशन
   १३- बी ,
   संचार लोक अपार्टमेंट ,
   पटपडगंज डिपो.
   दिल्ली-110092
   प्रथंम संस्करण-2002
3. गिरिराज किशोर — यातना घर
   राजपाल एंड संन्स
   1590

मदरसा रोड़

कश्मीरी गेट , नयी दिल्ली-110006

4. धर्मेंद्र गुप्त — इसे विदा मत कहो

पीयुष पंडित

सार्थक प्रकाशन .

100 ए, गौतम नगर ,

नई दिल्ली -110049

प्रथम संस्करण-1992

5. नमिता सिंह — लेडीज़ क्लब

सामायिक प्रकाशन

3320-21 , जड़वाड़ा ,

नेताजी सुभाष मार्ग

दरियागंज, नई दिल्ली-

11002,प्रथंम सस्करण-2011

6. नरेन्द्र कोहली — न भूतों न भविष्यति

वाणी प्रकाशन प्र.ली

४६९५,२१-ए

दरियागंज,

नई दिल्ली-110002

प्रथम संस्करण-2013

7. मनोज सिंह — हॉस्टल के पन्नों से
राजकमल प्रकाशन प्रा .लि
१.बी , नेताजी सुबाष मार्गः
नयी दिल्ली -11002
प्रथम संस्करण-2004

8. मृदुला सिंहा — अतिशय
प्रतिभा प्रतिष्ठान
दखनीराय स्ट्रीट
१.बी , नेताजी सुबाष मार्गः
नयी दिल्ली -11002
प्रथम संस्करण-1992

9. योगेंद्र शर्मा — रुहेलखन्ड का गांन्धी
नमन प्रकाशन
४२३१\१ अंसारी रोड
१.बी , दरियागंज
नयी दिल्ली -11002
प्रथम संस्करण-2001

10. राजेंद्रमोहन भटनागर वैलेंटाइन डे

नेशनल पुब्लिशिंद हाउस

४२३१\१ अंसारी रोड

१.बी , दरियागंज

नयी दिल्ली -11002

प्रथम संस्करण-2004

11. डॉ. शशिप्रभा शास्त्री मीनारें

किताब घर प्रकाशन

नयी दिल्ली -11002

प्रथम संस्करण-1992

12. सूर्यबाला दीक्षांत

नेशनल प्रकाशन

नयी दिल्ली -11002

प्रथम संस्करण-1992

सहायक ग्रन्थ

1. ए. पि .जे. अब्दुल कलम इक्कीसवीं सदी का भारत

नवनिर्माण की रूपरेगा

राजपाल एंड संस

प्रथम संस्कारण-1999

2. अमृतलाल नगर अमृत और विष

लोक बारती प्रकाशन

पहली मंज़िल

दरवारी बिल्डिंग

महात्मा गाँधी मार्ग

इलाहाबाद -211001

3. अमृतलाल नगर नाचियों बहुत गोपाल

राजपाल एंड संस

प्रथम संस्करण -1979

4. डॉ. ए . अरविंदाक्षन उपन्यास शिल्पी गिरिराज किशोर

वाणी प्रकाशन

२१ - ए , दरियागंज

नई दिल्ली -110002

5. अश्वनीकुमार पांडेय शिवप्रसाद सिंह के उपन्यास

कथ्य और शिल्प

अभयकुमार प्रकाशन

आवास विकास ,

6A\540

हंसपुरम

कानपूर २१

6. आनंद कुमार आपका व्यक्तितव

आकृति प्रकाशन

सी .7\159, यमुना विहार

दिल्ली-11005

7. इन्द्रनाथ मथन हिंदी उपन्यास एक नयी दृष्टि

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली

8. काशीनाथ सिंह अपना मोर्चा

राजकमल प्रकाशन प्रा .लि

१.बी , नेताजी सुबाष मार्गः

नयी दिल्ली -11002

प्रथम संस्करण-2004

9. कुवरपाल सिंह हिंदी उपन्यास -जनवादी परंपरा

नवचेतन प्रकाशन

जी ५ गली नो १६

राजपुरी उरनगर

दिल्ली -110059

10. गिरिराज किशोर परिशिष्ट

राजकमल प्रकाशन प्रा .लि

१.बी , नेताजी सुबाष मार्गः
नयी दिल्ली -11002

11. कविता चांदगुडे
शशिप्रभा शास्त्री का कथा साहिथ्य
अमन प्रकाशन
१०४ \११८
रामबाग
कानपूर -208012

12. गिरीदर प्रसाद शर्मा हिंदी उपन्यासों का मनोविश्लनात्मक अध्यायन
इंद्रप्रस्थ इंटरनैशनल
के -७१
दिल्ली -110051

13. गोपाल राय हिंदी उपन्यास का इतिहास
राजकमल प्रकाशन प्रा .लि
१.बी , नेताजी सुबाष मार्गः
नयी दिल्ली -11002

14. डॉ. टेस्सी जॉर्ज
स्वतन्त्रोयत्रर हिंदी उपन्यासों में मूल्य परिवर्तन
जवाहर पुस्तकालय
सदर बाजार
मदुरै -281001

15. नरेंद्र कोहली हिंदी उपन्यास सृजन और सिद्धांत
वाणी प्रकाशन
२१ - ए , दरियागंज
नई दिल्ली -110002

16. नरेंद्र कोहली दीक्षा
हिंदी पॉकेट बुक्स
प्रा .लि. दिलशाद गार्डन ,
जी -टी .रोड
दिल्ली-110095

17. डॉ. नरेंद्र मोहन

आधुनिक हिंदी उपन्यास

दि मइकेमिलन कंपनी

ऑफ़ इंडिया लिमिटेड

दिल्ली -110006

18. डॉ. निशांत सिंह स्त्री

सशक्तीकरण एक मुल्याकंन

खुशी पब्लिकेशन

गाजियाबाद

दिल्ली

19. डॉ. देवराज उपाध्याय जैनेंद्र के उपन्यासों का मनोविश्लनेथमक

अध्ययन

शोध प्रकाशन

दिल्ली

20. डॉ. पि .एस. थॉमस

भारतीय मद्यवर्ग और सामाजिक

उपन्यास

जवाहर पुस्तकालय

सदर बाजार

मदुरै -281001

21. श्रीमती .जे . पद्मजा देवी
साठोत्तरी उपन्यासों में युवा पीढी
मिलिंद प्रकाशन
कन्दस्वामी बाग
हनुमान न्यायम शाला की गली
सुल्तान बाजार
हैदराबाद

22. डॉ. प्रेमवल्लभ शर्मा
युवा संचेतना
आर्य प्रकाशन मंडल
जगत निवास ,
निकट महावीर चौक
गाँधी नगर, दिल्ली

23. परमानन्द श्रीवास्तव
उपन्यास का पुनर्जन्म
वाणी प्रकाशन
२१ - ए , दरियागंज

नई दिल्ली -110002

24. प्रकाश मिश्रा अमृतलाल नागर के उपन्यास साहित्य

साहिथ्य प्रकाशन

दिल्ली

25. मधुरेश हिंदी उपन्यास का इतिहास

सुमिता प्रकाशन ,

यु ऍफ़ ४२ अलोपशंकरी

अपार्टमेंट १०७\१७७

अलोपी बाग

इलाहाबाद

26. प्रो. मदसूदन त्रिपाठी भारतीय शिक्षा का विश्वकोश

ओमेगा पब्लिकेशन्स

4378\4B

जी. एम .टी.

२१ - ए , दरियागंज

नई दिल्ली -110002

27. डॉ.मंजुला गुप्तः और व्येक्ति

हिंदी उपन्यास समाज का अंतुर्द्वन्द

सूर्य प्रकाशन

नयी सड़क

दिल्ली

28. डॉ. मोहिनी शर्मा हिंदी उपन्यास और जीवन मूल्य

साहित्यासागर

एम् .एम् इस हाईवे

जयपुर

29. डॉ. राजेस्वर प्रसाद चतुर्वेदी युवा शक्ति महतव और विकास

उपकार प्रकाशन

स्वदेशी बीमानगर

आगरा

30. रामदरश मिश्र हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा

राजकमल प्रकाशन

१.बी , नेताजी सुबाष मार्ग

नयी दिल्ली -11002

31. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय स्वतन्त्रोत्तर हिंदी साहित्य का इतिहास

राजपाल एंड संन्स

कश्मीरी गेट

नयी दिल्ली-110006

32. डॉ. वीरेंदर सिंह यादव इक्कीस सदी का महिला

सशक्तीकरण मिथक एवं यथार्थ

ओमेगा पब्लिकेशन्स

4378\4B

जी. एम .टी.

२१ - ए , दरियागंज

नई दिल्ली -110002

33. डॉ. विनोद कालरा

स्त्री सशक्तीकरण - विविद परिप्रेक्ष्य

तेज प्रकाशन

९८, प्रथम थल ,

निकट कमर्शियल स्कूल

२१ - ए , दरियागंज

नई दिल्ली -110002

34. डॉ. शशिभूषण सिन्हा
हिंदी उपन्यास बदलते संदर्भ
प्रवीण प्रकाशन
महराली
नई दिल्ली

35. डॉ सुकुमार भंडारे
समकालीन उपन्यासों में राजनैतिक चित्रण
विकास प्रकाशन
३११- सी, विश्व बैंक बर्र
कानपूर -208027

36. डॉ .सरला शर्मा
सूर्यबाला की उपन्यास विदा का समग्र मूल्यांकन
यतीन्द्र साहिथ्य सदन
सरस्वती विहार
शब्द गंध द्वार कोर्ट के सामने ,
भीलवाड़ा

37. डॉ. आर . सुरेंद्रन
स्वतन्त्रोयत्तर हिंदी उपन्यास
लोक भारती प्रकाशन

38. डॉ. सुरेश सदावर्ता
कथाकार गिरिराज किशोर

विकास प्रकाशन

कानपुर २७

39. डॉ. संगीता सहजवानी हिंदी के जीवनीपरक उपन्यास एक अध्ययन

अमन प्रकाशन

अग्रेज़ी ग्रन्थ

1. INDIAN YOUTH – A PROFILE P. S. NAIR ,MURLI, DHAY VEMURI , FAUJDAR RAM, MITTAL PUBLICATION, A-1\8 . MOHAN GARDEN, NEW DELHI

2. PROBLEMS OF YOUTH - RENUKA SINGHA, SERIAL PUBLICATION, NEW DELHI

3. PRINCIPLES OF SOCIOLOGY ALFRED Mc CLUNG, LEE BOGARDUS

4. MODERNASING RURAL YOUTH M.S. RAGHUVANSHI, AJANTHA PUBLICATIONS, DELHI

5. PSYCHOLOGY THE HUMAN SCIENCE -

ROBERT .J. TOTTER &

JAMES V.M.C. CONNEL

UNITED , STATE

पत्र- पत्रिकाएँ

1. आजकल –जून –2011
2. अक्षर पर्व- जुलाई -2014
3. अनुवाद- फरवरी -1995
4. अलोचना- जनवरी -2000
5. कथाक्रम –अक्तुबर-2012
6. भाषा -2000-जुलाई
7. पॉचवॉ स्तम्ब - जनवरी – 2013